अनुक्रमणिका.

विषय. (३) पृष्ठ.

॥ श्री गौतम गुरु भ्योनमः ॥

अथ

श्री श्रावकना बार व्रतनी टीप प्रारभ्यते.

॥ दोहरा ॥

सदा सिद्ध भगवानके, चरण नमुं चित लाय;
श्रुतदेवीपुनी समरिचे, पूजुं ताके पाय. ॥ १ ॥
करुं सुगम भाषा सही, बारह व्रत विस्तार;
भिन्न भिन्न भेदे करी, भव्य जीव उपगार. ॥ २ ॥
पंचाणु व्रत प्रथमते, तीन गुण व्रत जाण;
शिक्षा व्रत चारु मिली, बारह व्रत जु बखाण ॥३॥
शास्त्र सुगुरु उपदेश सुनि, धारे व्रत शुभ चाल;
ता घरि जश सुख संपदा, होवे मंगल माल. ॥ ४ ॥
बुध उद्योत सागर गणी, अपनी मति अनुसार;
विधिश्रावकके व्रततणी, पीपलिखुं निरधार. ॥ ५ ॥

त्यां प्रथम सम्यक्त्वरूप लिखेछे. ते समकितना बे भेदछे. एक व्यवहार समकित अने बीजो निश्चय समकित. अंहींसम्यक्त्व शब्दनुं अर्थ लखेछे (तत्वार्थ श्रद्धानं सम्यक्त्वं) तत्व एटले जे यथार्थ स्वरूप विज्ञान पूर्वक श्रद्धा तेने सम्यक्त कहीए, ते तत्व त्रण प्रकारनुं छे. एक देव तत्व, बीजुं गुरु तत्व, त्रीजुं धर्म तत्व, अने वली ए त्रणे तत्वनी सद्दहणा एटले जे साची प्रतित तेना बे भेदछे. एक व्यवहारथी अने बीजी निश्चयथी तेमां प्रथम व्यवहारथी शुद्ध देव तत्वनी सद्दहणा देखाडे छे.

एमां देवतो श्री अरिहंतजी जेमना अढारे दोष क्षय पाम्या छे. ते अढार दोषना नाम नीचे प्रमाणे छे.

प्रथम अज्ञान दोष, बीजो क्रोध दोष, त्रीजो मान दोष, चोथो मा या दोष, पांचमो लोज दोष, उठो अविरति दोष, सातमो हास्य दोष, आठमो रति दोष, नवमो अरति दोष, दशमो जय दोष, अगीआर मो शोक दोष, बारमो डुगछा दोष, तेरमो निंदा दोष, चउदमो काम दोष, पन्नरमो अंतराय दोष, सोलमो मोह दोष, सत्तरमो मि थ्यात्व दोष तथा अढारमो निद्रा दोष. ए अढार दोष जेना मटी ग या ठे, अने ए अढार दोषनो नाश थवाथी अढार गुण प्रगट थ याठे, जेमने रत्नत्रयी जे ज्ञान दर्शन चारित्र ते क्षायक जावे थ ईठे, जेमने अनंत चतुष्टयी संपूर्ण प्रगटीठे, जेनाथी घनघाती कर्म नी सत्ता विघटी ठे, जे जिन चारे निकायना देवताउने अने चो सठे देवेंद्र तथा नरेंद्र जे चक्रवर्त्यादिक तेने पूजनीक ठे, तथा जे चोत्रीश अतिशयेकरी युक्तठे, अने पांत्रीश गुण युक्त वाणीवडे देश नादेठे, जेमना आठ महाप्रातीहार्य शोजायुक्त सदा विराजेठे, त था जेमनी एवी प्रजुता जगत्रयातिशयरूप, बल, ऐश्वर्य, ऋद्धि, सिद्धि, बुद्धि, जाति तथा कुलादि जावे उत्कृष्टठे. तो पण मददोष नो जेमने स्पर्श नथी वली जे अगिलाए पणे यथार्थ अने निर्दो ष एवी सकल जगत जीवने उपकारी देशना देठे, वली ज्यां श्री अरिहंतजी विचरे त्यां फरती सवासो योजनमां इति उपद्रव नि वर्त्ते, ते इति उपद्रव सात प्रकारनाठे. पहेलो वर्षानी अतिवृष्टि, बीजो अनावृष्टि, त्रीजो उंदर प्रमुख जीवादिकनी बहुज उत्पत्ती थाय, चोथो पतंग पक्षी तोता तीड प्रमुख घणा थाय, पांचमो मरकी जेनाथी वमनादिक विकारेकरी घणा मनुष्यादिक मरण पामे, ठठो स्वचक्र ते पोताना देशसंबंधी राजाउनुं सैन्य विग्रह करे अने सातमो परचक्र एटले अन्यदेशनुं आवेलुं कटक युद्ध हेतुए परस्पर खलेइने विग्रह उपद्रव करे. ए प्रमाणेनी साते इति जे मना आगमने करी नाश पामेठे एवा श्रीअरिहंतजीठे. वली कृत

कृत्य थयाथी जेमने कोइ साधननी न्यूनता रही नथी; जे मनी निर्विकारी शान्त मुद्रा जोवाथी काम, क्रोध, लोज अने मोहादिक अनादिना दोष मटे, अंतरमां संवरनी शेली प्रगटे, जेना वचन सांजलतांज अनादिनी मिथ्या भ्रम जूल मटे जे श्रीअरिहंतजी चारे निक्षेपे सकल जीवने हितकारी छे.

चार निक्षेपा ते आ प्रमाणेछे.

प्रथम नाम निक्षेपो एटले श्रीअरिहंतजीनुं नाम जाणवुं. जेम नमो अरिहंताणं एटलुं नाम मात्र आराधवाथी अनंतजीव मुक्ति पाम्या.

बीजो स्थापना निक्षेपो एटले जे श्री अरिहंतजी सकल दोषना चिन्होए रहित, निरुपम, सहज सुजग, समचतुरस्र संस्थानीय एवुं जे पद्मासन काउस्सग मुद्राते जिन बिंबछे; तेने श्रीअरिहंतजीनो स्थापना निक्षेपो कहिए. ते निःकामी लोकोत्तर स्थापनारूप जिन मुद्रानां दर्शने करी सेवा अर्चाए करी अनंत जीव मुक्ति पाम्या.

त्रीजो द्रव्य निक्षेपो ते आवीरीते के, जेणे जिन पद निकाचत कर्युं, पण पाम्यानथी, अने आगल जिनेश्वर थशे एवो जे जीवछे तेने द्रव्य अरिहंत कहिए. एना जावी गुणनुं जूत काले उपचार करीने वंदन, नमन; सरण, पूजन अने स्तवन करतां पण अनेक जीव मुक्ति पाम्या.

चोथो जाव निक्षेपो एटले आप जगत उद्धरण समर्थ, चवन जन्मादि कल्याणक महोत्सव पूर्वक उत्तम कुलमां अवतार पामीने, जोग कर्म सीम उदय अव्यापक रीते जोग विघ्न मटाडीने लोकांतिक देवकृत संकेत अवसरे वरसीदान सवा पहोरसुधी नित्ये देइ करीने, संयम ग्रहीने सम्यक्ज्ञान क्रियावडे चारे घनघाती कर्म क्षय करीने केवल ज्ञान पामे. ए वखत चलीतासन, चोसठे इंद्र सपरिवार आवी करीने अष्ट महाप्रातिहार्य युक्त समवसरण बनावे अहींयां रत्नमय सिंहासन उपर बेसीने निरवद्य देशनावडे

भव्य जीवने प्रतिबोध करी चतुर्विध संघनी स्थापना करीने तीर्थप्र
वर्त्तावे. सकल जीवने देशनावडे अनुग्रह करे. एवा जे समोसरणमां
विराजमान श्री सीमंधरादि विहरमान परमेश्वर तेने भाव अरिहंत
कहिए. एमना चर्णारविंदनी शेवाथी पण अनंत जीव मुक्ति पाम्या.

एवा जे श्री अरिहंत देवाधिदेव, महा गोप, महा माहण, महा
निर्यामक, महा सार्थवाह, महावैद्य इत्यादि बिरुदधारी, सकल स
मकित जीवना प्राणाधारक, सकल मुनि मनमोहन एवा जे श्री
जिनेश्वर अरिहंत देव तेमने हुं देवकरी सरदहुं, एमनी सेवा करुं,
एमनी आज्ञा शिरधरुं, इतिश्री व्यवहार शुद्ध देवतत्व समाप्त.

हवे निश्चय देव तत्व कहेछे.

शुद्धात्म स्वरूप वस्तुगते वस्तुरूप प्रतीतिवडे शुद्ध तत्व श्रद्धा
प्रगटे, ते निश्चय देव तत्वछे. एटले वरण, गंध, रस, स्पर्श, शब्द,
रूप, क्रियादिथी रहित, शरीरथी भिन्न, योगथी भिन्न, अतिंद्रिय,
अविनाशी, अनुपाधी, अबंधी, अक्लेशी, अमूर्ति, शुद्ध चैतन्य, ज्ञा
न, दर्शन, चारित्रादि अनंतगुण भाजन, सच्चिदानंद स्वरूपी एवुं
मारुं आत्मतत्वछे, एम जे जाणवुं तेने निश्चे देवतत्व कहेछे.

हवे बीजा गुरुतत्वमां प्रथम व्यवहारथी शुद्ध गुरु कहेछे.

जे पांच समिते समिता, त्रण गुप्ते करी गुप्ता, समतात्मरमणे
रमतां, पंचेंद्रिय दमता, अनेक दुःकर परीसह उपसर्ग सर्वे द
मायी खमता. अनेक स्तुति निंदा सांभळवानुं तजीने समतारूप
शुद्ध ध्यानाग्निवडे कर्मरूपी काष्टने बाळता, अनादि परचित विभाव
परिणतिने वमता, जेने नहिं माया नहिं ममता, प्रतिक्षणे गुरु
चर्णारविंद नमता. प्रतिक्षणे नव नव संयम स्थाने चडता, प्रति
क्षणे ज्ञान दर्शनादि गुण पर्याये वधता. पोतपोतानी शक्ति प्रमा
णे नवीन नवीन तप क्रिया करतां. प्रतिदिन आत्मवीर्योल्लासयुक्त
ज्ञान क्रियाभ्यास वडे शक्ति प्रमुख गुणे वर्त्तता, पंचांगी प्रमाण शु

रूस्याद्वादथी अनुसरीने शुद्ध चारित्राचार पालनरूप प्रवहणे क
रीने संसार समुद्र तरता, सकल आशंसा दोष त्यागी एक मुक्ति
पद साध्य मन धरता, त्रिकरण शुद्धे एक विध श्रीजिनाज्ञानां प्रति
पालक, द्विविध धर्मना प्रकाशक, त्रिविध रत्नत्रयीना धारक, चतुर्वि
ध कषायना जीपक, पंचविध शुजनावनाये युक्त थका पांच महाव्र
तना धुरंधर धोरी, छविध छकायना परम रक्षक, सप्तविध नय
स्थानथी रहित, अष्टविध मदस्थानकना जीपक, नवविध ब्रह्मगु
प्तिना धारक, दशविध यतिधर्मे प्रतिपालवामां सावधान, एकाद
शांग सूत्रना अर्थ विस्तारे पठन करवामां रसिक, इत्यादि उत्तरो
त्तर अगणित गुण गणालंकृत गात्र, परम पात्र, परमोपकारी, अ
ष्टादश सहस्र शीलांगरथधारी, नव कोटी विशुद्ध प्रत्याख्यान चारी,
अनियत नव कल्पविहारि, सडतालीश दोषरहित शुद्धाहार आ
हारी, जेनी परीक्षा कसोटीए कस्या जात्यवंत सोनानी परे अ
धिक अधिक गुणना रंगधारी, शत्रु मित्र समचित्तदृष्टि, जे कुक्षि पू
रक संबलथी नहीं अधिक वित्त, परमगुणी, परमदयाल, जगतबंधु,
जगहितकारी, जारंम पंखीनी पेरे अप्रमत्तचारी, पृथ्वीनी पेरे सर्व
सहन करनारा, मधुकरी वृत्तिनीपेरे मुधा जीवी, आकाशनीपेरे निरा
धार, गतप्रतिबंधी, अंतरमां अने बाह्यमां, सुता तेम जागतां, दिवश
मां तेम रात्रीमां, एकाकीमां तेम महोटी परखदामां जेमने एकज प्र
वृत्तिछे. एवा मुनिराज जविक जीवोने संसार समुद्र तारवाने जेमना
चरण वडसफरी वहाण समान स्वपरोपकारी छे, एवा आजना वख
तमां पण पंदर कर्म जूमिमां सर्व मलीने वे हजार कोडी साधु व
र्तेछे. तेमने हुं गुरुतत्व करी सद्दहुं, एमनी आज्ञा मागुं, एमने पर
मपात्र बुद्धिए पडिलाजुं, एमनी क्रियानी अनुमोदना करुं, एवा शुद्ध
साधु मारा गुरुतत्वछे. इति व्यवहार शुद्ध गुरुतत्व समाप्त.

पण पछी मेडकाना चूर्णनी पेरे संसार वधे आ स्वरूप दया विषे देखवामां दयाछे पण जावथी हिंसाछे.

छठी अनुबंध दया एटले श्रावक बहु आडंबर करीने मुनि वंदनने माटे जाय, उपकार बुद्धिवडे बीजा जीवोने आक्रोश ताडनादिक करीने शिक्षा आपे, सुमार्गे लावे कुमार्ग तजावे आमां उपरथी जोतां हिंसाछे पण आगल पोताना अने पारका जीवने लाज थाय तेथी अनुबंधनुं फल दयाने पामे. साधु तथा आचार्य पण पोताना शिष्य शिष्यणिने सारणा, वायणा, चोयणा तथा पडिचोयणादिक करे शासनना प्रत्यनीकने पोतानी लब्धिए करी शिक्षा आपे कदापि पंचेंद्रि जीवने पण शुद्ध मार्गे प्रवर्त्तावधाने अर्थे शिक्षा करे, शासन स्थिर करे, ते अनुबंध दया कहिए.

सातमी व्यवहार दया एटले विधि मार्गानुयायी जयणा पाले, कम वेस नकरे, तुझे नहिं ते व्यवहार दया कहिए.

आठमी निश्चय दया एटले शुद्ध साध्य उपयोगमां एकी नाव अनेदोपयोग होय, साध्य नावमां एकता ज्ञान तेने निश्चय दया कहीए ए दया गुण गाणे चढावे तेणे करी उत्कृष्टछे.

इत्यादिक अनेक प्रकार दया स्वरूप विज्ञान पूर्वक सूत्र, निर्युक्ति जाष्य, चूर्णि अने वृत्ति ए पंचांगी संमत्त प्रत्यक्षादि प्रमाण पूर्वक नैगमादिक नय शैली पूर्वक नामादि निक्षेप रचना पूर्वक स्यादस्ति नास्तिप्रमुख सप्तनंगी स्वरूप रूप, यथार्थ विज्ञान पूर्वक ज्ञान क्रिया. तथा निश्चय व्यवहार, तथा ऽव्यार्थिक, पर्यायार्थिक इत्यादिक उनय नावमां यथावसरे अर्पितानर्पित नय निपुणताथी मुख्य गौणनावे, उनय नय सम्मत एवी शुद्धस्याद्वाद शैली विज्ञान पूर्वक श्री सिद्धांतोक्त दान, शील, तप, नावना, रूप शुन प्रवृत्ति प्रवर्तन तेने व्यवहारथी शुद्ध धर्म कहीए.

हवे शुद्ध निश्चय धर्म कहेछे.

शुद्ध निश्चय धर्म ते आत्मानी आत्मता जाणे, वस्तु स्वभाव उलखे, जे आत्म द्रव्यछे ते शुद्ध चैतन्यतारूप असंख्यात प्रदेशी अमूर्त लोक प्रमाण, सर्व पुद्गलथी भिन्न, अखंड, अलिप्त, अनंत ज्ञान दर्शन चारित्र सुख वीर्य अव्याबाधादि अनंत गुणमयी, स्व गुण भोगी, अविनाशी, अनुपाधी, अविकारी एवो मारो आत्म द्रव्य स्वभाव तेज उपादेयछे, एनाथी जे विलक्षण परपुद्गलादिक ते मारुं नथी, हुं तेनो नथी, ते पुद्गल जे वर्ण, गंध, रस फरसरूप ते ना पांच विकारछे. शब्द, रूप, रस, गंध, स्पर्श, ए पांचेना उत्तर भेद अनेकछे ए शब्दादि एकेक भेद वर्णादि चार चार भेद लइ रह्या छे. आ लोकाकाशमां जे अजवालुं छे; तथा अंधारुछे, शब्द जे उ छेछे, सर्व रूपी वस्तुनो परछायो पडेछे, रत्नादिकनी कांति पडेछे, शित पडेछे, छाया पडेछे, धूम्र पडेछे, ताप पडेछे, नानाप्रकारना रूप, रंग, संस्थानना घाटनो नमुनो दीठामां आवेछे तथा नाना प्रकारना रूप, रंग, संस्थाननी सुगंध तथा दुर्गंध आवेछे, नानाप्र कारना रसनी भक्षा छे, सर्व संसारी जीवोनी देह, भाषा, मननी कल्पना तथा प्राणना दश भेद छे, तथा पर्याप्तिना छ भेदछे, हास्य, रति, अरति, भय, शोक, दुगंछा. खुशवख्ती, उदासी, कदाग्रह, हठ, लडाइ, कषाय, क्रोधादिक चार, साता, असाता, उंचपणुं, नीचपणुं, निद्रा, विकथा, सर्व पुन्य प्रकृति, सर्व पाप प्रकृति, रीझ, मोज; खीज, खेद छ, लेश्या; लाभालाभ, यश, अपयश, मूर्खपणुं, चतुरता, स्त्री, पुरुष, अने नपुंसक वेद, कामचेष्टा, गति, जाति इत्यादिक जे आठ कर्मना विपाकछे. ते सर्व जीवने अनुभव सिद्धछे.

बीजा पण सुक्ष्मपुद्गल जे इंद्रियोथी अगोचर परमाणु आदि लइने अनेक भेदना अग्रहित एवा छुटा पुद्गल छे. ए पुद्गलना संयोग थी चारे गतिमां जीव भटके छे, ए पुद्गलनो संग तेज संसारछे.

एना संयोगथी जीवना अनंत ज्ञान दर्शन चारित्रादिक अनंत गुण अगडे, एवी जे पुद्गल द्रव्यनी रचना छे ते मारो स्वजाव नथी, ए पुद्गल मारीजाती नथी, ए पुद्गलथी मारो संबंध नथी ए पुद्गल मारेत्या गवा योग्यछे पण आदरवा योग्यनथी. तथा जे धर्मास्तिकाय द्रव्यछे ते पण जीवनें तथा पुद्गलने गति सहायकारीछे, अने अधर्मास्तिकाय द्रव्य ते जीव पुद्गलने स्थिति सहायकारीछे, आकाश द्रव्य सर्वनुं जा जन अवगाहना दायछे; कालद्रव्य नवपुरातनकारी वर्त्तनालक्षण वंतछे; एम ए चारद्रव्य जे छे ते मारे ज्ञेयरूपछे; एनाथी पण मारुं स्वरूप न्यारुंछे. तथा बीजापण संसारी जीव जे छे, ते पण पोत पोताना स्वजाव सत्ताना धणीछे. ए पण मारा ज्ञेयरूपछे. ए सर्वनाथी हुं न्या रोछुं. ए मारा संगी नहीं तेम हुं एमनो संगी नहीं. हुं मारी स्व जावसत्तानो धणी छुं. मारो स्वजाव सम्यग् ज्ञान दर्शन चारि त्रादि रूप, अवन्ने अगंधे, अरसे, अफासे, चेयणगुणे, अनंत अ व्याबाध, अनंत दान, अनंत लाज, अनंत जोग, उपजोग, अनं त वीर्यादिक, अनंत गुण स्वरूपछे. तेमनी श्रद्धा जासन पूर्वक शुद्धात्मादिकरूप चिदानंदघन मारो स्वजावछे. एवो माहरो पूर्णा नंद स्वजावछे तेने प्रकट करवाने व्यवहार नयथी, सर्व शुद्ध व्य वहार जे छे ते निमित्त मात्रछे. पण मुख्य तो मारा स्वजावमांज र मण करवुं तेज शुद्ध साधनछे. तेज धर्म छे. तथाचोक्तं श्रीउत्तरा ध्ययनसूत्रे ॥ वत्थुसहावो धम्मो ॥ इत्यादि विज्ञानपूर्वक चेतन प्रवृत्ति तेने निश्चय धर्म कहीए. ॥ इति धर्म तत्वं समाप्तम्,

ए प्रमाणे तत्वनी जे श्रद्धानिश्चय परिणति रूप प्रतित तेने सम्यक्त्व कहीए. ॥ यदुक्तं सिद्धांते। निस्संकं पावयणं ॥ जं जिणेहिं पवेइयं। तमेव सच्चं। एममठे सेसे अणठे ॥ इत्यादि ते कारणे तत्वार्थ स द्दहवा तेनुं सम्यक्त्व कहीए. अने एनाथी विपरीत वासना एटले तत्वार्थ अश्रद्धान अप्रतीत, अतत्वार्थ श्रद्धान ते मिथ्यात्व कहीए.

ए मिथ्यात्वना मूल चार नेद छे. तेमां प्रथम परूपणा मिथ्यात्व एटले जिनवाणीथी विपरीत प्ररुपे. बीजुं प्रवर्त्तन मिथ्यात्व एटले मीथ्यात्वनीज करणी करे ते जाणवुं. त्रीजुं परिणाम मिथ्यात्व एटले मनमां, परिणाममां विपरीत कदाग्रह रहे, शुद्धार्थ सरदहे नहीं. चोथुं प्रदेश मिथ्यात्व एटले सत्तागत जे मिथ्यात्व मोहनीना कर्मदल छे, तेने प्रदेश मिथ्यात्व कहीए ए कर्म दल विपाकमां आवे त्यारे परिणामे मिथ्यात्व होय, अने ज्यां सुधी तेदलीक सत्तामां पड्यां रहे त्यारे तो जीवने समकेत पण थाय.

हवे ए चारे मिथ्यात्वना उत्तरनेद एकवीशछे ते लखे छे.

१ प्रथम तो जिनप्रणीत जे शुद्ध निरवद्य धर्म तेने अधर्म कहे.

२ बीजो हिंसाप्रवृत्तिप्रमुखआश्रवमयीअशुद्धअधर्मतेनेधर्मकहे.

३ त्रीजो संवरनाव सेवनरूप जे मार्ग तेने उन्मार्ग कहे.

४ चोथो विषयादि सेवनरूप जे उन्मार्ग तेने मार्ग कहे.

५ पांचमो सत्तावीश गुणेकरी विराजमान, काष्टना नावसमान, तरण तारण समर्थ एवा जे साधु तेने असाधु कहे.

६ छठो आरंन परिग्रह, विषय कषाये नरेलो, लोन मग्न, कुवासना दायी, लोढाना तथा पाषाणना नाव समान, एवो जे अन्य लिंगी तथा कुलिंगी असाधु होय तेने सुसाधु कहे. पण एम न विचारे के जे पोते दोश थकी नरेलोछे ते बीजाने केवीरीते निर्दोषि करशे ? जेम पोते दारिद्री छतां बीजाने धनपती क्यांथी करशे ?

७ सातमो एकेंद्रियादिक जे जीवोछे तेने अजीव करी माने.

८ आठमो काष्ट सुवर्णादिक अजीव पदार्थछे तेने जीवकरी माने.

९ नवमो मूर्त्तिवंत एवा जे रूपी पदार्थछे तेने अरूपी कहे जेवी रीते स्पर्शवान वायुने अरूपी कहे, पण ते जो अरूपी छे तो तेमां स्पर्श केमछे ? एवुं विचार करे नहीं.

१० दशमो अरूपी पदार्थने रूपी कहे. जेवी रीते मुक्तिमां तेजनो

गोलो माने पण एम न विचारे के जे अरूपी चीज छे तेनुं तेज केम नजरमां आवे? एवो विचार न करे. ए दश नेद कह्या.

तथा पांच बीजां मूल नेदछे ते लखेछे.

१ जे पोतानी मतिमां आव्युं ते साचुं बीजुं सर्व जुंतुं पण प रीक्षा करवानी इछा राखे नहीं शुश्रूषा शुरूनी खोल करे नहीं ते प्रथम अनिग्रहिक नामे मिथ्यात्व जाणवो.

२ सर्व धर्म साराछे सर्व दर्शन नलांछे सर्व कोइने वंदना करि ए पण कोइनी निंदा करिए नहीं. एणे अमृत अने विष ए बन्ने समान गण्या ते बीजो अनभिग्रहिक नामे मिथ्यात्व जाणवो.

३ जे जाणी बुजीने जुतुं बोले, पहेला पोताना अज्ञानपणा थ की कांइ नूलपडे विपरीत प्ररुपणा करे तेवारे कोइ शुद्ध मार्गानु सारी जीव तेने कहे के आ तमे सिद्धांत विरोद्ध बोलोछो तमे नू लोछो एवुं सांजले तेवारे तेने द्वष आवे तेथी कुमति कदाग्रह कु युक्ति करीने पोतानुं वचन राखवानी अपेक्षा करे पोते जुठो पडे तोपण नमाने ए पुरुष विराधक बहु नव भ्रमण करनारो जाणवो ए त्रीजो अनिनिवेश नामे मिथ्यात्व जाणवो.

४ जे जिनवाणीमां संशय राखे एने पोताना अज्ञान दोष थ की सिद्धांतना गहनार्थमां खबर पडे नहीं त्यारे ऊगमगतो थको रहे जे ए केम हशे ए संशयिक नामे मिथ्यात्व जाणवो.

५ जे अजाण पणाने लीधे कांइ समजे नहीं ते अनाजोगिक मिथ्यात्व अथवा एकेंद्रियादिक जीवोने अनादि कालनो लागो र ह्योछे ते पण अनाजोगिक मिथ्यात्व जाणवो. ए बद्धा मलीने पू र्वला दश नेद साथे मेलवता पंदर नेद मिथ्यात्वना थया.

हवे बीजा छ नेद लखेछे. एक लौकीक देव, बीजो लौकीक गु रु, त्रीजो लौमीकपर्व, चोथो लोकोत्तरदेव, पांचमो लोकोत्तरगुरु, अने छठो लोकोत्तरपर्व. ए छ नेद बवरीने कहेछे.

१ जे देव राग द्वेष थकी ज्ररेलाछे,एक उपर मेहेरवान थाय छे, एकनो विनाश करेछे तथा स्त्रीयादिकना विलाशमां मग्न रहेछे, अनेक जातना हथीयारो हाथमां धारण करेलांछे, पोतानी प्रज्ञु तमां कांइ न्यूनता नथी, हाथमां माला धारण करेछे, सावद्यजोग पंचेंद्रिय वधादिकनी चाहना करेछे एवा देवोने माने, पूजे, अने तेमना कहेला मार्ग यज्ञ याग अनेक प्रवृत्ति हिंसामयी करे, तेने प्रथम लौकीक देवगत मिथ्यात्व कहिए. एना अनेक ज्ञेदछे ते मि थ्यात्व सत्तरी प्रमुख ग्रंथो थकी विस्तारे जाणवा.

२ जे अढार पापस्थानकथी ज्ररेलांछे, नवविध परिग्रहधारी, गृहस्थाश्रमी, एवा छता गुरुनाम धरावे ते जाणवा. तथा वीजा कुलिंगी जे नव नव प्रकारना ज्ञेष वनावीने आरूंवर करे, वाह्य प रिग्रह त्याग करे, पण अन्यंतर ग्रंथी छोडी नथी, अनादिनी जूल मटी नथी, शुद्ध साध्यनी उंलखाण यइनथी, एवाने गुरु करी मा ने, तेनो वहुमान करे, एवाने शुद्धदान आपे, तेमां परमपात्र वु द्धि धरे, ते वीजो लौकीक गुरुगत मिथ्यात्व जाणवो.

३ आ लोके पुज्ञलिक सुखनी इछाथी अनेक मिथ्यात्व क ल्पित लौकीकपर्व दिवश जेवांके दिवासो, रक्षावंधन, गणेशचोथ, नागपंचमी, सोमप्रदोष, सोमवती, शुद्धाष्टमी, होली, दशेरा, प्र मुख शतपर्वने लाज्ञदायी जाणीने श्रद्धायेंकरी आराधे, द्रव्य व्यय करे,कुपात्रने दान आपे,ते त्रीजो लौकीक पर्वगत मिथ्यात्व जाणवो.

४ देव श्रीअरिहंत धर्मना आगर, विश्वोपकारसागर, परमेश्वर, परमपूज्य, सकलदोषरहित, शुद्ध निरंजन, तेनी स्थापना जेमूर्त्तिसा धिष्टायक प्रतिमां तेने आ लौकिक पुज्ञलिक सुखनी इछा धारणकरी माने के माहरुं कार्य थशे तो महोटी पूजा करीश, छत्रादिक चडा वीश, दीवाकरीश, रात्रि जागरण करीश, एवीरीते श्रीवीतरागनी मा नता करे अहीं चिंतामणीना दातार पाशेथी काचना कटकानी

मांगणी करवी तेकांइ युक्त नथी पण जेने कर्मोदयनी प्रतीत न थी ते व्यर्थ भूला जटकेछे पुण्योदय विना कांइ पण थतु नथी व्यर्थ निरंजन देवने पुद्गलिक सुखनी आशा धारण करी माने ते चोथो लोकोत्तर देवगत मिथ्यात्व जाणवो.

५ जे साधु वेशधारी, निर्गुणी, जिनवचन उछापक, पोता नी मतिकल्पनायें करी अर्थनी देशनाना प्ररूपक, सूत्रार्थना सं ताटनार, एवा उत्सूत्र जापण करनारां लिंगीउ तेमने गुरु बुद्धि यें करी बहुमान करे तथा जे सुसाधु, सद्गुणी, तपस्वी, सदाचारी, बहुक्रियावंत होय तेने आलोकना सुखनी चाहनाधरीने बहुमान करे अने एम विचारेजे एवागुणीनी अत्यंत सेवा करीशुं तो एम नी मेहेरबानी थकी धन ऋद्धि पामीशुं एवी इंद्रिय सुखनी इछा धा रण करीने तेमने माने ते पांचमो लोकोत्तर गुरुगत मिथ्यात्व.

६ कल्याणीकादिक पर्वदिवशें पुत्रादिकनी वांछनाए करीनें अ रिहंत देवनुं आराधन करे ते छठो लोकोत्तर पर्वगत मिथ्यात्व.

एप्रमाणे सर्वमलीने मिथ्यात्वना एकवीश जेद थया तेने हुं परिहरुं परंतु एमां देवतत्वमां एटलो आगार केजे कुलनी परंपरा चाली आवीने एवी जे गोत्रज कुलदेवतादिकनी पूजा, अने दीप पूजा प्रमुख विवाहादिक करणीने विषे जे करवी पडेछे तेनी ज यणाजे परंतु तेने शुज करणी जाणु नही.

अने गुरुतत्वमां कुगुरु जे अन्यलिंगी ब्राह्मणादिकने जे वि वाहादिक जोडावे परणावे तेना अधिकारीने जेमनी परंपरानी वृत्ति लागेलीछे ते आवीने आसिरवाद आपे तेवारे तेमने लौकीक व्यवहारने अर्थे प्रणाम करवुं पडे, कांइ उचित आपवुं पडे. तथा कोइ मिथ्यात्वी राजवर्गीने घेर गया थकां त्यां तेमना गुरु आवे तेवा रे ते राजवर्गी पोतानां गुरुनुं बहुमान प्रणामादिक करे तेवारे तेनी आदथी आपणने पण सन्मान प्रमुख बहुमान करवुं पडे. तथा

जेणे नामा लेखादिक अंकविद्या प्रमुख आजीविका चलाववानो हु न्नर शिखाव्यो होय एवो उस्ताद ब्राह्मणादिक होय तेनुं बहुमान करवुं पडे, नक्ति करवी पडे, अन्न वस्त्रादिक आपवुं पडे,तेनुं आगार छे. उचित्त व्यवहार जाणी ए सर्व करुं पण धर्म बुद्धियें नकरुं.

तथा मिथ्यात्वीना कोइक लौकीक वार तेवार आवे तेवारे ते ना उछवादिक कारणे ते कांइ द्रव्यादिक मांगवा आवे तथा ते मि थ्यात्वी कूप सरोवरादिकनुं खनन करवानी जे लौकीकरीतीछे तेने धर्म बुद्धि करी मानेछे तोतेवाकार्योने अर्थे कांइ द्रव्यादिक मांगवा ने आवे तेवारें शासननी निंदा मटाडवानी बुद्धि धारण करीने द्रव्यादिक आपुं पण तेमां सुकृतनी बुद्धि धारण करुंनही.

वीजा पण कोइ कुलिंगीने कोइ लज्जा दाक्षिणता नय प्रमुख कारणने लीधे बहुमान करवुं पडे, अथवा दान आपवुं पडे, ते के वल लोक व्यवहार तथा शासननी हीलना मटाडवाने अर्थे त था द्वेप मटाडवाने अर्थे लोकचाल करुं पण तेमां धर्म बुद्धि ध रुं नही. अने ते खरच संसार खाते लखुं.

तथा स्वलिंगी हिनाचारी केवल वेषधारी नेखधारी होय तेने शा सननी निंदा मटाडवाने अर्थे तथा तेमनो खेद मटाडवाने अर्थे प्रणा मादिक बहुमान करुं तथा कुल परंपरागत वृत्ति जाणीने अन्न वस्त्रा दिक आपुं केमके जिनमार्गनो लिंगी तथा दर्शनी पण याचना करे नही ए पण एक गुणछे तो त्यां ए गुण आगलकरीने आपवो.

तथा तेवा हीनाचारीमां पण जे शुद्ध प्ररुपकछे. अने जेणे आपणने नणवा सुणवानुं उपकार कीधुंछे, जेणे आपणने सुबुद्धि आपीछे, आपणी जूल मटाडीछे, तो तेवाने ए आपणुं उपकारीछे एवी बुद्धि धारण करीनेवंदन नमन सन्मानसन्मुख गमन प्रमु ख मनमां हर्ष धारण करीने करुं, माहारी शक्ति प्रमाणे सेवा क रुं, मोहोटा उपकारी धर्माचार्य करी मानुं, पण तेने सुसाधु शुद्ध

गुरु तत्व करी सर्दहुं नहि मात्र उपकारी सरद हुं. एरीते मिथ्या त्वनुं त्याग करुं शुद्ध समकेतने धारण करु. इति व्यवहारसम्यक्त्व.

हवे निश्चय सम्यक्त्व लिखेछे.

निश्चय सम्यक्त्वतेजे पूर्वे निश्चय देव, गुरु अने धर्म तत्वमां लखेलुंछे ते तत्वनी विचारणा करतां निष्पन्न स्वरूप संग्रह स त्ताग्राही नय गवेषतां, निश्चय देव ते ए आपणो आत्माजछे त था निश्चय गुरुपण आपणो आत्माज छे जे कारण माटे स्वरू पोपयोगीजीव ते पोतानी आत्माने सन्मार्गी करे जावाश्रवनुं त्या ग करावे एमाटे आत्मा एज गुरु तत्वछे.

तथा निश्चय धर्म पण आपणो आत्माजछे जे कारण माटे धर्म जे वस्तु स्वजाव तेने जे पामे ते धर्मि कहेवाय. एटले धर्म जे तत्व रमणता पोताना स्वरूपमां लीनता नयमार्गे जे जेटली वखत जेमां अन्नेदोपयोगी होय तेने तेटली वखत तद्रूमयीज क हिए, जेम पुरुषने स्त्रीनी आशक्ते करी लीनता उपयोग स्त्रीनोज थाय, तेने शुद्धनय स्त्रीज कहेछे माटे स्वधर्मे अन्नेदोपयोगी आ त्माज धर्मरूप कहिए. अने वस्तुगते शुद्ध स्वरूप रमणता ते स्व गुणछे अने स्वगुण तेधर्मछे तेमाटे धर्मपण आत्माज छे. एटले शुद्ध सम्यक्त्व श्रद्धागुण ते निश्चयथी देवदर्शनछे एटले निश्चय देवछे, तथा सम्यक् शुद्धात्म विज्ञान ते निश्चय गुरुछे, तथा तत्व रमणता, आत्मस्वरूपे मग्नता, ते निश्चय धर्मछे.

जे कारण माटे जेम देवदर्शन थकी अशुज मटेछे, मंगलीक थायछे, ग्रह पीडा मटेछे, मनकामना सिद्धि थायछे तेम अंहीं सम्यक्त्व पामवायकी मिथ्यात्व अने अनंतानुवंधिरूप परम अशुज मटेछे अने अपुनर्वंधकरूप श्रद्धान प्राप्तिरूप मंगलीक थायछे तथा कुमति कदाग्रहरूप ग्रह पीडा टलेछे अने सकाम निर्जरारूपमन कामना सिद्धि थायछे माटे शुद्धसम्यक्त्वदर्शन प्राप्ति ते देवछे.

तथा जेम गुरु मलवा थकी भूल मटेछे, हितवतावे, रहस्या पामे. तेम अंहीं आत्मविज्ञाने करी पण विविध परजाव ज्रमण रूप जूल मटी जायछे, तथा तत्वरमण रूप परमहितने पामेछे, अने निश्चय समता सहेज उदाशीनतानो जे रहस्य तेने जाणवा ने अर्थे तो ज्ञान तेज गुरुछे.

तथा जेम धर्मनी संगत थकी डुर्गतिमां पडे नही, दिवसेंदिव सें अधिक सौजाग्यनी वृद्धि थाय, तेम तत्वरमणरूप धर्म थकी पण परजाव धसणरूप कुगतिमां पडेनही, दिवसेंदिवसें असंख्य गुण निर्ज्जरा थाय तेथी अनेक गुण प्रगटरूप सौजाग्य पामे, माटे जे स्वरूपोपयोग तेज धर्म जाणवो इति निश्चयसम्यक्त्व संपूर्णम्.

हवे ए सम्यक्त्वनी जे करणी छे ते लिखेछे नित्यप्रत्ये छती जोगवाइयें अने छती शक्ते वाट घाटविना श्रीजिनप्रतिमां जुहारुं, परंतु जो प्रतिमांनुं योग नमले तो पूर्व दशा सन्मुख श्री वहेर मान प्रजुने सन्मुख उपयोग राखीने चैत्यवंदन करुं, रोगादिक कारणे नथाय तेनो आगारछे.

श्रीदेराशरनी दश आसातना मोहोटीछे ते नकरुं ते दश आ सातनना नाम कहेछे. देरासरमां तंबोल पान फल प्रमुख नखावा, पाणी नपीवुं, जोजन न करवुं, पगरखा प्रमुख चैत्यनी अंदर न लइ जवा, मैथुन सेववुं नही, चैत्यमां शयन नकरवुं, थुकवुं न ही, लघुनीत नकरवी, वडीनीत नकरवी, जुगटु रमवुं नहीं ए दश आसातना श्रीजिन मंदिरमां नकरुं. अने बीजीपण चोरासी आसातना जे छे तेने टालवानी मनमां चाहना राखुं के जे थकी मोहोटी चैत्यनी आसातना मने नलागे.

मासप्रत्यें अमुक सेर प्रमुख फूल चडावुं, मासप्रत्यें अमुक प्र माण पूर्वक फलादिक चडावुं, मासप्रत्यें घृतादिक अमुक सेर प्रमुख चडावुं, वर्ष प्रत्यें अंगलुहणा पांच अथवा दश चडावुं,

वर्षमध्ये केसर, चंदन, बरास भीमसेनी प्रमुख प्रभु पूजानिमित्ते जाइए तेमां माहारी शक्ति प्रमाणे द्रव्य खरचुं, देरासर निमित्ते वर्षप्रत्यें धूप अगरवती कर्पूर प्रमुख अमुक रकमनुं चडावुं, वर्ष प्रत्यें अमुक अष्टप्रकारी पूजा तथा सत्तर प्रकारी पूजा करुं करावुं.

वर्षप्रत्यें साधारण द्रव्य अमुक रकम सुधी खरचुं, वर्षप्रत्यें ज्ञान हेतुए ज्ञान सामग्रीमां अमुक द्रव्य खरचुं, दिनप्रत्यें नवकरवाली दश अथवा पंदर आत्महिते गुणु, नगुणाएतो आगल पाछल गुणीने पूरण करुं, परंतु रोगादिक कारणे नगुणाए तो तेनी जयणाछे.

दिनप्रत्यें छती समर्थाइए प्रभाते नवकारसी अने संध्याकाले दुविहार पच्चखाण करुं, परंतु वाटघाटमां अथवा रोगादिक कारणे नथाय तो तेनो आगारछे. वर्षप्रत्यें सामीवत्सल एटले अमुक संख्या साधर्मिकोनी जमाडुं. एवीरीते समकेतपालुं.

ए समकेतना पांच अतीचार जे छे ते टालुं ते लिखेछे.

१ पहेलुं संकाअतिचार तें श्रीजिनवचनना गंभीर गहनभाव सांभलीने पोताना मनमां संका संदेह धारण करे जे आ केमहशे मने बराबर बेसतो नथी एवो मनमां फगमगाट रहे.

२ बीजो आकांक्षातिचार ते जे कोइ अन्यमती पाखंडीनी कष्टक्रिया देखीने कांइ चमत्कार जुए तथा आलोकमां पण पूर्व जन्मना अज्ञान कष्टक्रियाना फल थकी अन्य मतिने घणोज सुखी दोलतवान देखीने मनमां विचार करे के अन्यमतिर्ओनो धर्म पण सारुंछे एमनु ज्ञान धर्म सहु सारुंछे एपण धर्म करेछे एवी चाहना धरे ते आकांक्षा नामे बीजो अतिचार जाणवो.

३ त्रीजो वितिगिछानामे अतिचार कहेछे जेकोइ पोताना पूर्वकृत पापोदय ने लीधे दुःख पामे तेवारे एवुं विचार करे के जे धर्म करिए छेए तेनुं फल शुं जाणीए क्यारे पामीशुं एटलुं फल थशे के न थाय तेकरतां तो जे धर्म नथी करता ते घणाज सुखी देखा

यछे अने अमे तो जेम जेम धर्म करणी करिए छेए तेम तेम दुःखी थैये छेए एधर्मतो शुं जाणीये क्यारे फलशे किंवा नहीज फलशे एवी विचारणाकरे तथा साधुना मलमलीन शरीर अने वस्त्र देखीने दु गछा करे जे शुं आ कांइज नही आवा गंदा हालमां रहेवुं सारूं नथी ए बापडा शुं तरशे एजो फाशु पाणी थकी स्नान करे तो तेथी कयोव्रत भंग थायछे ? एवी दुगछा करे ते त्रीजो अतिचार जाणवो.

४ चोथो मिथ्यात्विनी प्रशंसानुं अतिचार कहेछे. एटले मिथ्या त्विउंना गुरु जे ब्राह्मण तापसादिकछे तेनी प्रशंसा करे ते आवीरीते के ए मोहोटा तपस्वीछे, महापुरुषछे, मोहोटा पंमितछे, एना ब रोबरीउं कोइ नथी एमनी शुं वात करिए एवी एवी तेमनी प्रभु ता वखाणे अने कहेजे एतो पोतानुं अवतार सफल करेछे, तथा कोइक मिथ्यात्वी व्रत याग यज्ञ करे त्यारे तेनी घणीज खुसाम तीने खातर अत्यंत तारीफ करीने कहेके माहाराज तमे रुडुं कार्य किधुं तमे तो तमारो जन्म कृतार्थ करोछो इत्यादिक क हेवुं ए पण समकेतनो चोथो अतिचार जाणवो.

५ हवे पांचमो अतिपरिचयनामा अतिचार कहेछे जे मिथ्या त्विसाथे घणोज परिचय राखवो एकत्र भोजन संवास करवो, अत्यंत प्रीति वधारवी ते पांचमो अतिचारछे. केमके एवुं अत्यंत परिचय करवा थकी पण कोइ दिवसे मन विगडे, चित्त चलित थाय, पाप लागे तेमाटे परिचय न करवो ए पांचे अतिचार जा णवा पण आदरवा नही. एरीते ७ छिंमी तथा चार आगार सहित सम्यक्त्व पाळुं तेमां प्रथम ७ छिंमीना नाम कहेछे.

१ प्रथम (रायाभियोगेणं) एटले कोइ राजा नगरादिकनो मा लक होय अने ते बलात्कारे कांइ विरुद्ध कार्य करावे ते करवुं पडे तो तेथकी माहारो सम्यक्त्व भांगे नही.

२ बीजी (गणाभियोगेणं) एटले जाति ज्ञाति अथवा पंच

एटले लोकनो समुदाय तेमना हठने लीधे कांइ विरुद्धाचरण करवुं पडे तेथी माहारूं सम्यक्त्व जांगे नही.

३ त्रीजी (वलाजियोगेणं) एटले वलवंत चोर म्लेछादिक ने वश पक्षे थके ते लोको वलात्कारे कांइ विरुद्ध कार्य करावे ते करवुं पडे तेथी माहारूं सम्यक्त्व जांगे नही.

४ चोथी (देवाजियोगेणं) एटले क्षेत्रपाल माता व्यंतर विं झासणी अने पितरादिक प्रमुख तेमना आवेश थकी जीव परव श थइ जाय तेवारे कांइ विरुद्ध कार्य थइ जाय तेथी माहारूं स म्यक्त्व जांगे नही अथवा देवता मरणांत कष्टमां पाडे अत्यंत कष्ट आपे तेथी चेतना सिथिल पणे कायर थाय तेवारे दंक जरण न्याये कांइ विरुद्ध करवुं पडे तेथी माहारुं सम्यक्त्व जांगे नही.

५ पांचमी (गुरुनिग्गहेणं) गुरु एटले माता पिता उस्ताद प्रमुख तथा पूज्य इत्यादिक महोटाना केवा थकी कांइ विरुद्धवात कुचाल कार्य करवो पडे तो तेथी महारो सम्यक्त्व जांगे नहीं.

६ ठठी (वित्तिकंतारेणं) वृत्ति एटले डुर्जिक्षमां आजीविका निमित्ते कोइरीते पेट जराइनो धंधो उद्यम नमले घणीज आपदा पडे तेवारे कांइ विरुद्धाचरण करवो पडे तेथी सम्यक्त्वने दूषण लागे परंतु तेमां आजीविका चलाववा निमित्ते डुर्जिक्षमां कांइ अ नाचार करूं तो तेथी माहारुं सम्यक्त्व नजांगे ए ठ छिंमी कही.

हवे चार आगार लिखेछे.

१ प्रथम (अन्नत्थणाजोगेणं) एटले कोइ कार्य अजाण पणे उपयोग दीधाविना कांइ एकनो बीजो थइ जाय परंतु जेवारे यादगरीमां उपयोग आवी जाय तेवारे तेज वखत आगारने पाले परंतु दूषण नलगाडे ते प्रथम आगार जाणवो.

२ बीजो (सहस्सागारेणं) एटले सहसात्कारे एका एकी जाणेछे परंतु उपयोगनी चपलता थकी अथवा नित्य बहुल अ

न्यास थकी जाणते जाणते पण कांइ विरूद्ध थइ जाय तो तेथी माहारी प्रतिज्ञा भंग नथाय. ए बीजो आगार जाणवो.

३ त्रीजो (महत्तरागारेणं) एटले कोइ कार्य विशेष थकी लाभालाभनी शैली थकी (महत्तर के०) महोटा गुणवंतनी आज्ञा थकी कांइ कमवेश करवो पडे ते त्रीजो आगार जाणवो.

४ चोथो (सवसमाहिवत्तियागारेणं) एटले सर्व समाधि न्यत्यय अंहीं कोइ महोटा सन्निपातादिक रोगनी विक्रिया थकी उत्पन्न थयुं जे प्रचिभ्र पणु तेने लीधे वेशुद्ध थइ जाय एवी अवस्था प्राप्त थयेथी कांइ विरूद्धता करवी पडे तेथी पण माहारी सम्यक्त्वनी प्रतिज्ञा भंग नथाय ए चोथो आगार जाणवो.

ए ठ छिंडी अने चार आगार सहित समकित पाळुं अंहीं दिवसनो नियम दिवसमां नकरी शकुं तो बीजे दिवसे करी पोहोचाडुं अने महीनानु नियम बीजा महीनामां करी पोहोचाडुं तथा वर्षनुं नियम बीजा वर्षमां करी पोहोचाडुं एरीते जेवीरीते पोतामां पालवानी शक्ति होय तेवीरीते छूट राखवी.

ए ठ छिंडीने चार आगार जेम अहीं समकेत व्रतमां लख्याठे तेज नियमनी रीतें यथायोग्य शैली प्रमाणे अंहीं लखवा थकी आगल पण बीजा सर्व बारे व्रतोमां समजी लेवां फरी एकेका व्रतमां नहीं लखीशुं बधामां अंहीथीज धारणा करवी अंहीं सर्व प्रतिज्ञानुं रहस्य लिख्युंठे अंहीं सम्यक्त्व मार्गना कथननी गाथा नीचे लखियेंठेए गाथा ॥ अरिहंतो महदेवो, जावज्जीवंसु साहुणो गुरुणो ॥ जिणपन्नंततत्तं, इय सम्मत्तं मए गहियं ॥ १ ॥

इतिश्री स्याद्वाद शैली पूर्वक सम्यक्त्व अंगीकार करवानो विधि तेनी पीठिकासमाप्त थइ.

हवे आग्रंथमां केहेवाना बार व्रतोना नाम कहेछे.

प्रथम प्राणातिपातविरमणव्रत, बीजो मृषावाद विरमणव्रत, त्रीजो अदत्तादान विरमणव्रत, चोथो ब्रह्मचर्यव्रत, पांचमो स्थूल परिग्रह परिमाणव्रत, छठो दिग् परिमाणव्रत, सातमो जोगोपजोग परिमाणव्रत, आठमो अनर्थदंड विरमणव्रत, नवमो सामायकव्रत, दशमो देशावगासिकव्रत, अगीआरमो पोषधोपवासरूप व्रत अने बारमो अतिथिसंविजागव्रत ए बार व्रतना नाम जाणवा.

॥ अथ प्रथम स्थूलप्राणातिपात विरमणव्रत प्रारंजः ॥

ए प्रथम थूलप्राणातिपात विरमण व्रत तेना बे जेदछे. तेमां एक ऊव्य प्राणातिपात बीजो जाव प्राणातिपात त्यां ऊव्यप्राणातिपात विरमण व्रत ते एके परजीवने पोता सरखो जाणीने जयणा पाले. एना दश ऊव्य प्राणोनी रक्षा करे, उगारे. ए ऊव्य प्राणातिपात विरमण व्रत कहीए. एमां व्यवहार दयाछे. अने जावप्राणातिपात विरमण व्रतते आपणो जीव कर्मने वश पड्यो थको डुख पामेछे. आपणा जाव प्राण जे ज्ञान दर्शनादिक तेनुं मिथ्यात्व कपायादिक अशुद्ध प्रवर्तनरूप शस्त्रथी प्रतिक्षणे घात पामेछे, प्रतिक्षणे हणायछे. ते आपणा जीवने कर्म रूप शत्रुथी छोडाववानी फिकर करीने तेनो उपाय जे आत्मगुण रमणता तेने धारण करे, परजाव रमणना वारे, शुद्धोपयोगे वर्त्ते, उदये अव्यापक रहे. एक स्वजाव मगनता तेज समस्त कर्म रिपुने उच्छेद वा अमोघ शस्त्रछे. एटले सर्व परजाव इष्टता निवारीने. स्वरूप सन्मुख उपयोगते जाव प्राणातिपात विरमण व्रत कहीए. अने निश्चय दयापण एजछे.

अंहींयां थूल प्राणातिपात विरमणव्रत ते थूल एटले जे मोटा नजरमां आवे, फरे, पडे, एटले त्रसजीव एमने संकल्प करी

ने नहणुं. ए हनन क्रियापण चार प्रकारनीछे. एक आकुट्टी करी ने हणवुं बीजुं दर्प्पे करीने हणवुं ३ त्रीजुं प्रमादे करीने हणवुं अने चोथो कल्पे करीने हणवुं ए चारेना अर्थ लखेछे.

१. प्रथम अकुट्टी एटले जे निषेधिवस्तु तेनुंज फरी उत्साह थकी सेवन करे जेम आखो सराई वस्तुनो फल तेनो जडयो न करवो जे निलोत्री मोकली राखी होय तोपण तेनुं जडयो करीने खा वुं नही छतां तेनी चाहना धरीने जडयो करे ते आकुट्टि दोष.

२ दर्प्पआकुट्टि एटले उछक पणाथी उन्मत्तपणे मान अने गर्व धरीने दोड करे ने तेथी हिंसा थाय तेने दर्प्पआकुट्टि हिंसा कहीए, जेम गाडी, वहेल घोडा प्रमुखने परस्पर एकेकथी अ भिमान धरीने दोडावे ए आकुट्टी दर्प्प हननक्रिया जाणवी.

३ त्रीजी आकुट्टि प्रमाद एटले काम जोगने विषे तीव्र अभि लाषथी जे हिंसा करे, तेम कामो दीपन करवा माटे त्रसादिजी वनी हिंसा करीने पट्टी, गोली, माजम प्रमुख बनावे ते आकुट्टि प्रमाद हनन क्रिया जाणवी.

४ चोथी कल्पहिंसा एटले पोताना घरकामने सारुं रंधनादि क करे तेने जाणवी. अहींयां श्रावकने प्रथम हिंसा तो बीलकु ल नज करवी जोइए. जोरती करे तो पण जयणाथी करे ते माटे अहींयां संकल्प करी आकुट्टी तथा दर्प्प करी त्रसजीवने न हणुं. ए चीटी जाती छे एने मारुं एवो संकल्प करीने जीवने हणे हणावे एने आकुट्टी संकल्प कहीए.

एवो संकल्प करीने निरापराधी जीवने कारण विना न हणुं, न ह णावुं कारणे, आरंभे, रंधनादि गृहस्थ करणी करतां तथा पुत्रादि कना शरीरे जीवोत्पत्ति थइ होय तेना औषधादि कारणे करवुं पडे तेनी जयणाछे. घोडा, बलद प्रमुखने चाबकादिक मारवापडे तेनो आगार. तथा पेटमां करमीया, गंडोल पगमां नारु अथवा हरस, श

रीरमां चम्म अने जुं प्रमुख उपजे, तथा मित्रादिक अथवा वीजा स्व जनादिकना शरीरने विषे उपजे तेनो उपचार करवानी जयणा. जे कारणे साधुने तो सूक्ष्म अने बादर ए बंने जातीना जीवनी, त्र स अने थावर बंने भेदना जीवनी नवकोटि विशुद्ध पच्चखाणथी हिंसानो त्यागछे. एकारणे साधुने वीश विश्वानी दयाछे, अने ग्र हस्थने सवा वश्वानी दयाछे. ते केवीरीते तेनो विवरो लखीए छेए.

॥ गाहा ॥ जीवा सुहुमाथूला । संकप्पारंजाजवेडुविहा । सा वराह निरवराहा । साविरकाचेवनिरविरका ॥ १ ॥ अर्थ–जग तमां जीवना बे भेद कह्याछे. एक थावर, बीजा त्रस, तेमां थावरना वली सूक्ष्म, बादर ए बे भेदछे, तेमां पण सूक्ष्मनी हिंसा नथी कार ण अति सूक्ष्म जीवना शरीरने बाह्य शस्त्रनो घाव लागतो नथी, तेमने स्वकाय एटले पोतानी जातीना जीवोथी घात पातछे. पण बा दर नथी एमाटे अहींयां सूक्ष्म शब्दथी पण जाणवुंके थावर जीव, पृ थ्वी, पाणी, अग्नि, वायु, वनस्पतिरूप बादर ए पांचे थावर तेमने सूक्ष्म कहीए. अने थूल एटले बेंडि, त्रेंडि, चौरेंडि, पंचेंडिरूप जा णवा ए जीवना मूल भेद बे छे तेमां सर्व जीव आव्या. तेउं सर्वेनी त्रिकरण शुद्ध साधु रक्षा करेछे. तेमाटे वीशविश्वानी दया, मुनिनेछे.

पण श्रावकथीतो पांच थावरनी दया पली शकाय नहीं. सचि त्त आहारादि कारणथी अवश्य हिंसा थायछे. माटे दश विश्वागया अने दश रह्या. एटले एक त्रस जीवनी दया राखवाना दश विश्वा रह्या तेना पण वली बे भेदछे. एक संकल्प. बीजो आरंभ. तेमां आरंभे करीने जे त्रस जीवनी हिंसा थइ जाय ते छोडी न जा य तेमाटे बे हिंसामां एक संकल्प हिंसानो त्याग अने आरंभ हिं सानी तो जायणाछे, एम गणतां फरी दशमांथी अडधा गया एटले पांच विश्वा रह्या, एटले संकल्प करी त्रस जीव नहणुं. एमां पण जीवना बे भेदछे. एक सापराधी जीव अने बीजा निरपराधी जीव

छे. तेमां जे निरपराधी जीवछे तेमने न हणुं, अने सापराध जी वने हणवानी तो जयणा छे. जेथी करी सापराधीनी दया, श्राव कथी सदा सर्वेरीतेंथी पले नहीं.

जेम के घरमां चोर पेठा छे. तेछे आपणी चीज लइ जा छे ते मार्या कूट्या विना छोडे नहीं. वली वीजुं दृष्टांत एके आपणी स्त्री साथें कोइ अन्य पुरुषने अनाचार सेवतां देखियें तो तेने तस्दी दीधा विना ते छूटे नहीं. ए प्रमाणे सापराधी कहीएं. वीजुं पण क्यारेंक रा जानी आज्ञाथी युद्धमां गया थका संग्राम करवो पडे, त्यारें त्यां आ गलथी शस्त्रादिक चलावियें नहीं. सामो शत्रु प्रथम शस्त्रनो मारो करे, त्यार पछी आपणे करीएं. ए माटे सापराधीनो संकल्प पण न छूटे. त्यारें वाकी रहेला पांच वशामांथी पण अडधा गया, वाकी अढी वशा रह्या. एटले संकल्पीने "निरपराधी जीवने न मारुं" एट लुंज फकत रह्युं. एमा पण वली वे भेद छे. एक सापेक्ष, अने वीजो निरपेक्ष, तेमां सापेक्ष निरपराधी जीवनी दया, श्रावकथी पले नहीं तेनुं कारण शुं? ते कहेछे. श्रावक पोतें घोडा, घोडी, वेल, वलद, रथमां, गाडीमां, के इत्यादि वीजा वाहनोपर वेसे छे. त्यारें घोडा प्रमुख वलद विगेरेने चावका के आर लगावे छे, पण विचारतो नथी के, घोडाएं के वलदें शो अपराध कर्योछे? एमनी पीठ उपर तो चढी वेठो छे. ए जीवना शरीरसामर्थ्यनी तो कांइ खवर छे नहीं. जे आजीव, वलवान् छे, के दुर्वल छे. पोतें उपर चढी वेठो छे, ने वली तेने गा ल प्रमुख दइने मारे छे! पण एतो निरपराधीज छे. वली आपणा अंगमां तथा आपणां पुत्र, पुत्री, नाती, गोत्री, आदिकना मस्तक मां अथवा कानमां कीडा पड्या छे, अथवा आपणाज मोढामां के, दाढमां के दांतमां, के जडवामां कीडा पड्या छे, तेवारें ते मने मारवाना उपायें करीने कीडानी जग्याएं ओषध लगाडवुं पडे, प ण ए जीवोएं शो अपराध कर्यो छे? एतो पोतानी योनि उत्पत्ति

रीरमां चम्म अने जुं प्रमुख उपजे, तथा मित्रादिक अथवा बीजा स्व जनादिकना शरीरने विषे उपजे तेनो उपचार करवानी जयणा. जे कारणे साधुने तो सूक्ष्म अने बादर ए बंने जातीना जीवनी, त्रस अने थावर बंने भेदना जीवनी नवकोटि विशुद्ध पच्चखाणथी हिंसानो त्यागछे. एकारणे साधुने वीश विश्वानी दयाछे, अने गृहस्थने सवा वश्वानी दयाछे. ते केवीरीते तेनो विवरो लखीए छेए.

॥ गाहा ॥ जीवा सुहुमाथूला । संकप्पारंजाजवेडुविहा । सावराह निरवराहा । साविरकाचेवनिरविरका ॥ १ ॥ अर्थ—जगतमां जीवना बे भेद कह्याछे. एक थावर, बीजा त्रस, तेमां थावरना वली सूक्ष्म, बादर ए बे भेदछे, तेमां पण सूक्ष्मनी हिंसा नथी कारण अति सूक्ष्म जीवना शरीरने बाह्य शस्त्रनो घाव लागतो नथी, तेमने स्वकाय एटले पोतानी जातीना जीवोथी घात पातछे. पण बादर नथी एमाटे अहींयां सूक्ष्म शब्दथी पण जाणवुंके थावर जीव, पृथ्वी, पाणी, अग्नि, वायु, वनस्पतिरूप बादर ए पांचे थावर तेमने सूक्ष्म कहीए. अने थूल एटले बेंद्रि, त्रेंद्रि, चौरेंद्रि, पंचेंद्रिरूप जाणवा ए जीवना मूल भेद बे छे तेमां सर्व जीव आव्या. तेउ सर्वनी त्रिकरण शुद्ध साधु रक्षा करेछे. तेमाटे वीशविश्वानी दया, मुनिनेछे.

पण श्रावकथीतो पांच थावरनी दया पली शकाय नही. सचित्त आहारादि कारणथी अवश्य हिंसा थायछे. माटे दश विश्वागया अने दश रह्या. एटले एक त्रस जीवनी दया राखवाना दश विश्वा रह्या तेना पण वली बे भेदछे. एक संकल्प. बीजो आरंभ. तेमां आरंभे करीने जे त्रस जीवनी हिंसा थइ जाय ते छोडी न जाय तेमाटे बे हिंसामां एक संकल्प हिंसानो त्याग अने आरंभ हिंसानी तो जायणाछे, एम गणतां फरी दशमांथी अडधा गया एटले पांच विश्वा रह्या, एटले संकल्प करी त्रस जीव नहणुं. एमां पण जीवना बे भेदछे. एक सापराधी जीव अने बीजा निरपराधी जीव

छे. तेमां जे निरपराधी जीवछे तेमने न हणुं, अने सापराध जीवने हणवानी तो जयणा छे. जेथी करी सापराधीनी दया, श्रावकथी सदा सर्वरीतेंथी पले नहीं.

जेम के घरमां चोर पेठा छे. तेउं आपणी चीज लइ जा छे ते मारया कूट्या विना छोडे नहीं. वली बीजुं दृष्टांत एके आपणी स्त्री सार्थे कोइ अन्य पुरुषने अनाचार सेवतां देखियें तो तेने तस्दी दीधा विना ते छूटे नहीं. ए प्रमाणे सापराधी कहीएं. बीजुं पण क्यारेक राजानी आज्ञाथी युद्धमां गया थका संग्राम करवो पडे, त्यारें त्यां आगलथी शस्त्रादिक चलावियें नहीं. सामो शत्रु प्रथम शस्त्रनो मारो करे, त्यार पछी आपणे करीएं. ए माटे सापराधीनो संकल्प पण न छूटे. त्यारें बाकी रहेला पांच वशामांथी पण अडधा गया, बाकी अढी वशा रह्या. एटले संकल्पीने 'निरपराधी जीवने न मारुं' एटलुंज फकत रयुं. एमा पण वली बे नेद छे. एक सापेक्ष, अने बीजो निरपेक्ष, तेमां सापेक्ष निरपराधी जीवनी दया, श्रावकथी पले नहीं तेनुं कारण शुं? ते कहेछे. श्रावक पोतें घोडा. घोडी, बेल, बलद, रथमां, गाडीमां, के इत्यादि बीजा वाहनोपर बेसे छे. त्यारें घोडा प्रमुख बलद विगेरेने चाबका के आर लगावे छे, पण विचारतो नथी के. घोडाएं के बलदें शो अपराध करयोछे? एमनी पीठ उपर तो चढी बेठो छे. ए जीवना शरीरसामर्थ्यनी तो कांइ खबर छे नहीं. जे आजीव, बलवान् छे, के दुर्बल छे. पोतें उपर चढी बेठो छे. ने वली तेने गाल प्रमुख दइने मारे छे! पण एतो निरपराधीज छे. वली आपणा अंगमां तथा आपणां पुत्र, पुत्री. नाती, गोत्री, आदिकना मस्तकमां अथवा कानमां कीडा पडया छे, अथवा आपणाज मोढामां के. दाढमां के दांतमां, के जडयामां कीडा पडया छे. तेवारें तेमने मारवाना उपायें करीने कीडानी जग्याएं ओषध लगाडवुं पडे, पण ए जीवोएं शो अपराध करयो छे? एनो पोतानी योनि उत्पत्ति

स्थान पामीने कर्मने आधीन आवीने अहीयां उपजे छे, पण त्यारें कशी दुष्टतायी उपजता नथी, तो ए अपराधी नथी. ते कारणमाटे निरपराधी जीवनी पण हिंसा, कारणे करीने श्रावकथी तजी जाय नहीं. वली बाग बगीचामां गया थका फूल, फल, पांदडां, गुछा प्रमुखने तोडवा सारु चोट देवी, अथवा फल, फूल, तोडी लेवां; ते माटे अढी वशामांथी अडधो गयो त्यारें सवा वशानी दया रही. एटली सवा वशानी दया शुद्ध श्रावक ने छे.एटले त्रसजीव संकल्पीने निरपराधीने कारणविना हणुं नहीं. एवी प्रतिज्ञा थइ. ए प्रतिज्ञा ज्यारें शुद्ध रहे. त्यारें ते श्रावक व्रती कहेवाय. ज्यां लगी पोतानी शक्ती पहोचे त्यां लगी उगाइ न करे, अने निर्ध्वंसपणे न रहे. रखेने कोइ जीवनी विराधना थाय! एवो उपयोग न राखे. तथा घरमां आरंभ कारणे लाकडानां गाडां प्रमुख लावे, ते सारां लाकडां होय, सडेलां होय नहीं, ते लाकडां घणा दिवस रहे तो पण तेमां जीव न पडे एवां पाकां, अने सुकां होय तेवां लावे. तेपण ज्यारें रसोइनुं काम पडे त्यारें पुंजी करी, अने फाटक झुटक करीने बाले. तथा घी, तेल, मीठुं, तथा अथाणा प्रमुख रसनरी चीजनां वाशण, जतनथी राखे, मोढुं बांधी करीने राखे, उघाडुं राखे नहीं. वली चुला उपर, अने पाणी राखवाना ठेकाणा उपर चंदरवा बांधे, तथा अनाज ल्यावाने लावे ते पण शुद्ध, अने नवुं लावे. अथवा वरसनी उपरनुं अनाज लावे, पण ते सडेलुं होय नहीं. कोइ त्रस जीव नजरमां न आवतो होय तेवुं लावे. पाणी गालवानुं गरणुं पण जाडुं मजबुत जोइने राखे. एक प्रहर पीरसो के पाणी गाली नाखे. वली वर्षाऋतुमां बहुजीवनी उत्पत्ति थाय, तेथी ते ऋतुमां गाडी, रथ. घोडानी भारी न करे. कारणके, ज्यां रथनुं के गाडीनुं चक्र फरे, त्यां असंख्य जीवनी घात थाय. वली

हरिकाय बहुबीज त्रसकाययुक्त पूर्वक जेमां अति आरंभ हो
य, एवी हरिकाय प्रमुख खावे नहीं. खाटला प्रमुखमां जीव
होय, ते माटे खाटला प्रमुखने तडकामां नाखे नहीं. सडेलो दा
णो तडकामां नाखे नहीं. एवुं पाणी अनाजना संसर्गवालुं मोरी
मां नाखे नहीं. काचुं दूध. मग तथा मठची विदल खाय नहीं.
फागण वदिथी आरंभिने आठ महिना पर्यंत शाक, पत्र, भाजी,
प्रमुख खाय नहीं. मीठाइनो काल पूर्ण थया पछी मीठाइ पण खाय
नहीं. मणशील चलितरस, तथा वाशी अन्न अभक्ष्य मधु प्रमुख,
विषप्रमुख आदर करी खाय नहीं. घरमां बुहारणी पण शण प्रमु
ख घांसनी अने ते पण कोमल राखे, कारण के कठोर राखवाथी
जीवनी हाणी थायछे. माटे कोमल राखे. बे चार जण मली, एक
थालमां बेसी भोजन करे. स्नानादिक बहु पाणीथी न करे, जे
टलुं प्रयोजन होय तेटलुंज पाणी वापरे. तडकामां, मेदानमां,
अथवा मोरीनी जगायें चोकी उपर बेसिने नहाय. न्हावानुं पा
णी वासणमां लइने थुडुं थुडुं ढोले. ज्यां सुधी निरारंभी व्या
पार मले, त्यां सुधी खर कठोर कर्मादिक बहु आरंभी व्यापार
न करे. कोइनो हक भांगे नहीं. घरमां एठा, अन्ननुं धोवण बे
घडी उपरांत राखे नहीं. पूजन प्रमार्जन कर्या विना कशी पण
क्रिया करे नहीं. मोठी मोरीमां पाणी चलावे नहीं. दीवावत्ती
प्रमुख लगाडे, ते पण यत्नवडे करी जीवरक्षा थाय तेवीरीतें करे.
जे आ वखोरा प्रमुख वासणथी पाणी पीधुं होय, तेमां मोढानी
लाल पडी होय, अथवा वलगी होय, ते कारणे ते पात्र पाणीमां
बोलीने फरी भरे नहीं. पाणी भरवानुं पात्र दांनीवालुं होय, तेना
वडे आबखोरो के लोटो भरे. इत्यादि व्यवहार शुद्ध उपयोगें
प्रवर्त्ते. एवा श्रावकोने सवा वशानी दया पूरी कहीछे. ए प्रमाणे
प्रथम व्रत शुद्धछे, तेना पांच अतिचारछे. ते हवे लखीयें छेयें.

१ प्रथम वधनामा अतिचारछे. ते एके,क्रोध करीने पोताना
घडे निर्दयपणे गाय,घोडा,प्रमुखने मारे,चलावे,ते पहेलो अति

२ बीजो बंध अतिचार.ते ए के, गाय बलद, वाछरडां प्रमुख
बोने गाढ बंधनथी बांधे,ते आकरा बंधनथी जीव अतिदुःख प
नीचुं माथुं राखे. विचारां, अबोलानी जेम मनमां कल्पे. कव
ए जानवरोने गाढबंधने करी बांध्यां छे; एटलामां अग्नि लाय थ
त्यारें तेओ उतावले तूटी शके नहीं. तेथी ए जीवनी विराधना
जाय. ते वास्ते गाढबंधन पण अतिचारछे. वास्ते जानवरने ढ
बंधनथी बांधे. अने कोइ गुन्हेगार मनुष्यने पण निर्दय तथा
पट गाढ बंधथी बांधे तो त्यांपण बीजा बंधअतिचारनुं दूषण ला

३ त्रीजो छविछेद अतिचार, ते ए के, बलद प्रमुखना कान
दावे नाथ घाले, खासी करे, पुरुषत्वपणुं मटाडे. बीजुं पण छे
भेदन करे, करावे. ते त्रीजो छविछेद अतिचार जाणवो.

४ चोथो अतिभारारोपण अतिचार छे. ते ए के, जे बलद प्र
उपर जेटलो बोजो अनुमान प्रमाणे भरवानी रीती होय, ते
करतां वधारे भरे तो, अतिभारारोपण अतिचारनो दोष ल
श्रावकने तो छकडा बलद प्रमुख जे भारथी भरे,ते हमेशां भरव
जेटली चाल होय, तेना करतां पण पांच शेर दश शेर ओछो भार
वो, तो व्रत शुद्ध रहे. एमां पण जानवरनी चालवानी शक्ति एट
नथी तो विवेकथी चलावे. भार ओछो करे, जानवर निर्बल होय
तेना खावा पीवानी तथा घांस, दाणा, पाणीनी खबर ले, तथा
रावे,परंतु एवुं न विचारे के,लोक सर्व जे प्रमाणे भार नाखे छे तो
पणे पण तेटलो भार एना पर नाखीयें. ते व्यवहार शुद्धछे, एमां
इ हरकत नथी. एवुं न विचारे. व्रती होय तो ते बीजो बलद
ए व्यवहारछे.ए प्रमाणे चोथो अतिभारारोपण अतिचार जाण

५ पांचमो अतिचार भात पाणीनो विछेद करे. ते ए के,

द. घोडानी मरजी माफक खाणुं बंध करे, हमेशना खाणामांथी कांइ ठेछुं, करे,अथवा असूर करीने आपे, वखत वटावीने आपे. त्यारें ते अतिचार लागे. वळी कोइ मनुष्यनी वृत्ति तथा आजीविका बंध करवी, ते पण एमां आवी गयुं. अने श्रावक तो दास, दासी, चाकर, ढोर प्रमुख पोतानी पाळख जेमनी आजीविका बांधी हो य. तेमनी खबर लइने पछी पोतें जोजनादिक करे. तो व्रत शुरू र हे. ए पांचमो जातपाणी विछेदनो अतिचार जाणवो. ए पांचे अ तिचार श्रावकने जाणवा, पण आदरवा नहीं ॥

इति द्वादशव्रतविवरणे प्रथमस्थूलप्राणातिपातविरमणव्रते पं

फित श्री ज्योतसागरगणिनाकृतजाषा संपूर्णा ॥ १ ॥

॥ अथ ॥

॥ द्वितीयस्थूलमृषावादविरमणव्रत प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

अरिहंतादिक समरिके, त्रिकरण शुध चित्त लाय;
डुतिय व्रत विवरण लिखुं, मृषावाद जिम जाय ॥ १ ॥

हवे स्थूल मृषावाद व्रत एटले, स्थूल कहीयें मोटुं, अने मृषा वाद एटले जुठुं बोलवुं, तेनुं विरमण कहेतां त्याग करवुं, तेने स्थू लमृषावाद विरमण व्रत कहियें. एटले घणुं जुठुं बोलवाथी जगत् मां अप्रीति वधे,अपयश थाय, धर्मनी निंदा थाय. माटे कोइ जीवने डुःख थाय,हानी पहोंचे, एवुं जुठुं न बोले. पोताना मतलबनी वात अनेक तरेहथी बनावी बनावीने अनेक गुणी वधती कहे, अने गेर मतलबनी वात होय ते अनेक गुणी ठेठी करीने कहे; पण जेवुं होय तेवुंज न कहे. एवा डुर्गुणनो जे त्याग करवो,तेने स्थूल मृषा वाद विरमणव्रत कहियें. एना बे जेदछे. एकद्रव्य मृषावाद, अने बी

जो नाव मृषावाद. तेमां द्रव्यमृषावाद एटले जाणतां अजाणत
विपरीत कहे, जुतुं कहे, ते द्रव्य मृषावाद. बीजो नावमृषावाद ए
टले सर्व परनाव पुद्गलादिकने आत्मत्वबुद्धियें करीने पोतानां ज
णे, पोतानां कहे, रागद्वेषयुक्त कृष्णादिक अशुद्धलेश्याथी आगम
विरुद्ध बोले, आगमार्थ लुपावे. उत्सूत्र प्ररुपे, कुयुक्ति लगाडे, ते नाव
मृषावाद कहियें. ए मृषावाद जाणतां ठतांज थाय. आ व्रत सर्व
तमां मोटुं ठे. जो पालवामां अतिशुद्ध उपयोगी थाय, त्यारें ज
शुद्ध रहे, अने व्रत पले. जे कारणे बीजां व्रत द्रव्यलेश विपयी
ते देखाडेठे. एक मात्र जीवनीज शुद्ध उंलखाणथी जीवदया पलेठे. त
था परनिष्ठागत पुद्गल पर्याय, एटले पोतानी निष्ठानी वस्तुथी बीज
कोइ जे त्रणमात्र प्रमुख चीजठे ते परनिष्ठा कहेवाय ठे. ते तेन
मालेकना दीधा विना न लहे, एटले अदत्तव्रत पले. तथा मात्र स्त्रीना
संयोगनो त्याग, मन वचन कायाथी करे, एटले ब्रह्मचर्य व्रत पले. त
था धन धान्यादिक नवविध परिग्रह त्याग करे, मूर्छा न धरे, एटले
परिग्रहविरमण व्रत पले. एम एक एक द्रव्य देशयकी उंलखाण थ
वाथी चारें व्रत पलेठे. अने जे मृषावाद विरमण व्रतठे तेतो ज्यारें
षटद्रव्यनी द्रव्यगुण पर्यायथी, द्रव्य क्षेत्र काल नावथी, ओलखा
ण थाय. एवो तीव्र केहतां जोरावर उपयोगी थाय. त्यारें शुद्ध
पाले, तो तो ठीक, नहीं तो एकपर्याय मात्र विरुद्ध बोलवाथी व्रत
नंग थाय. ए माटे साधु पण प्रायें बहु नाषा बोले नहीं. तथा
साधु पण प्राणातिपातव्रतादिक चार महाव्रतमां अन्यतर नांगे,
त्यारें एक चारित्र गुणनो नंग थाय, पण ज्ञानदर्शनना नजना,
अने तेथी आगली गति बगडे. अने ज्यारें मृषावाद व्रत नांगे
त्यारें रत्नत्रयी समूलीज जाय, दुर्गतिमां रोले अने अनंत संसारी
थाय दुर्लनबोधी थाय. ए माटे ए व्रतने शुद्धरीतें पालवाने अर्थें
ठए द्रव्यनी समज बराबर जोइयें, सावधानपणुं राखवुं जोइयें.

तथा आ जगत्मां द्रव्य असत्यना त्यागी तो छए दर्शनमां जोइएं छेयें. पण नाव असत्यनो त्याग तो एक श्रीजिनागमरुचि शुद्ध श्रद्धावंत पुरुषनेज थाय. बीजाने नहीं थाय. त्यां स्थूलमृषावाद त्याग व्रतनां पांच मोटां जुठ छे. ते व्रती श्रावकें अवश्य टाळवां जोइएं. ते पांच जुठ हवे लखियें छेयें.

१ प्रथम कन्यालीक एटले आपणा मेलापीनी कन्या छे. तेनी सगाइ थती होय, त्यारें कन्याना ग्राहक पूछे के कन्या केवीछे? तो पोताना मेलापीनी प्रीतियें करीने ते कन्यामां जे दोष होय, ते छुपावे. गुण होय, न होय,तोपण जुठुं वधारीने कहे के, ए कन्या निर्दोष छे.एवी सारा कुळनी अने सारां लक्षणनी मलवी मुश्केल छे. आ तो साक्षात् पार्वती छे. एवुं रागथी कहे. अने जो कांइ परस्पर द्वेषभाव होय तो, जोके ते कन्या निर्दोष अने सुलक्षणवंती होय तोपण कहे के, ए कन्या कुलक्षणी छे. नठारां पगलांनी छे. बहु बोलकणी ने वढकणी छे. एवा एना दुर्गुण, ए छोडीना पाडोशी लोक कहेछे ते अमे सांजल्या छे. एनाथी जे संबंध करशे, ते पस्ताशे. एवी रीतें अछता दोष कहे, पण श्रावक जे व्रतधारी छे तेने तो कोइनी सगाइ सादी आरंजना जुठ कामने माटे जुठुं बोलवुं पण युक्त नथी. जे कारण माटे स्त्री जरतारनो संबंध करावयो ते संसारभ्रमण बीज, वाववानुं छे. एम करतांय आपणो संबंधी छे, घरनी वात छे, दाक्षिण्यताथी पण छुटाइ शकाय नहीं, एवुं होय तो पण अति जुठुं अशुद्ध न बोले. अने गुण होय ते कहे. वली कहे के, जाइ! तमे तमारी मेलें पोतानी खातर जमा करी ल्यो. कारणके जन्म सुधीनो संबंध छे. एम केहेवुं, ए व्यवहारछे. वली कोइ चाकर राखतो होय, तथा जे कोइ जाग, पांती के, व्यापारनुं खातुं नामुं कोइनी साथें जोडाववा मेलववानुं चाहे.त्यारें ते पण कोइ एक आवीने पुछे के, ए केवोछे? सारो छे के नठारो छे. त्यारें व्रती श्रावक होय, ते तो राग

द्वेषनी वात न करे. तेथी त्यां पण कन्यालीकनी परें कम वेश न बोले, पण गुण होय ते कहे अने वली कहे के, जाइ! मनुष्यना मनोगत जावमां कोण माहितगारछे? तमे शाहाणाछो. पोतें पोतानी तजवीज करी ल्यो. ए प्रमाणे कन्यालीक जुठ जाणवुं.

२ बीजुं मोटुं जुठ गवालीक छे. ते केहेछे. जेम कोइ रीतें कोइ एक मलतीया दोसदार स्नेही माणसनी गाय वेचाती होय, त्यारें तेनो स्नेही पुरुष लेनार धणीने कहे के, आ गायने खुशीथी ल्यो. आ गाय घणुं दूध देनारीछे, सुलक्षणी छे, लात प्रमुख दूजती वखतें चलावती नथी, आ गायनी मानी पण अमने खवर छे. ते पण वहु दूध देती हती. एवी वातो कहीने ते मित्रनी गायने वेचावी आपे. अने ते गाय तो घणा अपलक्षणवाली छे, तथा थोडा दूधनी देवा वाली छे, अने दोहोती वखत लात प्रमुखनी मारनारी, इत्यादिक दोषनी जरेली छे. पण त्यां जे व्रती श्रावक होय, ते तो राग द्वेषथी ते दोषने निर्दोष छे एम कहे नहीं, परंतु यथार्थ जापा वोले. एमां सहु चोपगां जानवर हाथी, घोडा, सूतर, वलद, गाय, झेंपनो एवो विवरो जाणी लेवो. प्रथम तो ए हाड विक्रय करावबोज योग्य नथी. तेम करतां कदापि स्नेह संवंध होय ने तेने लीधे वोलवुं पडे, तो आपणा व्रतने दोष न लागे एवुं वचन वोलवुं. ए रीतें ए गवालीक जुठ त्याग करवुं जोइएं.

३ त्रीजो मृषावाद, जूम्यालिकछे. ते एके, जमीनने लगतुं जुठुं वोलवुं ते एवी रीतें के जमीन कोइनी होय ने आपस आपसमां कहे के आ जमीन मारीछे, एवो बुद्धिप्रपंच करीने ते जमीन आपणी ठरावे अथवा वीजा कोइ वे जण जमीन वास्ते लडता होय, त्यां राग द्वेषनी परणतिथी युक्ति कुयुक्ति करीने ते जमीन पोताना रागी मलतीयानी ठरावे, अने द्वेषीने जुठो ठरावे. एम होय कोइनी, ने अपावे कोइने. जग्यातो कोइ वी

जानीज होय तो कहे के,आतो अमुक धणीनी जग्या ले ए पण महोटो मृषावाद ले. प्रथम तो व्रती श्रावकने जमीनना कजी यानी वातमां पडवुंज नहीं. केम के, जमीननो कजीउं महोटा उत्पात आरंजनी खाण ले. तोपण कदापि आपणो तेनाथी कांइ संबंध ले, ने तेथी ए वातमां पड्या विना बुटको न थतो होय तो जेवुं होय तेवुं यथार्थ कहीएं. पण जूठुं कहीएं नहीं. पेहेलांथीज एकांतमां आपणा मलतीया संबंधीने समजावीएं के, जाइ! ए वातमां हुं नहीं बोलुं, माटे मने ए वातमां वचे नाखशो नहीं. एवी रीतें करतां पण कोइ पंच मलीने आपणी पर ए कजीयाना ठरावनी वात नाखे,तो ते वखतें चतुराइथी पहेलां तो नज बोले; अने एवुं कहेके, माराथी तो बीजा महोटा महोटा पंच ले. ते पंच मली जे ठराव करशे ते खरो. वली बीजा पण माह्या घणाले. इत्यादिकविनय वचन कही ठानो मानो बेसे,पोताना व्रतनो जय राखे अने कदाचित् ए वातनो ठराव करवा बधा मली तेने बहुज आग्रह करे त्यारें कहे के, मने वारें वारें शुं कहोलो? हुं तो ए जमीननी वातमां पूरो माहितगार पण नथी, एवुं कहे. पण जूमिसंबंधी जूठुं कदापि न बोले. एमां घर, हवेली, बाग, बगीचा विगेरे सर्व जमीन संबंधीनी वात आवी गइ. कोइ एमानुं कांइ खरीदतुं होय, त्यारें ते सारुं ले के नगारुंले. ते न कहे. धन धान्यादिक परिग्रहनो मृषावाद पण एमांज आवी गयो. ए त्रीजुं जूठुं जूम्यालिक ले. तेनो व्रती श्रावक होय, तेणे त्याग करवो.

४ चोथो थापण मोसो,व्रतधारी श्रावकें न करवो. जे कोइ अनामत द्रव्य, जूषणादिक वस्तु, जलो गृहस्थ जाणी साक्षी राख्या विना मूकी गयो होय, ते केटलाएक दिवस बीत्या पठी ते धणी मागवाने आवशे त्यारें हुं नहीं आपुं. एवो कांइ बुद्धिप्रपंच करी तेने पंचमां जूठो ठेरावीश! ए ज्यारें मागशे त्यारें हुं एवुं कहीश के, अ

मारी पासें तमो थापण मूकी गया ते संबंधीनो कोइ अमारा हा
नो लखेलो दस्तावेज छे? अथवा कोइ साक्षी छे? बीजा जे कोइ थ
ण कोइने घेर मूके छे, तेनी पासेंथी लखावी करीने राखे छे. एवुं क
तेने दबावी पाडवानी युक्ति रचे, ने विचारे के हुं नगरमां म
यर हुं. ने एनो आव्यो गयो परदेशी छे. एनी कोण पक्ष खेंचशे
मारी मरजी तोडीने एनी तरफ कोण बोलशे! एवी द्रव्यनी ची
शा वास्ते छोडीएं!! अने हुं मारी अकलथी वधाने जवाब आपीः
कोइना पण दाव पेचमां हुं नहीं आवीश. एवा कुविचारमां पडे. ए
लमां पेलो थापण मूकनार आवीने मागे के जाइ! मारो माल आपं
ते वखतें तेने गुस्सो करीने कहे के जाइ! माल केवो? अने तमे को
सोंप्यो छे? आते शुं बोलो छो वारु आते कांइ ठीक कहेवाय? अमें त
ने ओळखता पण नथी, के तमे कोण छो? नोखपणमां कोइने त्यां मूक्य
होय तो त्यां तेनी तजवीज करो. अमे तो परिचय ओळखाण विन
कोइनी थापण राखता पण नथी. तेमां तमे तो वळी परदेशी छो, त
तमारी चीज शा वास्ते राखियें? एटली तेनी वात सांभळीने थापण
मूकवा वाळो कहे के, अरे साहेब! हुं देवावाळो, ने तमे लेवावाळ
आपण बंने जीवता छेएं. कांइ घणां वरस पण थयां नथी. चार पां
मास थयां तमारा पासें चीज मूकीछे. तो एटली थोडी मुदतम
तमे आवा शाहुकार थइने, आम जीवती माखी गळवा जेवी था
करोछो ते वात सारी नथी. जूठा झगडामां सारुं नथी. एम करत
बन्नेने कजीओ थयो, ने वढवा लाग्या. शाहुकार, पोताना जाइ
ओने कहे के, आ दगाखोर गले पडुने कोइ समजावो. पछी कहेशे क
नहीं. नहिंतो बहु दिवस याद करशे, एवी तस्दी पामशे. त्यार पछ
समजशे, आज पछी कोइ सार्थे जूठो झगडो न करे, ते माटे एने स
मजावो. नहीं तो पछी फोजदारीमां मोकली दीयो. अमारी पासे
थी बहु द्रव्य के चीज गणीने लेवा करनां एटलुं कहेवाथी जो समजे

ने पोताने घेर जाय तो सारुं; अमाराथी जूठो कजीउं नहीं करो!एवा जोरावरीनां वचन तेने संजलावे. हवे बापडो थापण मूकवावालो विचारे के, हवे हुं शुं करुं! अरे हुं क्यां! ने क्यां आ सहु लोक !!! व धाए एनी मरजी प्रमाणे बोलेछे. हुं एकलो परदेशी माटे एनाथी पहो ची शकीश नहीं. एम विचारी ते अबोलो थइ रहे. एवी डुर्बुद्धि करी ने पोतें साचो थाय, अने आगला साचाने जूठो ठेरावे; अने पारको माल हजम करी जाय. ए थापण उंलवी राखवानुं महा पाप छे. आ लोकमां कदापि पापना उदयथी कोइ दिवस वेचतां, के कोइ ठेकाणे मूकतां जाहेर थाय तो राजा तरफथी महोटो दंरु पडे, लोको मां अपयश थाय, अप्रतीति वधे, लाख जाय, अने परजवे, कूडां कलंक चढे, डुर्गतिमां पडे, डारिद्रजाव कदी पण न मटे. जिनेश्वर जाषित धर्म पण उदय न आवे. ए माटे व्रती श्रावक होय, ते पर नी थापण अथवा हरकोइ अनामत वस्तु कोइ मूकी जाय, ते सर्वथा उंलवे नहीं. शास्त्रमां तो कोइनी अनामत चीज राखवीज नहिं.एवी आज्ञाछे. तेम छतां कदापि मूलजांगे दाक्षिण संबंधी जोगजोगें रा खवी पडे तो जाइबंधनी के कोइ बीजानी साक्षी लखावीने तथा तोल, मुल्य करावीने राखवी. कदापि घणा दिवस ते चीज आपणे घेर रहे, तो तेने उंत्री बधती न कहेवाय. अथवा आपणी चेतना पण बगडे नहीं. कदाचित् पोताना मरण पछी पुत्रादिकनी पण बुद्धि बगडे नहीं. ते माटे खखत साक्षी करावीने खत करीने राखे; के तेथी तेउने पाछी आपवानी जरूर पडे, अने मनमां बीक रहे. धणी मागे त्यारें खुशी थइने थापण मूकेली चीज हो य ते पाछी आपे. एमां सहु वातनांछिद्रो जाणी लेवां. कपट वृत्ति, विश्वासघात, ए सहु व्रतीश्रावकें थापण मोसो न करवो.

५ पांचमो मृषवाद जूठी साक्षी. ए व्रती श्रावक होय, ते क दी न पूरे. तेनो विस्तार लखीएं छेयें. कूडी साक्षी तेने कहीएं के,

बे जणा कजीओ करवा लाग्या, तेमां कोण साचो ने कोण जूठो
तथा कोनो वांक छे ! हवे जे साचो छे ने जेनो वांक नथी, तेना
नगरवासी लोकोनो द्वेष छे. ते पुरुषोयें पोताना दिलमां धारी
स्युं होय के क्यारें पण अमे अवसर पामीने एने उपर जबर
स्ती करशुं. ए वातनो अवसर जोइने साचाने फसाववानुं व
धांधे, ते एम के द्वेषपोषणने माटे पोते कजीयानी अंदर तर
थाय अने मातबर थइ लोकोने कहे के, ए वातथी हुं माहि
गार लुं. एनी साक्षी हुं पूरीश. कदापि राजद्वारमां कोइ का
पडशे, अने मारी साक्षीनी जरूर हशे तो त्यां पण हुं साक्षी पूरीश
एनी खातरदारी साक्षी सर्वरीतेंथी मारी पासेथी लेजो. एवी रीत
जूठानो पक्ष करे. उपर प्रमाणेनी वात करीने जूठी साक्षी पूरे.
ए कूडी साक्षीनुं महापाप छे. आ जवमां पण जूठो पडे तो अ
थरू जाय, राजदरबारमां खबर पडे के, आ जूठो माणस छे
देहेरमां जेनी तेनी सायें फगडो कर्या करे छे. एवुं जाण थत
नी सायें धन धान्य सर्व राजा लूंटी जाय. जूठी साक्षीवालो मा
खाय. अने परजवमां तो एवां पापें करी ए दुःखथी पण वसी बहु
दुःख जोगवे, दुर्गतिनो साथी थाय, पगले पगले अणचिंतवी आप
दा आवीने प्राप्त थाय, ए माटे श्रावकने सर्वथा जूठी साक्षी कोइन
पूरवी योग्य नथी. ए पांच तो महोटां जूठ छे. जे श्रावक नाम धरावे
तेणे ए पांचे जूठ त्याग करवां. तथा बीजुं पण जे बोलवाथी राज
जय टाले, दंड जरवो पडे. जीज, कान, नाक, हाथ आदि
अंग जे बोलवाथी छेदाय. एवी जाषा बोलवी नहीं. एवी रीते
बीजुं मृषावाद विरमण व्रत लीधुं छे.एमां आजीविका निमित्तें पोत
ना परिणामनी कचाइथी कोइ रीतें जूठुं बोलवुं पडे, तो तेनो अ
गार छे. अहींयां क्रोध, मान, माया, लोज, राग, द्वेष, रति, अरति,
क्रीडा, लज्जा, विकथा, जय, हास्य इत्यादिक जूठुं, बोलवानां का

रणो छे. अहीं हास्यादि वात विनोदमां तथा कोइ निमित्तें क षायादिकने परिणम्यो, आत्मा मूढ चेतनामां रह्यो थको कांइ आलपंपाल वोलाय. तेनी जयणा, तथा कोइ चाडीयो प्रमुख दु ष्ट मनुष्य, निष्कारण बहु दुःख देतो होय, कोइ रीतें दुःख देतो रहे नहीं, त्यारें ते सापराधीने शिक्षा देवराववानेसारु कांइ जू ठुं वतुं वोलवुं पडे; तेनो आगार छे. एटले संकल्प करीने विना प्रयोजन निरपराधें हास्यादि कारण विना निरपेक्ष जूठुं न वोलुं. वली पांच महोटां जूठमां पण स्वसंबंधी कन्यालीक, गवालीक, भू म्यालीकमां न चालतां जूठं वोलवुं पडे, तेनो आगार छे. एना पांच अतिचार छे. ते जाणवाने लखेछे.

१ प्रथम सहसात्कार अतिचार छे. ते एके, कोइने एका एक अण विचार्युं कहे, अमुक कलंक चढावे. जेमके, तुं चोर छे, व्य भिचारी छे, जूठो छे, इत्यादि विना तपास कर्ये कहे, ते पहेलो अतिचार छे. श्रावकने तो साक्षात् कांइ विरुद्धवात जोइ होय तो पण प्राणांत सुधी ते जाहेर न करवी. वली न कहे तो जूठुं वोलवानो दोष लागे, त्यारें विचारे जे ए वात कहेवाथी महोटुं पाप लागशे. एम विरुद्ध वातने जाहेर करतां कांइ दोषादिक उपजे, अने तेथी श्रावकने अतिचार लागे. माटे ए विरुद्ध वात छे. तेथी पोतानी मेलें जाहेरमां आवशे पण पोतें कहे नहीं.

२ वीजो रहस्यनापण अतिचार. ते एके, कोइ वे जण पोताना घरनी सुख दुःखनी वात करेछे, ते जोइने तेमने कहे के, खब रदार रहेजो! तमे वन्ने मलीने राजद्वार विरुद्धनी वात करोछो पण तमे महोटो तमासो देखशो, आगल विचार करवो पडशे, माटें आ ज पछी एवी वात न करशो. एवुं कहीने ते वन्नेने दुःख उपजावे. वीजुं पण स्त्रीजननी, मित्रनी, पोताना मेलापीनी तथा वीजा पण कोइनी छानी वात अथवा कांइ एवनी वात, आपणे जाणीने ते वात

॥ अथ ॥

॥ तृतीयस्थूलअदत्तादानविरमणव्रत प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

सद्गुरु पदपंकज नमी, कहिशुं विवरण शुरू ;
तृतीय अदत्तादान व्रत, न कहुं शास्त्र विरुद्ध ॥ १ ॥

हवे स्थूल अदत्तादानविरमण लखीएं छैयें.प्रथमस्थूल जे महोटी चोरी जे संकल्प करीने देवाल फोडी खातर पाडे, अथवा मार्गा दिकें मुसाफरना द्रव्यने लूटवानी इछा थइ. ते एम के, आ ए काकी छे. बीजो कोइ एनी सायें छे नहीं. त्यारें जाणी जोइने को इ नवो प्रपंच करी,एनुं द्रव्य होय ते लइ लेइएं अथवा बलात्का रें करीने पारकी चीज लेवी तथा नजर चूकावीने कोइनी चीज उ ठावी लेवी तथा आपणे घेर कोइ थनामत चीज मूकी गयो हो य ने ते ज्यारें पाछी मागे त्यारें नामुकर जवुं तथा खरुं जवाही र प्रमुख लइने घरमां मूकवुं. अने पाछुं ते मागे त्यारें खोटुं आप वुं, तथा बीजा कोइएं हीरा मोती वेचवाने आप्यां होय, तेमांथी नंगनो फेरफार करी सारुं नंग होय,ते पोतें लइ लिये, अने ऊंठी कि म्मतनुं नंग होय,ते तेमां मेलवी आपे.ए सहु अदत्तादाननो दोष क हीएं. जे कारणे क्यारें पण तेनी जाण पडे,प्रगट थाय,त्यारें राज दंम देवो पडे, अपयश थाय, अप्रतीति उपजे, ए माटे स्थूलअद त्तादानने जे त्यागे, ते अदत्तविरमणव्रत छे. ते अदत्तव्रतना वे भे दछे. ते कहेछे. एक द्रव्यअदत्तव्रत, बीजुं भावअदत्तव्रत.

१ द्रव्यअदत्तविरमण एटले पारकी चीज पूर्वोक्त प्रकारें गएली पडेली,विसरी गएली लीये नहीं. ते द्रव्यअदत्तविरमणव्रत जाणवुं.

२ तथा जे पर पुजलद्रव्य,तेनी चीज वर्ण गंध रसादिक रचना रूप त्रेवीशविषय तथा आठे कर्मनी वर्गणा ते पण पराइ चीज

ठे. ते वस्तुगतें जीवने अग्राह्य ठे. एनी जे वांछा उदयिक ना वमां धसण, ते नावअदत्त ग्रहण जाणवुं. तेने श्रीजिनागमोक्त तत्व सांजलीने, पुजलानंदी पणुं मटाडे, शुद्ध उपयोगें दिलथी उदय अव्यापक रहे. निर्जराना बहुल परिणाम ते नावअदत्तवि रमणव्रत कहीयें. जेटली जेटली कर्म प्रकृति ठे तेनो बंध मव्यो. ए टलुं नावअदत्तविरमणव्रत कहीयें. त्यां सामान्य अदत्तना चार नें दठे; ते कहेठे. १ प्रथम स्वामिअदत्त, २ बीजो जीवअदत्त, ३ त्री जो तीर्थंकरअदत्त, अने ४ चोथो गुरुअदत्त.

१ तेमां प्रथम कोइनी चीज आप्या विना लिये, ते स्वामिअदत्त.

२ बीजुं जे सचित्त बीज फलादि गुछा प्रमुख तोडे, अथवा ठे दे, नेदे, ते जीवअदत्त कहीएं. जे कारणे फलना जीवोएं एवी कांइ आज्ञा दीधी नथी के; अमोने तमे ठेदन नेदन करो. ते हे तुएं ए जीवअदत्तनो बीजो नेद जाणवो.

३ त्रीजो श्रीतीर्थंकर देवें जे चीजनो निषेध कह्योठे. ते चीज ने ग्रहण करे. जेम के, साधुने आधाकर्मी आहार निषेध कह्यो ठे. श्रावकने अजक्ष्य वस्तु निषेध कही ठे; तेने आचरे त्यारें ते तीर्थंकर अदत्त केहेवाय. ए त्रीजो नेद तीर्थंकरअदत्तनो जाणवो.

४ चोथो गुरुअदत्त. ते एके, कोइ साधु, आगमोक्त शुद्ध व्य वहारपूर्वक निर्दूषण आहार लावीने पठी तेने गुरुनी आज्ञा वि ना खाय, ते गुरुअदत्त कहिएं.

ए चारे अदत्त, संपूर्ण रीतें तो साधुथी तज्या जाय, अने गृह स्थथी तो कांइ अंशें तज्या जाय. अहींयां श्रावकने चारे अदत्त मां स्वामिअदत्तना त्यागनी मुख्यता ठे. ए माटे पराइ चीज पू र्वोक्त उपाय करीने न लेउं. जे चीज लेवाथी चोर नाम ठरे, रा जदंन उपजे, एव लागे, माटे एवी चीज न लेउं पण सूक्ष्म तृ ण काष्ठ प्रमुख, जेनी कोइ बहु मनाइ न करे, ते चीज लेउं तें

नी जयणाछे. कोइनी चीज पडेली पामुं तो ज्यां सुधी परिण
टके, त्यां सुधी लेउं नहीं. कदापि बहु मूल्यवान् चीज जोइने
णाम शिथिल थाय, त्यारें ते चीज लेउं. पछी लेइने केटला
दिवस, पोता पासें राखुं. एटलामां जो ते चीजनो धणी छतो
य, तो तेने आपुं अने धणी छतो न थाय, तो धर्मस्थानकम
था धर्मना काममां खरचुं. एम पण परिणाम न रहे, तो ते
थी अर्ध नाग धर्म स्थानकमां खरचुं, अने अर्ध हुं पोतें राखु
वली पोतानी जमीन खोदतां द्रव्यनो नंडार निकल्यो, तो
लेवानो आगार छे. एमांथी पण अर्ध अथवा चोथो हिस्सो
करुं. पछी पण जेवी धारणा ?

तथा पारकी जमीनमांथी द्रव्य निकले, त्यारें पण ज्यां सु
परिणाम टके, त्यां सुधी ते द्रव्य लेउं नहीं. अने परिणाम
थिल होय तो, अर्धुं हुं राखुं ने अर्धुं धर्ममां खरचुं.

तथा कोइ वारस विनानो माणस कोइ चीज अनामत मू
गयो होय, पछी ते देशांतर गयो त्यां मरण पाम्यो त्यारें तेनी चं
पंचमां, जला अने सारा रुचिवाला मनुष्य आगल जाहेर करीने
पंच कहे, ते करुं; कदापि देश कालनी विषमताथी जाहेर करतां
लटुं लफरुं लागे. ते एम के, दुष्टराजादिक होय तो ते लोजना
स्या थका कहे के तारे घेर, मरनारें घणुं द्रव्य मूक्युंछे ? तुंतो
तानी शाहुकारी जाहेर करवाने थोडुं देखाडे छे. एवी उपाधि जा
ते माटे कोइने न कहुं तो पण ते द्रव्य, धर्मस्थानकें खरचुं. ते ख
तां ते धन आपणुं पोतानुं केहेवुं पडे, तेनी जयणा.

तथा घरचोरी एटले घरमांनी सर्व चीजना मालिक तो पोता
पिताछे, अथवा माताछे. एमने पुछया विना वस्त्र द्रव्यादिक ले
तेनी जयणाछे. वली जेनी सायें महोबत होय, जे संबंधी हो
जेने घेर जवा आववानो,खावा खवराववानो व्यवहार होय,

ने घेर गये थके कशुं पुछया विना फल पान प्रमुख लेवुं; तेनो आगारछे. परंतु तेनो जीव कचवातो होय तो न लेवुं.

तथा कोइनी चाकरी करतां व्यापारमां कांइ कसुर करीने द्रव्य मेलववानी जयणा. ए रीतें त्रीजुं व्रत पाले, ते व्यवहार शुद्ध अदत्तादान विरमणव्रत जाणवुं. अने निश्चयथी तो जेटलो आत्मानो अबंधक परिणाम थयो, गुणस्थाननी वृद्धि थइ, अने बंधविछेद थयो, ते निश्चय अदत्तविरमणव्रत कहीएं. एना पांच अति चार छे, ते कहे छे.

१ प्रथम "तेनाहड" अतिचार कहेछे. स्तेनाहृत् त्यां स्तेन एटले चोर, तेणे आहृत् एटले हरण करी लीधेली एवी जे चोरीने कांइ चीज,तेने स्तेनाहृत् कहियें. एटले चोरें चोरेली चीजने खरीद करवी. कारण के, चोरीनी चीज सोंघी मले, ते जोइ आत्मा लोजमां पड्यो थको ते वखतें विचारे के मोरे तो पारकी चीज हाथमां लेवी नहीं. पण आतो चोर पोतें चोरी लाव्यो छे. ते लेवामां मने शो दोषछे ? एवी मूढ विचारणाथी ले, पण एम न विचारे के, आ अ शुद्ध द्रव्यें करीने मारी चेतना बगडशे. वली कदाचित् कोइ वख तें जाहेरमां आवे. त्यारें ते पकडाय. त्यारें राजवाला पूछे के, शेहे रमां जेमनी चीज गइ होय ते सर्व लोक, चबुतरें आवी बतावो.ते वखतें चोरने तस्दी आपे. त्यारें ते चोर जेनुं तेनुं नाम तथा पत्तो बतावे के, अमुक जग्याएं चीज राखीछे, किंवा अमुक जग्याएं वेचीछे. एम करवाथी सर्व जग्याएंथी चीज जाहेरमां आवी. शाहुकारोएं पण सोंघी जोइने लीधी हती, ते पण सहु पकडवामां आव्या. त्यारें तेमने पण उलटो दंड पडे, ने वली जे चीज चोरपा सेंथी लीधी हती, ते पण जाय, पोतें खराब थाय, लोको वात करे के आ लोक, चोरोने पैशा प्रथम देछे ने चोरी करावेछे. एवी वात जला गृहस्थने सांजलवी पडे. माटे ए धंधो केम करीएं ? वली लो

किकमां अपयश वधे, ते तो आ जवनुं दुःख, अने परजवनुं दुःख जोइएं तो चोरीनो माल संगरनाराउं दुर्गतिने जोगववा वालाठे ज. परंतु अहीं कदापि अजाण पणे एटले चोरीनो माल ठे. एम न जाण्युं होय ने लीधो होय, तो तेनो आगार. परीक्षा विना बहु मूली वस्तु थोडामां मले, तो तेनो आगार ठे. तथा परंपरायें आवी तेनो आगार. पण एने जूठी साची कल्पना दे खाडीने तेनी पासेंथी लेवी. ए पेहेलो अतिचार जाणवो.

२ बीजो तस्कर प्रयोग अतिचार. एटले जे चोरने चोरी करवानी प्रेरणा करे के, तमे आज काल नकामां बेशी रह्याठो पण उद्यम कस्या विना शुं खाशो? आ पेटने तो रोज जरवुं जोइएं? ते माटे घरमां बेठे तो कांइ नहीं थशे. अमे तमारा मोहोबतीया ठेएं. ते माटे कहीए ठेएं. बीजो पण अमुक, फलाणे ठेकाणे गयो हतो, ते थोडा दिवसमां चार पैशा सारी रीतें लाव्यो; माटे तमे पण रोजगार सर थाउं. तेथी माथा परनुं करज पण उतरशे. नहीं तो आगल तमने फरी करजें कोण रूपैया देशे? दीधा लीधाथी सहुनुं काम चालेठे, माटे जाइ! धंधो करो. अमारुं पण तमारी उपर लेणुं ठे; ते पण आपो. कारण के बहु दिवस थया ठे. नहीं तो पांच सात बीजा पण आपीयें, परंतु शुं करीएं? जे तमने आवा हाले देखीए ठेएं. तेथी बहुज खीज आवेठे. आवा वलदार ठो, पण सर्वदा कमाया विना एमज निजाव केम थशे? ते माटे व्यापार रोजगारमां तमने नफो न होय तो, कोइनी नोकरी करो. हथीयार लइ शीपाइगीरी करो. तमारी पासें हथीयार हाजर न होय तो जेटला जोइयें तेटला अमारी पासेंथी लइ जाउं, पण रोजगारसर थाउं. एवी एवी खोटी प्रेरणा करे. ते प्रयोग कहीएं. चोरने प्रेरणा करे, संबल आपे, लोढानां शस्त्रादिक अधिकरण आपे. तेने तत्त्वदृष्टिएं देखतां चोर तुल्य कहीएं.

जे कारणे नीतिशास्त्रादिकमां चोरना सात प्रकार कह्या छे. ते एके, प्रथम चोर जे आप चोरी करे १, बीजो चोरनी पासें रहे २. त्रीजो चोरनी सार्थे आलोच करे ३, चोथो चोरना भेदमां माहितगार थाय ४, पांचमो चोर सार्थे व्यापार सहीवारो राखे ५. छठो चोरने अन्नपाणी आपे ६, सातमो चोरने घरमां राखे ७, ए सातेने चोर कहेवा. हवे अहीयां अदत्तनो त्यागी होय, ते विचारे के मारे पोताने तो पराइ चीज लेवानुं पच्चखाण छे, पण बीजो कोइ लइ आवे, तो ते चीज लेवामां मने शो दोष छे? ए माटे प्रयोगअतिचारव्रत पण श्रावक न धरे. कारण के ते सापेक्षछे. ए माटे ए प्रयोगअतिचार बीजो जाणवो. २

३ त्रीजो "तप्पडिरूव" अतिचार. ते एके, कोइ सारी वस्तुमां तेना सरखी मलती बीजी हलकी चीज मेलवीने वेचे, ते तत्प्रतिरूप कहियें. जेम केशरमां केशरना जेवो तार, अने एवाज रंगने मलतुं एवुं कोइ द्रव्य लावीने कत्रिम करी वेचे. वली मठा प्रमुखने मथीने घृतमां मेलवी वेचे. एटले जे चीजछे तेना सरखी बीजी चीज बनावीने मूलद्रव्य शुद्ध होय तेमां मेलवीने वेचे तथा बनावटनी कस्तुरी करीने वेचे. सुंदर प्रमुखनो बांधो करी तेने हींगमां मेलवीने वेचे. तथा जे चवादि सुगंधिक द्रव्य थायछे, ते कर्पूरसार्थे मेलवीने वेचे. अफीणनो जोडो करी वेचे, तथा जूनां वस्त्रने रंगावीने नवाने ठेकाणे नवाने नावे वेचे. रूने पाणीमां नीजवी वजनदार करीने वेचे. सूतली प्रमुखनी पिंडिमां अंदर मट्टोटा गाजा घालीने उपरथी सुतलीने नीजवी करी लपेटीने वेचे. लोकमां सारी जोइने वधारे मूल्य आवे, तो प पण विचारे नहीं के, हुं खोटो व्यापार करुं छुं. पाणीमां दुध ए करुं करीने दुधना नावे वेचे. गहुं प्रमुख दाणानां भुसो. कांकरी, अने चूनो प्रमुख मेलवीने वेचे. ए सहु प्रतिरूप कहीएं. अहीं

यां आपणी चीज व्यापारनी होय, तेने परिकर्म करी वेचवानो आगारछे. ए त्रीजो अतिचार जाणवो.

४ चोथो विरुद्धगमन अतिचार. लखीए छेएं. ते एके, आ पणा गामना राजाएं फरमाव्युं के, फलाणे गाम जशो नहीं. ते गामनी चीज लेवी नहीं. तेमनी सायें व्यापार,खातुं,लेणुं,देणुं,कांइ पण करवुं नहीं. एवो सरकारनो हुकमछे. केमके, सरकारना कोइ मुद्दाइ गुनेगारछे, ते त्यां जइ कोइनुं शरण लइने रह्याछे. माटे त्यां थी तेमने कोइ दिवस पकडी मंगाववानोछे.त्यां सुधी ते गामवाला कोइ सरकारनी चीज वेचवा आवे, ते लेशो नहीं. ए प्रमाणे राजा एं हुकम कर्योछे. हवे आ माणस तो लोजने वश पड्यो, ते गाम मां जइने सोंघी वस्तु जाणीने छानो मानोजइ त्यांथी लइ आवे अने पोताना गाममां छानी मानी लावी वेचे. एवामां कोइ चुग लीखोर ते वात जाणे अने राजाने जाहेर करे के अमुक माणस, आपणा गाममां परराज्यनी चीज, त्यहांथी लावेछे. ने अहीं वेचे छे. अथवा राजसंबंधी कांइ छानी वात विगत होय, ते करे. त्यारें ते कष्टमां पडे. दाणचोरी पण एमां अवी गइ. ए माटे एविरुद्धग मनअतिचार थाय. अहीयां दाणचोरी तो सर्वथा तजवी. कदा पि लोजने वश पड्यो थको न रही शके, तो वर्ष प्रत्यें प्रमाण करी राखे. तथा श्रावक होय, ते चोथा विरुद्धगमन व्रतनो आगार राखे.

५ पांचमो कूडां तोल तथा कूडां माप करण अतिचार कहेछे. ते एके, लेवानां तोल माप जूदां राखे. अने देवानां तोल माप पण जूदा राखे. एवी रीतें गज पण लेवानो जूदो राखे अने देवानो प ण जूदो राखे. कोइ देशमां अनाज जरवानुं पण मापछे त्यां पाली माणुं प्रमुख, लेवानुं जूडुं राखे अने देवानुं माप उंडुं, ते पण जूडुं राखे. वली त्राजवानी नामीमां अंतरकोण राखे. मापमां पण एवी दगलबाजी करे. जरती वखत पालीने रुगावीने आपे.

सेवानी वखतें माथा सुधी संपूर्ण दाणो करीने लिये. वली वस्त्र ले, त्यारें पण गज अथवा हाथ सरकावीने ले, तथा आपे. तेवारें अतिचार लागे. ए पांचे अतिचार, जे विरति श्रावक होय, ते जाणे, पण ते अतिचार लागेछे. एम जाणी आदरे नहीं.

अहीं आजीविकाने माटें वर्त्तमान लोक व्यवहारनी रीतिएं ठेवुं वधलुं देवा लेवानी मने जयणाछे. अजाण पणे कोइ खोटां तोल माप थइ जाय, तेनो अतिचार नहीं. विरति व्रतनीछे. ते प्र माणे पालीश. अधिक लोजने वश पडीने नहीं करीश. आ पांचे अतिचार, अदत्तादानविरमणव्रतना जाणवा.

इति श्रीद्वादशव्रतविवरणे पंमितश्री उद्योतसागरगणिना कृत तृतीयस्थूल अदत्तादानविरमणव्रतजाषा समाप्ता ॥ ३ ॥

॥ अथ ॥

॥ चतुर्थस्थूलब्रह्मचर्यव्रत प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

आयकर ॐकारकुं, मंगलरूप मनाय;
चोथे व्रतके जेद सब, जाषा करुं बनाय ॥ १ ॥

चोथुं ब्रह्मचर्यव्रत. एटले मैथुननो त्याग करवो. त्यां मैथुनत्या गना बे जेदछे. एक द्रव्यमैथुन त्याग, अने बीजो जावमैथुन त्याग.

१ द्रव्यमैथुन एटले परस्त्रीनो तथा परपुरुषनो परस्पर संगम जाणवो. त्यां पुरुषें परस्त्रीनो त्याग करवो. अने स्त्रीएं पण परपुरुष नो त्याग करवो. रतिक्रीडा तथा कामसेवन करे, ते द्रव्यमैथुन क हियें. तेने जे पुरुष. तथा स्त्री, त्याग करे. तेने द्रव्यब्रह्मचारी तथा व्यवहारब्रह्मचारी कहीएं.

२ बीजो जावमैथुनरूप. ते एके, चेतनरूप पुरुषने विषया जिलाष परपरणति रूप, तथा तृष्णा ममतारूप इत्यादि निश्चय

परस्त्रीछे तेनी साथें जे मलवुं, तेने रीझ मोज आपवी, तेनी साथें वांछित विलास करवो, ते जावमैथुन जाणवो. एने जिनवाणी ना उपदेशें तथा जे सद्गुरु हितशिक्षानो उपदेश करे. त्यारें पो तें परपुजलादिकने उंलखी, जातिहीन जाणी, आगामिक कालें एने महादुःखदायी जाणी, पूर्वे गतकालें अनेक मरणांत दुःख परंपरा एनाथी पाम्यो, ए माटे मने ए विजाति स्त्रीउं तजवानुं क छुंछे, माहारे तो मारी स्वजाति, परमजक्त, उत्तम, सुकुलीन शमता रूप सुंदरीनो संग करवो सारोछे. विजावपरणतिरूप परस्त्रीएं मारी सर्व विजूति खेंची लीधी. हवे सद्गुरुनी सहायताथी ए दु ष्ट परिणाम स्त्रीसाथें हुं लाग्यो छुं. तेने थोडे थोडे निग्रह करुं. स्य जवानो जाव आदरुं, के जे थकी महारी शमता सुंदरी, शुद्धस्वजा व घटरूप घरमां आवी रहे, तो घरनुं तेज वधे. एवी समजण पा मीने परपरणतिमांथी ममता छोडे. उदयें कर्म व्यापे नहीं. शु द्ध चेतनानो संगी थइ रहे. शुद्ध परिणामथी दूर न रहे. ते जाव मैथुनत्यागी कहीएं.

अहींयां द्रव्यमैथुन त्यागी तो षट् दर्शन मांहे मले पण जा वमैथुन त्यागीतो श्री जिनदर्शननेत्यांज श्री जिनवाणी सांज लतां ज्ञानजेद, जेना हृदयमां प्रवर्त्तायोछे, ते सहज उदास उ पायथी जावमैथुननो त्याग करे. ते बीजा दर्शनोमां न मले.

अहींयां स्थूल परस्त्रीगमनव्रत. ते एके परस्त्रीनो त्याग करवो. परपुरुषनी परणेली तथा पारकानी राखेली जे स्त्री होय, तेनी सायें अनाचार सेवन न करुं. एवो पचखाण करे, तेने परदार गमनविरमणव्रत कहीएं. बीजुं जे स्वदार केहेतां पोतानी स्त्री, ते नाथी संतोष धरुं. एवुं जे व्रत धरे, तेने स्वदारसंतोषव्रत कही एं. त्यां देवसंबंधी देवांगना, तथा तिर्यंच संबंधी स्त्रीजाति, त था मनुष्य संबंधी स्त्रीजाति, एनाथी मैथुनसेवा निषेध. एकेकी

विधिना त्याग करीने, एटले कायायें करी परस्त्री सायें सोइमां दो रो परोववो, ए न्यायें संयोग करवानो निषेध अने मने, तथा वचनें अने स्वप्नमां जोग थाय, तेनी जयणा. सहज स्पर्श करवानी जयणा. वर्त्तमान स्त्री टालिने वीजी स्त्रीसायें विवाह न करवो, तथा दिवसें ब्रह्मचर्य पालुं, न पलेतो प्रमाण राखुं, नववाड पालवानो खप क रुं. स्त्रीजनने पण एवी रीतें परपुरुषनो त्याग जाणवो. हवे ए व्र तना पांच अतिचारछे, ते लखीयें छेएं.

१ प्रथम अपरिग्रहीतागमनअतिचार. ते एके, नहीं परणेली स्त्री, जे कुमारी तथा विधवा स्त्री, तेने अपरिग्रहीता स्त्री कहीएं. जे कारणे कोइ एनो स्वामी केहेवातो नथी. ए कोइनी स्त्री केहे वाती नथी. तेने जोइ, कोइ मूढमति विषयाभिलाषी थइ. एडक न्यायथी विचारे के, में तो परस्त्रीनो त्याग कस्योछे अने आ तो को इनी स्त्री कहेवाती नथी माटे एनी सायें मेलाप करवाथी मने शुं दोष छे? एवुं विचारीने ते कुमारीनी सायें के विधवानी सायें जोग विलास करे. एज प्रमाणे व्रतधारी स्त्रीने पण परपुरुषनो त्यागछे. ते पण अपरिग्रहीत पुरुष कुंवारो होय अथवा जेनी स्त्री परलो क पहोंची होय तेनी सायें पूर्वोक्त न्याय मनमां धरीने संग क रे, तो ते स्त्रीने पण प्रथम अतिचारना दोष लागे.

२ वीजो इत्वरपरिग्रहीतागमन अतिचार. ते इत्वर केहेतां थोडो काल जाणवो. एटले मास, छमासनी मर्यादा करीने वे श्यादिकने खरची आपी पोतानी आस्वाव स्त्री करीने राखे. अ हींयां कोइ अज्ञान पणाथी एम विचारे के, मारे तो पर स्त्रीनो त्यागछे. पण आने तो में महारी करीने राखीछे, तो एमां मने शुं दूषण छे ? एम जाणी करीने अज्ञान पणे ते वेश्याने सेवे, तो तेने वीजो अतिचार लागे. एवी रीतें श्राविकाने पण वीजो अतिचार लागेछे. ते एम के, वे शोक्यो होय तेमां शोक्यनो वा

रो धणी पासे जवानो होय ते दिवसें जरतार ने पोतें सेवे, ने मनमां विचारे के, पोताना स्वामीने सेवतां शुं दूषणछे ? मारे तो परपुरुषनो त्याग छे. पण एम न विचारे के, आ दिवसें तो ए शोक्य नो जरतार छे. मारो तो आ दिवस धणी पासे जवानो वारो नथी. तेम छतां पण छल करीने स्वामीने सेवे, तो ते स्त्रीने बीजो अतिचार लागे.

३ त्रीजो अनंगक्रीडा अतिचार. एटले अनंग कहेता कंदर्प, तेने जाग्रत करवासारु आलिंगन, चुंबन, नख प्रमुख अथवा नेत्रना हाव, जाव, कटाक्षादिक हास्य प्रमुख उछामिस्करी विगेरे पर स्त्री सार्थे करे. दिलमां एम विचारे के मेंतो सोइमां दोरो परोववा नो जोग त्याग कर्यो छे. परस्पर एक शय्यामां सुइने जोग कर वानो मारे त्यागछे बीजानुं तो में व्रत लीधुं नथी पण ते, कामांध थवाथी एम न विचारे के, चेतना तो वशेमां वगडेछे एनाथी पण व्रत वेहेलुंज जांगेछे, मन चलेछे. तथा पोतानी स्त्री सार्थे चोराशी आसने करी काम जाग्रत करे. जोगविलास करे. तिथि प्रमाणे कामनिवासनी जग्यायें हाथनो स्पर्श करे. अंगमर्दनादि करीने काम प्रगट करे. अथवा परम अजिलाष थये थके, पोतानी स्त्री हाजर न होय तो न चालते कार्य हस्तकर्म करे. स्त्री पण कामव्याकुल थये थके पोताना अंगुगथी सुखवासीया प्रमुख करे, अथवा स्त्री स्त्री मलीने, अधिकरणथी गुह्य स्थाने संचारण करे. अनें पोतानी इछा संतुष्ट करे, त्यारें पण तेने अतिचार ला गे. ते माटें श्रावकने ज्यां त्यां कामसंज्ञा घटाडवानी चाहना क रवी जोइएं. जेम लोजी माणस पोताना व्यापार धंधामां मग्न हो य एटलामां जूख लागे, तोपण सह्या करे. धंधाना वचमां जूख ने गणकारे नहीं. एम करतां पण ज्यारें जूखथी रहुं न जाय, त्यारें त्यांथी उठी करीने उतावलें उतावलें रसोइनी जग्यामां जे रसोइ हाजर होय, ते खाइ लिये, पण सुस्वादनीके कुस्वादनी कांइ पण

तजवीज न करे, फरी पण त्यांथी उठीने पोताना धंधामां वलगे. तेवी रीतें समकेती, देशव्रत धारी पुरुष, परलोकना सापेक्ष धंधामां मग्न रहेछे. एवामां कामसंज्ञा उदय थइ, त्यारें अंतरजाव लाज म र्यादा डुगंछादिकने अनुसरतां ते कामसंज्ञाने गणतीमां न गणे. एम करतां अतिवेदोदय थाय, त्यारें व्याकुल थाय तो तत्काल उ तावलथी कंदर्प्परोग निवारण करीने, फरी पोताना स्वकार्यमां प्रव र्ते तो ते व्रती, कामसंज्ञा वधारवानी इच्छा शा माटें राखे? शुद्ध श्रद्धावंत श्रावक तो मैथुनसेवानी जग्याने जेवु जांजरुखानुं होय, तेवुं करी जाणे. अने कहे के ए मलीन जग्याछे, तेनी इच्छा ते वडि नीतिनी वेलाशिवाय बीजे वखतें न रहे. तेवी रीतें मैथुन पण नि षेध छे. दोषनुं स्थानक छे. आ प्रमाणे त्रीजो अतिचार जाणवो.

४ चोथो परविवाहकरण अतिचार. ते ए के, जे पोताना संताननो अथवा परजातिनो अथवा अपणी नात जातमां पोता नुं माहापण जणाववाने अर्थे आग्रह थइने विवाह करी आपे. कोइ वस्तु वानुं अथवा डव्यादिकनी सहायता करे, अथवा प्रेरणा दिक करीने कोइनी पासेंथी अपावे. तेणे करी ते विषयी प्राणी ने स्त्रीनो लाज थयो त्यारें ते पुरुषतो तेनुं सारुं कहे. बीजाउने कहे के फलाणाने त्यां फलाणे मारुं घर वसाव्युं. जो एवा हता, तो आ विवाह थयो. नहीं तो मारा शा हाल थात? एवी रीतनी अ र्थीजनना मोढाथी पोतानी प्रशंसा सांजलीने बहुज खुशी थइ जाय. तेने जोइने बीजा पण जेउ विवाहना अर्थी होय, तेउ आवीने ते नी खुशामद करे, स्तुति करे, ने कहेके, आप साहेब जेवा परोप कारी थोडाज नजरे आवेछे? एवां वखाणनां वचन सांजलीने तेने कहेके, कांइ काम काज होय, तो मने कहेजो. सज्जन सम्मत करजो. अमारो तमारो एक वास्तो छे. एवी रीतें विवाहादिकनो सज्जनसंबंध. संसारमां जगाए जग्याएं करावबो. ए अनर्थनुं बी

ज वाववा जेवुं छे. तेवुं करवाथी व्रत शुद्ध न रहे. अने काम अ धिकरण वधारतां संसार वधे. श्रावकने तो पोताना घरमां पण कोइ एवुं कार्य करवुं होय, तो ते बीजाने चलावीने पोतें न्यारो ने न्यारो रहे. तो जे व्रती थइने परायो विवाह जोडावे, तेने चोथो अतिचार लागे. अहींयां पोताना घरसंबंधी तथा जेनाथी बूटा य एम नथी, एवा संबंधीनो विवाह करवानी जयणा, ते पण प रिमाण राखी लेवुं. एमज स्त्री पण पारका विवाहमां मोड प्रमुख बांधे, ने आगल थइने कुलधर्म वजावे. त्यारें अतिचार दोष लागे.

५ पांचमो तीव्रानुरागअतिचार. ते एके जे कोइ, स्त्रीउपर ती व्र अभिलाष धरे. पारकी स्त्रीने जोइने मनमां बहुज चाहना करे. ते स्त्री विना क्षणमात्र पण रही शके नहीं. हरतां, फरतां, जीव, तेनामांज वलग्यो रहे. तथा देहमां काम वधारवाने तथा संजोग सामर्थ्य करवाने माटे अफीण, माजम, जांग, अने बीजी पण धातु हरताल, पारा प्रमुख पट्टी, वंधेजनी गोली शोधे. इत्यादि तीव्रकाम रागथी करे; त्यारें ते पांचमो अतिचार लागे. अने स्त्री पण काम वृ द्धि करवानी अनेक योजना करे. जेम के योनिसंकोचन ओषध, मांयां फलक, शीश, त्रिफलां, लोदर इत्यादिक अंगमां गोली करीने संचरावे अत्यंत उद्भट वेष जोवे. बहु हावजावादिक विषय लालसा करे, त्यारें तेने पांचमो अतिचार लागे. ए पांचे अतिचार जाणुं, पण आदरुं नहीं. अहीं स्वदारसंतोषव्रत वालाने छेवटना त्रण अतिचार छे. अने आग लना बे अतिचार ते तेने अनाचार छे. तथा परदारविरमणव्रतवाला ने तो ए पांचे अतिचार छे. स्त्रीने पण एज प्रमाणे अतिचार लागे.

॥ इति श्रीद्वादशव्रतविवरणे चतुर्थ स्थूलब्रह्मचर्यव्रत पंडित श्री ज्योतसागरगणिना कृतजाषा संपूर्ण ॥ ४ ॥

॥ अथ ॥

॥ पंचमस्थूल परिग्रहपरिमाणव्रत प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

सुमति दइ श्रीशारदा, ताके पद पणमेव ;
पंचम परिग्रह व्रत तणी, भाषा करुं शुभेव ॥ १ ॥

हवे पंचम स्थूलपरिग्रह परिमाणव्रत, विगतवार सहित करीने लखीएं छैएं. परिग्रह एटले जे समस्त पणे बीजां द्रव्य नाना प्रकारनां ग्रहण करवां, ते परिग्रह जाणवो. तेना बे भेदछे. एक बाह्यद्रव्य परिग्रह अधिकरणरूप. ते नवविध परिग्रह छे. बीजो भाव परिग्रह. ते एके, चौद अभ्यंतर ग्रंथिरूप जे परभावनुं ग्रहण, समस्त आत्मप्रदेशथी सकषाय पणे बंध, ते भावपरिग्रह जाणवो. शास्त्रमां मूर्छा मुख्यवृत्ति तेने भाव परिग्रह केहेछे.तेमां चौद ग्रंथिनां नाम. ते कहीयें छयें. १ हास्य, २ रति, ३ अरति, ४ भय, ५ शोक, ६ दुगंछा, ७ क्रोध, ८ मान, ९ माया, १० लोभ, ११ स्त्रीवेद, १२ पुरुषवेद, १३ नपुंसकवेद, १४ मिथ्यात्व, ए प्रमाणे चौद अभ्यंतर ग्रंथिछे.

अहींयां संसारी जीवने केवल अविरतिना बलथी इछा आकाश समान अनंत अपरिमितछे. ए अविरतिना उदयथी इछा, अने इछाथी कर्म बंधमां पड्यो थको जीव, चारे गतिमां भटकेछे. एमां कोइ अविराधक जीव, पुण्य प्रकृतिना उदयथी मनुष्य भवादिक सर्व सामग्री जोग पाम्यो, अने सद्गुरुनी संगति पाम्यो. जेथी करी श्रीजिनवाणी सांभली त्यारें चेतना जाग्रत थइ, चेतना सुधरी. त्यारें ते जीव, विचार करे के अहो! हुं समस्त परभावथी न्यारो, अबंधी, अछेद्य, अभेद्य, अदाह्यधर्मी एवो छतो इछावश पड्यो. समस्त छेदन, भेदन, परिभ्रमणादि दुःखनो भोगी, परधर्मी थयो; तो ह

वे हुंसमस्त परजावनुं मूल जे इछा, तेने दूर करुं, एवी चेतना थइ त्यारें समस्त परजाव त्यागरूप चारित्र आदरे अने जेने बहुज रसिक अविरतिपणाना बलथी समस्त परिग्रह मूर्छा एका एक बूटे नहीं. तथा दोषथी पण मरे, त्यारें ते लघुमार्ग जे देशविरति पणुं ते आदरे. इछा परिमाण व्रत धरे. ते इछा परिमाण व्रत नव प्रकारेछे.

१ तेमां प्रथम धनइछापरिमाण. ते धन, चार प्रकारनुं जाणवुं. तेमां प्रथम गणिम धन कहीयें. ते एके जे वस्तु नंग गणीने वेचाय. ए श्रीफल प्रमुख जाणवां. २ बीजुं धरिम धन. ते ए के जे वस्तु, तोलथी वेचाय. ए गोल, साकर, करियाणा प्रमुख. ३ त्रीजुं मेयधन. ते एके जे मापथी वेचाय. जेम दूध घृतादिक. ४ चोथुं परिछेद्य धन. ते एके, जे परिक्षायें वेचाय जेम सोनुं, रूपुं, जवाहीर अने वस्त्रादिक, नाणांप्रमुख परीक्षायें वेचायछे. ए चारे धन कहीयें. तेनुं जे परिमाण करवुं, ते धन परिमाण व्रत जाणवुं.

२ बीजुं धान्य परिग्रह, ते चोवीश जातिनुंछे, ते लखीएं छैएं, १ शालि, २ गहुं, ३ जुवार, ४ बाजरी, ५ जव, ६ मग, ७ मठ, ८ अडद, ९ चूट, १० चोला, ११ मटर, जवनी सार्थे थायछे ते. १२ अरहड एटले तुवर, १३ किसारी, १४ कोद्रा, १५ कांग, १६ चणा, १७ वाल, १८ मेथी, १९ कलथी, २० मसूर, २१ तल, २२ मंढवो, २३ कुरी, २४ बंटी. ए चोवीश धान्यनी जाति व्यवहारमां सदा खावा आवकछे ते लख्यां. बीजां पण १ धाणा, २ जींडी, ३ सुवा, ४ अजमो, ५ जीरुं, एपण धान्यनी जातिमां छे ते औषधादिकमां कोइ प्रकारें काम आवेछे, वली बीजां पण धान्य. जे वंटि, १ सामो, २ मणकी, ३ ब्रूट, ४ चेकरिया, आ धान्य मारवाड देशमां प्रसिद्ध छे. बीजुं पण चिरिया, मोल, अटकधान, गडधान, जे शाल्या विना उगे अने जे काल दुःकालमां खावा आवकछे. ए सर्व जातिनां अनाजनुं जे परिमाण, ते धान्यपरिमाणव्रत कहीएं.

३ त्रीजुं क्षेत्रपरिग्रह व्रत. क्षेत्र एटले खुल्ली भूमी, अथवा वा ववानी तथा बगीचो करवाती जग्या. तेना त्रण भेद छे. एक एवी जातिनी के, जेमां वरसादना पाणीथी धान्य नीपजे. एक जमीन एवीके, जेमां कुवाना पाणीथी धान्य नीपजे अने एक जमीन एवी के, जेमां वरसादना पाणीथी पण धान्य नीपजे. अने कुआना पाणीथी पण धान्य नीपजे. तेनुं परिमाण ते क्षेत्र परिमाण व्रत.

४ चौथुं वास्तुपरिमाणव्रत. एटले जे घर, हवेली. डुकान प्रमुख. तेना त्रण भेदछे. तेमां ए खातवास्तुक ते भोयरां प्रमुख. बीजो उच्छ्रित वास्तुक ते ए के भोयरुं, तहखानुं. ए विना उंची एक माळनी, बे माळनी, त्रण माळनी. एम यावत् सात माळनी हवेली जाणवी. एवुं जे परिमाण राखे, ते त्रीजो भेद खातोच्छ्रित वास्तुक. ते ए के. भोयरां, तहखाना. कूवा, टांकां, ए सौ हवेलीनी अंदर होय, तेने खातोच्छ्रित कहिएं. तेनुं जे प्रमाण राखे, ते वास्तुकपरिमाणव्रत.

५ पांचमुं रूप्यपरिग्रहपरिमाण व्रत. ते ए के, शिक्का विना काचा रूपानो तोल, तेनुं परिमाण करी राखे, ते रूप्यपरिमाण व्रत.

६ छठुं सुवर्णपरिग्रह परिमाण व्रत. ते एके रूपानी जेम अघड, शीका विनाना सोनाना तोलनुं परिमाण करी राखे, ते सुवर्ण परिमाण व्रत.

७ सातमुं कुपदपरिग्रह परिमाणव्रत. ते ए के. कुपद केहेतां त्रांबु. पीतळ, रांग कांसुं सीसुं. जरत खोटुं, ए सौ धातुना वासणनो परिमाणनो तोल करीने राखे, ते कुपद परिमाण व्रत जाणवुं.

८ आठमुं डुपदपरिमाण व्रत. ते ए एके, मूल्य आपीने वेचातां लीधेलां, दास, दासी. ते डुपद कहिएं. पण चाकर गुमास्ता प्रमुख ए वर्गमां गणाय नहीं. एवुं जे परिमाण करी राखे, ते डुपदपरिमाण व्रत.

९ नवमुं चोपद परिग्रह परिमाण व्रत. ते ए के गाय, भेंस, घोडा, बळद, ऊंट. बकरी, गाडरी प्रमुख चोपगा जीव तेमने केटलां राखवां तेनी गणतीनुं परिमाण करी राखे. ते चोपद परिग्रह

परिमाणव्रत जाणवुं. हवे पोतानी इछा प्रमाणे केटलो परिग्रह राखवो, तेनो विवरो लखीयें छैयें.

१ प्रथम धन परिमाणमां रूपुं,सोनुं, अण घड्युं, तथा घड्युं, आटलुं रहस्य त्यार पछी रोकडा रूपैया असरफी तथा जवाहीर प्रमुख आ टला अमुक हद पर्यंत राखवानी तो जयणा छे परंतु प्रमाण उप रांत पुण्ययोगथी वधे तो धर्म प्रीतिएं करीने धर्मस्थानकमां खरचुं.

२ धान्य प्रमाणमां एम के, वर्षमां आटला मण धान्य राख वानी जयणा. तेनो विवरो कहेछे. आटला मण घर आश्रित खर चमाटे तथा आटला मण वाहार बीजा कोइ प्रकारना खरच माटें वापरवामां आवे, तेनी जयणाछे. उपरांत नहीं. अने व्या पारनी विगत तो सातमां गुण व्रतमां लखवामा आवशे.

३ क्षेत्रपरिमाणमां आटला विघा जमीन राखवानी मने ज यणा. उपरांत नहीं. क्षेत्र, वाडी, बाग, बगीचा प्रमुखनी जमीन संबंधी पण सर्व एमांज आव्युं.

४ वास्तु परिमाणमां गडकीबंधघर अमुक हद सुधी राखवां. तेनी जयणा. तथा वृटी दुकान, तथा तबेला. आटला गोखानां, तथा आटली वखार. वली जो पुण्यना उदयथी लक्ष्मी वधे तो हाथी प्रमुख बांधवानां स्थल राखवानी जयणा. तथा परदेश सं बंधी व्यापारनी दुकानो अमुक हद सुधी राखवानी जयणा. तथा आटलां घर भाडे देवानी जयणा. आटला भाडे राखेला घरने सम रावरानी जयणा. तथा कुटुंबसंबंधिना घरोना आदेश उपदेशनी ज यणा. तथा पोताना संबंधी परदेश गया होय; तो तेना घर प्रमुख स मरावरानी जयणा. कोइ स्नेही गुमास्तो अथवा चाकर परदेशगयो होय. त्यारे तेना घरने समारवानी जयणा. तथा आजीविका हेतुयें कोइनी चाकरी करवी पडे,त्यारे ते धणी घर अथवा हवेली कराव वानुं काम सोंपे त्यारे ते काम करवा तथा कराववानो आगार छे.

५ रूप्य परिमाणमां रूपुं आटला शेर अथवा आटला मण पर्यं त राखवानी जयणा. अने जवाहिरने तो धनपरिमाणमां गणेलुंछे. ए सहु पोतानी निश्चाना घरमां घरनी अजनाशछे.

६ सुवर्ण परिमाणमां सोनुं. आटला तोल सुधी प्रमाण करी राखवुं. अने ए सोनुं, रूपुं. जवाहिर प्रमुखना व्यापार आश्रि तो सातमा व्रतमां लखीशुं.

७ कुपद परिमाणमां त्रांबु, पित्तल. रांग, लोढुं. कांसु तथा जर त. ए सर्व मलीने धातुनां वासण आटला शेर अथवा आटला मण पर्यंत राखवानी जयणा अथवा बीजा कोइ जातना घडेला घाट आटला तोल प्रमाणें राखवानी जयणा, उपरांत निषेधछे.

८ द्विपद परिमाणमां दास, दासी वेचातां लेवां, ते व्रत माफक रा खवानी जयणा. उपरांत राखवानो निषेधछे. तथा गुमास्ता के चाकर प्रमुख राखवानी तो जयणा.

९ चोपद परिमाणमां गाय, भेंस, वत्स सहित, तथा सांढ सहित अमुक संख्या प्रमाणे करी राखवानी यजणा. वली तेमनी जे उंलाद वधे, ते राखवानी जयणा, घोडा, घोडी, उंलाद सहित एटलां रा खवानी जयणा. बलद एटला राखवानी जयणा. बकरी उंलाद सहि त एटली राखवानी जयणा. सूतरी एटली राखवानी जयणा. हा थी एक, चार, दश अथवा अमुक संख्या सुधी राखवा, तेनी जय णा. ए शिवाय बीजा पण कोइ जातनां चोपद जनावरो पोताना जोग निमित्तें अमुक संख्या सुधी घरमां राखवानी जयणा. उपरांत कोइ लेणामां अथवा कोइ बीजी रीतीएं शिरपाव, नजराणा प्रमुख बक्षीश दाखल आव्या होय, तेने राखवानो आगार. बीजानो निषेध. एम बीजां पण घरवखरीनां एटले घरमां वपरातां राछ पीछ मोटां अथवा छोटां तथा वस्त्र प्रमुख ए सहु अधिकरण सर्व मलीने आट ला शेंकडा रूपैयानां अथवा आटला हजार रूपैयानां राखवानी

८

जयणा, उपरांत निषेध. वर्षमां आटला मण घृतनी जयणा. वर्ष प्रत्यें तेल मण आटलानी जयणा. वर्ष प्रत्यें परचुरण करियाणां मण आटलां घरखरच सारु राखवानी जयणा, एटले घरमां आटलुं राखीश तेनुं प्रमाण करी राखे, तेनी जयणा, उपरांत निषेध. व र्ष प्रत्यें आटला मण लूण एटले मीठुं राखवानी जयणा. उपरांत निषेध. वर्ष प्रत्यें गोल, मिशरी, खांड, चीनी साकर विगेरे आटला मण घरखरच सारु राखवानी जयणा, उपरांत निषेध.

एवी रीतें बीजी पण कोइ चीज, घरसंबंधी वापरवा सारु आट ली हद पर्यंत राखवानी जयणा. ए सहु एवी रीतें पांचमा व्रत मां घर संबंधी इच्छाछे अने व्यापार संबंधी तो सातमा व्रतमां क हेवीछे. हवे ए इच्छापरिमाण व्रतना पांच अतिचारछे, ते लखेछे.

१ तेमां प्रथम धनपरिमाणातिक्रम अतिचारछे. ते ज्यारें धन, इच्छापरिमाणथी वधारे थाय त्यारें लोभ संज्ञाथी मनमां मनसुबा करे के आ पांच हजार तो छोकराना जमे करीएं, केमके छोकरो पण महोटो थयोछे एने पण जोइशे, अने एने आपवुं, ते पण मने योग्यछे. एवा कुविकल्प करीने दीकराना पांच हजार रूपैया जूदा करी राखे; अने वली अनाज चावल प्रमुख इच्छा प्रमाणे तो घरमां नेव्यार पड्युंछे तो पण फरी बीजुं अधिक, जरी राखवामां लाभ जाणे, त्यारें धान्यनो शोदो करी राखे, अने जेनी साथें ते धान्यनो शोदो कर्यो होय, तेने कहे के ए अनाज अमे लीधुंछे, ते तमे तमारा घरमां हमणां राखो, अमारे जेम जोइशे तेम अमे लेता जइशुं. एवी रीतें ठराव करीने जेम जेम घरमां धान्य जोइएं, तेम तेम ते धान्य तेनी पासेंथी लावे अने पोताना अज्ञानथी मनमां एम जाणे जे मारे तो इच्छापरिमाथी अधिक धान्य, घरमां राखवानो त्याग छे. अने ए धान्यनो बीजाना घरमां रह्युंछे; एमां मने शुं दूषण छे? एवा मनमां कुविचार करे. अथवा पूर्वे नियम लेवा वखतनो

काचो मण मरिमाण करी राख्योछे अने देशांतर गये थके त्यां पाका मणनी चाल होय, तो पण ते मणने काचा मण परमाणे गणी राखे. एवा जे कुविचार करे. ते प्रथम अतिचारछे.

२ बीजो क्षेत्रप्रमाणातिक्रम अतिचार. ते ए के जे. वास्तु परिमाण राख्युं होय, तेनाथी वधारे वास्तु थाय, त्यारें बेहु घर नी वचेनी दिवाल होय ते तोडी पाडे ; अने ते बे घरनुं एक महोटुं घर करे. क्षेत्र, वगीचा. वाडी प्रमुख तोडी नाखीने महो टो वगीचो करे. तेमज क्षेत्र पण महोटुं करे ; अने मनमां एम विचारे के में जे परिमाण राख्युं छे. ते तो अखंम छे. जे कारण माटे गणती तो एक अथवा बेनी राखी हती. ते गणती प्रमा णे तो बराबर राख्युं छे अने महोटुं करवामां शो दोषछे ? गण ती तो तेटलीने तेटलीज छे. एम जे करे, ते बीजो अतिचार.

३ त्रीजो रूपुं अने सुवर्णप्रमाणातिक्रम अतिचार. ते एम के. इछा परिमाणथी ज्यारें वधारे थाय, त्यारें पोतानी स्त्रीनां घरेणां प्रमुख चारे तोलनां बनावे. अथवा तेउंनी निश्रायें करीने राखे. कोइ भाजन एटले वासण प्रमुख सोना रूपानां होय, ते पण तोलमां चारे घडावीने राखे. ते त्रीजो अतिचार.

४ चोथो कुपदपरिमाणातिक्रम अतिचार. ते एमके, त्रांबु, पीतल अने कांसा प्रमुखनां भाजन, अथवा बीजां राछरचीलांजे गणतीमां प्रथम राख्यां होय अने ज्यारें संपदा मली, त्यारें यद्यपि ते भाजन, गणतीमां तो प्रतिज्ञापरिमाणनी संख्यानांज राखे, पण तोलमां घमणा त्रमणा शेरनां बनावे. अने मनमां एम धारणा धारे के, मारुं व्रत तो अखंम छे. भाजननी गणती तो में भांगी नथी !! अथवा व्रत लेती वखतें काचो तोल राख्यो छे, अने कोइ पर देशांतर गये थके त्यां पाका तोलनो व्यवहार छे. हवे पोताना अज्ञानदोषथी विचा रे के, काचा पाकानी शी चर्चा छे ? अमारे तो सर्व जणसनो संम

त, शेर अथवा मणना प्रमाणथी छे. अमे कांइ शेर वधार्यो नथी. अथवा अमारी खातरदारीने माटे पण कोइएं बनाव्यो नथी. अमारे तो शेरथी प्रतिज्ञाछे. काचा पाकानो अमे कांइ हिशाब राखता नथी, एवुं करे. ते चोथो अतिचार जाणवो.

५ पांचमो द्विपद चतुष्पदपरिमाणातिक्रम अतिचार. ते एमके दास, दासी, घोडा, गायो, बलद अने बीजां पण चोपद प्रमुख जनावरो पोताना प्रमाणथी अधिक थयां जाणे, त्यारें तेउने वेची नाखे अथवा गर्भग्रहण विलंबथी करावे, गणतीमां छे तेमांना वेचे, त्यारें गर्भग्रहण करावे अथवा जाइ के पुत्रनी निष्टायें करीने राखे. एटले पोताना परिमाण माफक कहेवामां राखे. एवी कुटिलता पोतानी अज्ञानताएं करे, ते प्राणीने पांचमो अतिचार लागे. ए पांचे अतिचार जाणवा, पण आदरवा नहीं. पण अहींयां क्षेत्र, वास्तु, चतुष्पदादिक, कोइ मागणा लेणामां आवे, ते ज्यां सुधी वेचाय नहीं त्यां सुधी अधिक राखवां पडे, तेनो आगार.

॥ इति श्री द्वादशव्रतविवरणे पंचम स्थूलपरिग्रहपरिमाणव्रते पंडित श्री उद्योतसागरगणिना कृतजाषा संपूर्णा ॥ ५ ॥

एटले पांच अणुव्रत थयां ; हवे त्रण गुणव्रत लखेछे

॥ अथ ॥

॥ षष्ठदिशिपरिमाणव्रत प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

प्रणमुं गणधर पदकमल, गौतम लब्धिनिधान ;
अथ गुणव्रत विवरण कहुं, षष्टम दिशिपरिमान ॥ १ ॥

हवे त्रण, गुणव्रत कहेछे, ते छठुं. सातमुं अने आठमुं. ए त्रणने गुणव्रत कहीयें. तेमां छठा व्रतमध्यें दिशिनो विचार कहीशुं, ए माटें ए व्रतनुं नाम दिक्परिमाण व्रतछे, ते लखेछे. जे कारण

माटे पूर्वे जे पंचाणुं व्रत कह्यां, तेने ए गुणकारीछे. ए व्रत व्रत थी पंचाणुं व्रतनी पुष्टि थायछे एमाटे गुणव्रत कहेवाय छे. ते केवी रीतें? तोके ज्यारें दिशिपरिमाण कर्युं, त्यारें दिशिनियम क्षेत्रथी बाहेर जे जीव रहे, तेमने अजयदान दीधुं तो पहेलुं प्रा णातिपात व्रत, तेनी पुष्टि थइ. तथा ए क्षेत्रगत जीवोथी जूठुं बोलवानो त्याग थयो, एटले बीजुं मृषावाद व्रत, तेनी पण पुष्टि थइ. तथा ते क्षेत्रनी चीज, दीधा विना लेवानो त्याग थयो, एट ले त्रीजुं व्रत जे अदत्तादान, तेनी पुष्टि थइ. तथा ते क्षेत्रगत स्त्री थी काम जोगाजिलाप मटयो, एटले चोथा ब्रह्मचर्य व्रतनी पुष्टि थइ, तथा ते क्षेत्रगत वस्तुना क्रयविक्रयना निषेधथी परिग्रह मूर्छा कमी थइ, एमाटे पाचमा परिग्रहपरिमाण व्रतनी पुष्टि थइ. तथा ते क्षेत्रना व्यापार संबंधी अढार पापस्थानकनो त्याग थयो. ते माटे ए व्रत, पांचे व्रतने गुणकारी छे. तेकारणमाटे एने गुण व्रत कहेछे. त्यां दिक्परिमाण ते चारे दिशि, तथा चार विदिशि अने ऊर्ध्व तथा अधोदिक्परिमाण व्रत छे. ते दिक्परिमाणव्रतना बे भेद छे. एक व्यवहारथी, अने बीजो निश्चयथी.

१ तेमां एक व्यवहारथी दिक्परिमाण. ते स्वकायाएं दिशिएं तथा विदिशियें जावानो अने माणस मोकलवानो तथा व्या पार प्रमुख करवानी इछा तेनुं परिमाण करीने राखे, ते व्यवहार दिक्परिमाण व्रतछे.

२ तथा बीजुं निश्चयथी दिक्परिमाणव्रत. ते जे गतिगम नछे ते सर्वकर्मनो धर्म छे. कर्मवशें पडयो जीव, चारे गतिमांहे जटके छे. परानुयायी चेतना थइ त्यारें जीव, परस्वजावने अनुसर तो थयो, तेथी गतिज्रमण करेछे, पण जीव तो शुद्ध चैतन्यरूप अ गतिस्वजाववान् छे तथा स्थिर निश्चल स्वजाववान्छे; एवुं श्री जिन वाणीना उपकारथी जाण्युं त्यारें चेतना, शुद्धस्वरूपानुयायी थ

इ त्यारें पोतानुं अगति स्वरूप जाणीने सर्वक्षेत्रथी उदास रहे, एटले सर्वक्षेत्रसाथें अप्रतिबंधक जावें वरते; ते निश्चयदिशिव्रतछे.

१ अहींयां दश दिशिपरिमाणना बे भेद छे. एक जलवटनो, अने बीजो स्थलवटनो. त्यां प्रथम जलमार्ग एटले वहाणमां बेशी जवुं अने स्थलमार्ग एटले खुशकीने मार्गें जवुं ते. तेमां जल मार्गे अमुक दिशियें फलाणाबंदर सुधी जवुं, एम राखे. कारण के जलमार्गनी कोशगणती संख्यामां न आवे, तेथी बंदरनो नियम करी राखे. तेमां पण पवन तथा मेघ आंधी प्रमुखना तोफानमां वहाण क्यहांनुं क्यहां लेइ जइ नाखे, अने वली अजाण पणे जूल चूकथी अधिकवतासथी गणती, जे बंदरनी हती तेथी दूर बीजा बंदरमां लइ जइने नाखे. तो तेनो आगार छे.

२ तथा बीजो स्थलमार्ग. ते स्थलमार्गें आपणे पोतें जे क्षेत्रें व्रत उचार्यां होय त्यहांथी चारे दिशि, चारे विदिशि सुधी योजन, गाउ, कोश प्रमुख. एम जेटलुं जवानुं परिमाण कर्युंछे, तेटली हद सुधी अमने जवानी जयणा छे. तेमां पण चोर अथवा कोइ म्लेछादि कना बंधनमां पडवाथी ते धारेला नियमथी अधिकगाउ, कोश उपर लेइ जाय तो, तेनी पण जयणा. कारण के परवश पडवाथी नियम उपरांत जवानुं थइ जाय, तो तेनो दोष नथी. तथा ऊर्ध्वं दिशिएं चारकोश जवानी जयणा. अधोदिशिएं आठ कोश सुधी जावानी जयणा. तेमां पण उंचुं चढीने नीचें उतरवानुं थाय, ते गणतीमां नहीं. तथा नियमक्षेत्रथी बाहेरनुं कोइक उलखाणवालानुं पत्र आवे, ते वांचवानो तथा फरी तेनो उत्तर लखवानो आगार. पण पोतानी तरफथी विना कारणे पत्रादिक न लखुं. परदेशनी विकथा सांभलवानो आगार. कोइ लेहेणादिक मह्योटा प्रयोजने आजीविकाना नयथी हक लेवाने अर्थे आदमी प्रमुख तगादो करवा माटे मोकलवो पडे, तेनो मने आगार. वली दिशि तथा विदिशिनुं

परिमाण, पांचशे पांचशे कोश प्रमुख जेटलुं राख्युंछे. हवे आगल कोइ पापना उदयथी तथा राजभयथी अथवा आजीविकाना भयथी जे गाम अथवा नगरमां वसता हता, ते नगरथी शो बशें कोश दूर जइ रहेवुं पडे; तो पण पूर्वक्षेत्र परिमाण जे राख्युं हतुं, तेज राखे, अने तेटलीज हद्दमां जइ रहे, पण ते परिमाणथी दूर जवुं नहीं. आगलथी जे पोताना निवासना गामथी आगार, राखी लीधो होयछे, त्याथी शो अथवा बशो कोश दूर जइ पोतानो निवास नवो कर्योछे, तो पण पूर्वे जे पांचशें कोशनी गणती जे गामथी राखी हती तेज राखे पण छोडे नहीं. जे पूर्वे प्रतिज्ञा करी होय तेज पाले. एवी विगतें करी छठुं व्रत छे. ए छठा व्रतना पांच अतिचार छे, ते लखियें छैयें.

१ तेमा प्रथम, ऊर्ध्वदिक्प्रमाणातिक्रम अतिचार. ते एम के, अनाभोगथी वेसुरतिने लीधे तथा कोइ पण बीजा कारणथी प्रमाण करतां विशेष गमन करे, त्यारें तेने प्रथम अतिचार लागे.

२ एवीज रीतें बीजो अधो दिशिप्रमाण पूर्वरीतें अतिक्रमे, त्यारें तेने बीजो अतिचार लागे.

३ तेमज तिर्छि चारे दिशिविदिशिप्रमाणातिक्रम अतिचार छे. ते ज्यारें अनाभोगादिकें करी एना प्रमाणने अतिक्रमे, त्यारें ते त्रीजो अतिचार जाणवो. अहीयां अनाभोगें पोतें दिशिप्रमाणातिक्रम करे अथवा नियमनो भंग थशे, एवा भयथी गुमास्ता प्रमुखने मोकले, त्यारें त्रीजो अतिचार जाणवो.

४ हवे चोथो अतिचार. ते एमके, जे एक दिशियें शो योजन परिमाण राख्युंछे, अने एक दिशियें पचाश योजन परिमाण राख्युंछे. तेमा कदाचित् कोइ दिशियें दोढशो योजन जवानुं काम पडे, त्यारें पचाश योजन बीजी दिशिएं जवाना परिमाणना हता, ते जे दिशिएं जवुं पडे, ते दिशिना योजन, परिमाणमां भेल

वी ले अने अज्ञाने करी एवुं विचारे के, शो योजन पूर्व दिशिना मोकला राख्या हता, तेमां पचाश कोश दक्षिणदिशिना हता ते, आमां आज गणी लेउं. एटले दोढशोनी गणती थइ. अने आज ने दिवसें दक्षिण दिशि तरफ नहीं जाउं, मात्र एकज दिशे जइश. एमां मारुं व्रत पण नहीं भांगशे. एवा कुविकल्प करे, पण एक दिशिएं जवानुं काम पडवाथी त्यहांनुं त्यहां काम करे नहीं. जेटलो जे दिशिएं जवा आववनो नियम राख्यो होय, तेवीज प्रतिज्ञा न पाले, पण पोताना कार्यनी गरज पड्याथी उलट पालट करे अने एवी कुविकल्पना करे, ते वारें तेने चोथो अतिचार लागे.

५ पांचमो स्मृतिअंतर्ध्यानातिचारछे. ते एमके, दिक्परिमाण करीने केटला एक दिवस वीत्या पछी ते विसरी जायके, में तो अमुक दिशिएं जवानुं शो योजन परिमाण राख्युं हतुं, अथवा ए अमुक दिशिनुं आटलुं राख्युं हतुं. एवा विस्मयमां जीव पडे अने तेणे करी दिशिपरिमाणमां ते कमवेश करे, अधिक न्यून करे अथवा नियम लइने कागल प्रमुखमां लखी राख्युं न होय अथवा बुद्धि विलास मंद पणे थयो, तेणे करी घणा दिवस वीत्या पछी चित्तनी भ्रमत्ववृत्ति थइ जाय, त्यारें परिमाणनी वधारे के थोडी गणती करे. तेथी पांचमो अतिचार लागे. ए पांचे अतिचार जाणवा, पण आदरवा नहीं.

॥ इतिश्री द्वादशव्रतविवरणे षष्ठदिशिपरिमाणगुणव्रते पंडित श्रीउद्योतसागरगणिना कृतभाषा संपूर्णा ॥ ६ ॥

॥ अथ ॥

॥ सप्तम भोगोपभोगविरमणव्रत प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

अब सप्तमकी विधि रचौं, पाले भविजन लोग ;
यह है गुणव्रत दूसरा, नामे भोगोपभोग ॥ १ ॥

हवे जोगोपजोग गुणव्रत वीजुंछे, जे कारणे, ए व्रत आदरवा थकी सचित्त चीजनुं खावानुं छोडे, अथवा परिमाण करी राखे. तथा जेमां घणोज आरंज होय तेवो व्यापार न करे, एटले जेमां बहु हिंसादिक अवश्य करवां पडे, एवा व्यापारनो त्याग करे, अने अजक्ष्यनो परित्याग करे. एटला नियम, आ व्रतमा लीधा जाय छे. ते माटे ए व्रत, पहेलां पांचे व्रतने सफल करनारुंछे अने ए माटे एने गुणव्रत कहीयें. हवे ए व्रतनी शेली सर्व लखेछे, तेमां जोगोपजोगव्रतना बे जेदछे.एक व्यवहारथी, अने बीजो निश्चयथी,

१ तेमां प्रथम व्यवहारथी ते जक्ष्य अजक्ष्यनी समजण पामीने तथा बीजी आश्रव संवरनी समजण पामीने, खानपानादिक जे इंद्रियसुखनां कारणछे, तेमां शक्ति प्रमाणे बहु आरंज त्यागीने अल्पारंजी थाय. ते व्यवहारजोगोपजोग विरमण व्रत कहीयें.

२ तथा बीजो निश्चयथी. ते एमके, जे श्रीजिनवाणी सांजली वस्तुतत्वनुं स्वरूप पामीने विचारे, जे जगत्मां परवस्तु लेइने खावी, ते हराम कहीएं. जे पारकी चीज खाय, ते हरामखोर कहेवाय. ते माटे जे नेकीवाला लोको छे, ते पोताना हक्कने ओलखे अने ते रीतें चाले. पण पारकी चीज ग्रहण करवा माटे स्वप्नमां पण इछा न राखे. एम हुं पण शुद्धचैतन्य जाव धारी, अने परम सत्पुरुषनी जाति थइने, जे वस्तु सडे, पडे, अने जती पण रहे; एवा पर पुद्गलना पर्याय छे, जगत्नी जे जूठ छे तेवा पदार्थोनो जोग मने हरामछे. परवस्तुनो जोग करवाथी यश नथी, अने सामर्थ्य पण नथी, एवुं विचारी परजावनो परित्याग करुं, तेणे करी स्वगुणवृद्धि थाय, एवी समजण पामीने पोताना आत्माने जगाडीने स्वरूपानंदी करे, चेतनविलास अनुजवे. ते निश्चय जोगोपजोगविरमणव्रत कहीयें. अथवा जोग शब्दनो अर्थ वली लखेछे.

सातमा व्रतना बे जेदछे. एक जोग, अने बीजो उपजोग,

ते कर्म व्यापारादि क्रियारूप एम छे, त्यां जोगना वली बे जेद
छे. एक उपजोग, अने बीजो परिजोग, तेमां जे चीज एकज
वार जोगमां आवे. जेम आहार, पुष्प अने विलेपनादिक, ते उप
जोग. अने परिजोग एटले जे वारंवार जोगमां आवे ते, जेम जवन
वस्त्र, स्त्रीप्रमुख तथा कर्मथी एमछे एना जेद घणाछे, ते आगल ल
खशुं, हवे एक, ए जोगोपजोग ते जोजन वस्त्र स्त्रीयादिकथी तथा
बीजो, कर्म व्यापार क्रियाथी. तेमां प्रथम जोजनादिकथी कहेछे.

त्यहां श्रावकने उत्सर्गमार्गे निरवद्य आहार लेवो, तेनी शक्ति
न होय तो सचित्त वस्तुनुं परिहारी थवुं, कदापि ते पण न थाय तो स
चित्त वस्तुनुं परिमाण करी लेवुं. अने बावीश अजक्ष्य, बत्रीश अनं
तकाय प्रमुख दुर्गतिना हेतु जाणी, अवश्य त्याग करवा. एमां पण
पूरी शक्ति न होय तो, पोताना मंदवीर्यनो पश्चात्ताप करीने परि
माण करी लेवुं. तेमां प्रथम बावीश अजक्ष्यनां नाम लखेछे.

१ वडनी पीपु, २ पींपलानी पीपु, पारस पींपलीनी पीपु, तथा
३ प्लक्ष ए पण पींपलनी जातिविशेषछे, ४ उंबरनी, पीपु, ५ अने
कालुंबरनी पीपु, ए पांचे वृक्षनां फल अजक्ष्य छे, ए पांचे फलमां
मरकी सरखा मरकी जीव छे. आकारथी ते जीव, सर्व सरखा थाय
छे. ए माटे ए पांचे फल अजक्ष्य छे. वली ६ मध, ७ मदिरा, ८
मांस अने ए माखण, ए चार वस्तुउ जेवो ए वस्तुउनो रंगछे
तेवाज रंगना तेमां निरंतर असंख्य जीवो उपजे छे. वली ए चारे
वस्तुउ महा विगयछे. ए जक्षण करवाथी घणोज विगाड करे, का
मादिक दोषोने वधारे. प्रथम तो ए वस्तुउ हिंसा कर्या विना थती
नथी, अने पछी पण चेतनाने वगाडे, ए माटे ए वस्तुउ अजक्ष्यछे.
वली पुराणादिक वैष्णवमार्गमां तथा कुराणादिक म्लेछशास्त्रमां
पण मदिरा, मधु, मांसना घणा दोष कह्याछे, ए माटे ए चीजो तो,
स्वपरदर्शनमां पण त्याग करवानी कहीछे. वली जांग प्रमुख ले

थाथी ते चेतनाने बिगाडे, माटे एने पण अजक्ष्य वस्तुमां गणवी. एमां पण शरदी रहेछे, ते कारणे एनाथी त्रसकाय जीवोनी घणी उत्पत्ति थाय, माटे एनो पण त्याग करवो.

१० तथा हिमना कांकरा एटले बरफ, ते पण अजक्ष्यछे. कारण के, एमां अप्कायना असंख्य जीवछे. खाधाथी ते चेतनाने मंद करे. शरदी करे. वली ए चीज खावानी कांइ जरुर पण नथी. ए बहु आरंजिक छतां स्वादिष्ट पण नथी. ए बलादिकनी वृद्धिकारक पण नथी, अने वली श्री सर्वज्ञ परमेश्वरें पण प्रतिषेध कस्योछे. एमां प्रसंगदोष तथा संगदोष घणाछे, ए माटे ए पण अजक्ष्यछे.

११ तथा विष जे अफीण प्रमुख चीज. ते अजक्ष्यछे. जे कारणे अफीणादिक विषवस्तु खावाथी पेटना जे कृमि गंमोलादिक जीवछे ते सहु मरी जाय. वली चेतना मुंजाय, अने ए चीजनी खावानी टेव पडी, ते बूटे नहीं. महोताद एटले मिजाज वधे. वखतें वखत जो ए विषवस्तु, खावा माटे न मले तो घणो क्रोध उपजे: शरीर शिथिल थाय. वली अमली माणसने व्रत करवानुं डुष्कर थाय, अने सारो स्वजाव होय ते बदलाइने नगारो थाय. ज्यारें अमल करे, त्यारे एक रंग होय, अने फरी उतरे त्यारें वली कांइ ठेर तरहेनो मिजाज थाय. अने स्ववशपणुं छोडीने, परवश पडवुं थाय. वली ए चीज खावामां पण बहुज बेस्वादछे. तथा अफीणादिक विषवस्तुने खावावालो, ज्यहां वडीनीति अने लघुनीति करे. ते क्षेत्रमां त्रस तथा स्थावर जीवनी हिंसा थाय. ज्यां सुधी पेशाबनी शरदी जाय, त्यां सुधी पृथ्वीकाय प्रमुखना जीव एना गंधथी मरी जाय. ए माटें ए पण अजक्ष्यमां गणायछे. सोमल, वछनाग, हरताल प्रमुख जे विषचीज ते पण एमांज गणवामां आवे.

१२ वली जे मेघना करा एटले रोयडा, ते काचो गर्ज मेघनो गले, तेना कराना कटका पृथ्वी उपर गलेछे, तेपण अशुद्ध द्रव्यछे,

एमां पण वरफना जेवो महा दोषछे. जिनआज्ञा विरुद्धछे. ए माटे ए करा पण अजक्ष्यछे.

१३ तथा खडी माटी, पृथ्वीमां वहुजातिनी थायछे, ते अजक्ष्यछे. कारण ए माटीमां पण असंख्य जीवछे. वली ए चीज खावाथी पेटमां घणा जीवोनी उत्पत्ति थाय, तेमज पांकुरोग, आमवात, कवजीयत, पित्त, पथरि प्रमुख घणा रोग थाय, घणी माटी खाय, तेना मुखनो चेहेरो पीलो थइ जाय, मुखनी सुरखी एटले तेजी जती रहे, कोइ जातनी माटीमां मिंमक प्रमुख जीवनी योनिछे, त्यां शरदी पामीने जीव सूक्ष्म उपजता होय एवामां ते माटी जक्षण करे तो पंचेंडिय जीवनी पण हिंसा थइ जाय. माटी खावानुं जिनाज्ञा विरुद्धछे, ए माटे ए अजक्ष्यछे.

१४ तथा रात्रिजोजन तो प्रत्यक्ष दोषनिधानछे, अने आ लोक तथा परलोकने विषे ए दुःख हेतुछे रात्रीना चारे आहार अजक्ष्यछे, जे कारण माटे रात्रीजोजनमां जेवो आहार होय, तेवा रंगना तेमां तमस्काय जीवो उपजे. वली आश्रित जीव संपातिम तेमां घणा आवी मले. रात्रीजोजन करवाथी तेमां कांइ जेलसेल होय, तेनी खवर न पडे तथा प्रसंगदोष पण घणा लागे केमके जो रात्रीयें जोजन करवानी टेव होय तो, नित्य रात्रें रसोइ करवी पडे, त्यहां अग्निना योगें जीवोनो संहार थाय, श्रावकना कुलनो आचार पले नहीं, सूक्ष्म त्रस जीवो नजरें न आवे अने जो नजरें आवे तो पण यत्न न थाय. वली रसोइ करतां जे अग्नि बले त्यहां पासेंनी छत तथा दीवाल प्रमुखमां आश्रित जीवो रात्रीने विषे जे बहु वेगा होय, ते सर्व तापना योगें व्याकुल थवाथी अग्निमां जइ पडे तथा पतंग प्रमुख जीवो चक्षु इंडियना विषयें व्याकुल थइने अग्निमां झंपापात करी वली मरे. छत के उपरमां रात्रीने विषे सर्प, घरोली करोलीया, मछर प्रमुख घणा जीव वसता हो

य, एवामां ताप लागे तेणे करी ते सर्पादिक जीवो व्याकुल थइ मुखमांथी गरल नाखे, ते गरल कदापि भोजनमां पडे अने ते भोजन अजाणतां खाधामां आवे एटले आत्मानो घात थाय. व ली जे भोजन, दिवसें रांधी करीने राखी मूक्युं होय, ते पण रा त्रे न खावुं, कारण एमां पण चीटी प्रमुख जीव चडे; तेनी ख वर रात्रीमां न पडे. ते जीववालुं भोजन खावामां आवे त्यारें बु द्धिनो नाश थाय, एवुं शास्त्र मध्यें पण कह्युंछे " मेधां पिपीलिका हंति " ए माटे रात्रीयें भोजन करवुं निषेध कर्युं छे. वली वासण मेलतां पण रात्रीयें कोइ जीवनी रक्षा पले नहीं. वली रात्रीयें भोजन करवावाला, परभवें उलूक, मंजार, मूषक, सर्प, वागु ल, चामाचेडीया प्रमुखनो भव पामे. धर्म डुर्लभ पामे, अने पो तें रात्रीभोजन करे तो तेना पुत्र पौत्रादिक पण एज ढंगें पडे. ते पण तेवीज कुचालचालें चाले. एथी अशुद्ध परंपरा चाली जाय. अने जो पोतें प्रथमथीज सारी चालें चाले तो, एटले रात्रीभोजन न करे तो, पाछला पण सुचालें चाले. रात्रीभोजन मां प्रत्यक्ष जीवहिंसाछे ते जोइने अन्यदर्शनीना जल वीजल आ गल धर्म पाम्या हता, ए जिनाज्ञा विरुद्ध रात्रीभोजन छे. ने मु नि पण पंचमहाव्रततुल्य छठुं रात्रीभोजन त्याग व्रत उचरावे छे. ए माटे रात्रीभोजन सर्वथा त्याज्य छे अने अभक्ष्यछे.

१५ तथा बहुबीज ते जेमां गर्भ थोडो अने बीज घणां होय ते तुछफल कहीयें. रींगणु, वनस्पतिजातिविशेष, पटोल, खसख स, पंपोटा प्रमुख ए फलोमां जेटलां बीज तेटला जीवो छे. जे म नवटांक भर तिलमां, तेरशें जीवोछे तो खसखसमां तो एना थी केटलाएक गुणा वत्ता होयछे ए माटे खावुं थोडुं ने जीवघात घणोज थाय, एनाथी कांइ उदरवृत्ति तो थाय नहीं, तेमज रींगणा प्रमुख बहु बीजवाली चीज, खाय तो ते पित्तादिक रोगनी हेतुछे.

वली एवी चीजो खावी ते जिनाज्ञा विरुद्ध छे. एमाटे अनक्ष्यछे.

१६ तेमज आचार एटले बोळानुं अथाणुं जे जातजातनुं थाय छे जेमके, आंबवेलीनुं, फालसानुं, लींबुनुं, केरीनुं, केरडानुं, किरमदानुं, आंबलीनुं, काकडी प्रमुखनुं अने आडुं नीली हलदर, जमी कंद, गरमर इत्यादिनुं अथाणुं अथवा राइतुं त्रण दिवस उपरांत अनक्ष्य छे. ए सर्व अथाणां तुच्छछे. त्रस जीवोनी खाणछे. बीलां प्रमुख तो प्रथमथीज अनक्ष्य छे, तो तेनुं फरी अथाणुं तो थायज केम? विष तो हतुं ने पछी वली तेमां झेर मेळवीने तेने वधार्युं एटले तेनुं केवुंज शुं? चोथे दिवसे एमां नियमा बेंद्रिय जीव उपजे, अने जो एठे हाथे स्पर्श करे तो पंचेंद्रिय जीव पण उपजे. अन्यदर्शनीउंना शास्त्रमां पण अथाणुं, नरकद्वारतुल्य गण्युंछे. एमाटे ए पण सर्वथा अनक्ष्यछे.

१७ तथा विदल जे घोलवडां ते अनक्ष्यछे, जे कारणे ते वडां दाळनां थाय. ते विदल धान्य जे कळाइ, तूर, चोळा, मग, मठ, तुवर प्रमुखनां थाय. ए वडां ज्यारें काचुं गोरस जे दहिं मह्यो, एमां नाखे त्यारें ते खावां अनक्ष्यछे. जे कारण माटे विदलमां दहिं महाना संयोग मात्रे तत्काळ बेंद्रिय जीव उपजे. माटे जे कोइ चीज विदलनी होय, ते महानी साथें मळे तो ते अनक्ष्यछे. जे अनाजनी नीरस दाळ होय, अने जेमां चीकणास न होय ते विदल जाणवुं. पण राइ अने शरशव प्रमुख तेमांनी जे दाळ होय तेमां विदल दोष नथी. कारण, तेमां चीकणाशछे. अहींयां वाश प्रमुख गरम करी विदलमां मेळवे. तो दोष नथी. तथा दुध पण जो उनुं न कर्युं होय तो विदलनी चीज सायें खावुं अयुक्तछे. कारण, तेमां बेंद्रिय जीवनी उत्पत्ति थाय. ए माटे विदलने काचा गोरसनी सायें खावुं ते अनक्ष्यछे.

१८ तथा वेंगण जाति अनक्ष्यछे. कारणके, वेंगणमां घणा बी

छे. तथा एना बीजमां सूक्ष्म त्रस जीव रहेछे. वली ए वेंगण काम संज्ञाने वधारे. निद्राने वधारे. मति धीठी करे. ए द्रव्य, अति अशु द्धछे. ए वेंगणनी जाति सर्वे पण एवीज अजक्ष्य जाणवी. वीजी लीलोतरी प्रमुख तो सुकी करीने पण खावानी आज्ञाछे. अने ए ने तो सुकां करी खावानो पण निषेधछे. ए माटे ए अजक्ष्यछे.

१९ तथा अजाएयुं फल, ते पण अजक्ष्यछे. जे कारण माटे अजाएयुं फलछे. तेनी तरेह, गुण, दोषनी मालम नथी. तो ते केम खाधुं जाय ? कदाचित् विषफल होय, तो आत्मघात थाय. व्यग्र चेतना थाय, ए माटे अजाएयुं फल अजक्ष्यछे.

२० तथा तुछफल एटले वनबोर, जेने चणीबोर कहेछे. ते तथा पीलूडां, पीचू प्रमुख तथा अत्यंत कोमल फल, फली, ते पण अजक्ष्यछे. जे कारणे एवी जीज घणी खाए तो पण तेणें करी तृप्ति थाय नहीं. वली पछीथी घणा दोषो लागे अने जे फल खाइने तेनी गोटली ज्यां नाखे, ते जग्यायें ते गोटलीमां संमूर्छिम पंचेंद्रिय जीव असंख्य उपजे. वली घणां तुछफल जे खाय, तेने लय एटले थोडाज वखतमां रोगोत्पत्ति थाय ए मा टे एवा तुछ फलफलादि अजक्ष्यछे.

२१ तथा चलितरस पण अजक्ष्यछे. जे चीजनो काल पूरो थ यो, स्वाद बदल्यो, तेनी मर्यादा पूर्ण थइ ते चलितरस कहीयें. कोसुं, सडुं अन्न, वीजुं वासी रोटली, सीरो, कचोरी, तरकारी, खिचडी, वडां. नरम पूरी इत्यादिक अनेक रसोइ, जेमां पाणीनी सरसाइ र ही होयछे, ते चीज वचें एकरात व्यतीत थये वाशी थइ एटले ते अजक्ष्यछे. तथा निगाइ वर्षाकालमां सारी उत्तम प्रकारनी वेश व नी होय तो, उत्कृष्ट पंदर दिवस सुधी जक्ष्यछे. पछी अजक्ष्यछे. अने जो तेनो वर्ण, गंध, सीताथी बदलाइ गइ तो काल परि माण पहेलां पण अजक्ष्यछे. तथा उलकालमां निगाइनो का

ल. वीश दिवसनोठे उपरांत अजक्ष्यठे. तथा शीतकालमां १
मास काल उपरांत अजक्ष्यठे. तथा दहिं, शोल पहोर पठी अ
क्ष्यठे. पण एकरात वीतेली जक्ष्य जाणवी. तेमज मठानो क
पण ए प्रमाणेज जाणवो.ए रीतें जेटलो जेटलो जे जे वस्तुनो क
शास्त्रमां कह्योठे, तेटलो तेटलो काल पूरो थया पठी, ते चीज
लितरस थाय; ए माटे अजक्ष्यठे, जे माटे चलित थाय, त्यारें अ
ख्य वेंडिय जीव तेमां उपजेठे.ए माटे ए चलितरसनो त्याग कह्यो

तथा बत्रीश अनंतकाय पण अजक्ष्यठे. जे कारणे, सो
अणी उपर जेटलुं कंद मूल रहे, एटलामां पण अनंत जीवो
ते सहु सूक्ष्म, बादर, पृथ्वी, पाणी, अग्नि, वायु, ए सूक्ष्म ब
रना नेदें करी आठ प्रकार थया अने नवमुं प्रत्येक वनस्पति
नव जातिना सर्व जीवोथी पण अनंत गुणा जीव, सोइना अग्र
गमां कंदनी जेटली जग्याठे तेटली जग्यामां एटलां जीवोठे.एम
सर्व अनंतकाय अजक्ष्यठे ॥ २२ ॥ इति बावीश अजक्ष्य विवरण

हवे बत्रीश अनंतकायनी जाति लखेठे. १ जे नूमिमध्यें क
थाय, एवी सहु कंदजाति, अनंतकाय जाणवी. २ सूरण कंद ते
मीकंद केवायठे, ३ वज्रकंद, ४ लीली हलदर, ५ नीलु आडुं कं
६ लीलो कचूरो, ७ सतावरी वेली औषधि, ८ विराली ल
विशेष सोफाली, ९ कुआंर, १० थोहरी कंद जे सीज तथा लं
सीजनी जाति ११ गिलो एटले गुलवेल, १२ लसण, १३ व
करेला एटले वंस संबंधीनी कारेली, १४ गाजर, १५ लूणी एट
साजी वृक्ष, १६ लोढीपद्मनीकंद, १७ गरमर कछदेशमां प्रसि
१८ किसलय कोमल पांदडां जे नवां उगतां सर्व गुछानां पांदड
तथा सर्व वनस्पतिना जे उगती वखतना अंकूर होय. ए सहु
नंत कायठे. एटले सर्व वनस्पतिनां उगतां पांदडां, अने उग
अंकूर, प्रथम अनंतकाय होय, पठी ज्यारें महोटां थाय,त्यारें के

प्रत्येक वनस्पति थाय अने कोइ अनंत कायपणे पण रहे, १९ खीरसूआकंद कसेरु अनंतकाय, २० थेग ते थेगीनी जाजी, मोथनी जाति, २१ हरिमोथ, एटले लीली मोथ, २२ लूणवृक्षनी छाल, २३ खिलोडा कंद विशेष, जेने टींमोरुं कहेछे. २४ अमृतवेली, २५ मूलानी पाढ प्रसिद्धछे, २६ भूमिरुहा ते भूमिफोडा कहीए, छत्राकार देशजायाएं सापनुं वेसवुं, २७ वथूलानी जाजी, २८ वरुहार प्रसिद्ध विदल धान्य, जेने अंकूर आव्या होय ते, २९ सुअरवल्ली जे रोहिमां महोटी सीम जेवी थायछे, ३० पलंकानी जाजी शाक विशेष, ३१ कोमल आंवली ज्यां सुधी मांहे बीज संक्रमे नहीं, त्यां सुधी अनंतकाय जाणवी, ३२ आलुकंद ते रतालु, पिंगालुविशेष ए प्रमाणे बत्रीश अनंत काय जातिनां सामान्य नामछे ते कह्यां अने विशेष नाम तो अनेकछे. ते एम जे, कोइ वनस्पति तो पंचांग अनंत कायछे, कोई वनस्पतिनां मूल अनंत कायछे, कोइ वनस्पतिनां पत्र अनंत कायछे, कोइनां फूल अनंत कायछे, कोइनी छाल अनंत कायछे, कोइनुं काष्ठ अनंत कायछे, एम कोइनुं एक अंग अनंत कायछे, कोइनां बे अंग अनंत कायछे, कोइनां त्रण अंग अनंत कायछे, कोइनां चार अंग अनंत कायछे, कोइनां पांचे अंग अनंत कायछे.

हवे अनंतकायनां लक्षण लखेछे. जेणे करी अनंत काय ओलखाइ जाय, ते लखेछे. जे वनस्पतिनां पत्र, फल, फूल प्रमुखनी शिरा एटले नस ते मालम न पडे गुप्त होय, जेना संधिनी मालम न पडे, जेनी गांठ पण गुप्त होय, जे भांगी थकी बरोबर भांगे, जे छेद्या पछी फरी उगे, जेमां पांदडां महोटां गुज सरखां होय, सचिक्कण होय अने जेमां घणां फल, पांदडां प्रमुख कोमल होय, ते सर्व लक्षण, अनंत कायनांछे. ए बत्रीश अनंत कायनां नाम कह्यां.

अहींयां अन्नद्यवस्तुओमां अफीण, भांग प्रमुखनो जो ...

खावानो चाल होय, जेना विना चाले नहीं, ते खावा छूट राखे, तेनी जयणा. रात्रीजोजन. मासमध्यें चार अथवा पांच अथवा दश, तिथिना दिवस टाले. अथवा जेत्री शक्ति होय, ते प्रमाणे राखे के एटला दिवसें रात्रीयें आहार करवानी जयणा. उपरांत निषेध. बीजा दिवसोएं त्रिविहार, दुविहार करुं अथवा चोविहार करुं अने बीजी पण अजक्ष्य वस्तु, जे उंशड वेशडमां कोइ दिवसें खावामां आवे, तेनी जयणा. अने बत्रीश अनंतकाय निषेध करे, परंतु रोगादिक कारणें औषधमां लेवानी जयणा तथा अजाण पणे कोइ ऊव्यमां जल्यां थकां आवे तेनी जयणा ठे.

हवे चउद नियमनुं विवरण लखे ठे ॥ गाथा ॥ सचित्त दव्व विगइ, वाणह तंबोल वठ कुसुमेसु ॥ वाहण सयण विलेवण, बं नं दिसि न्हाण जत्तेसु ॥ १ ॥

अर्थः–श्रावकें यावत् जीव, पंचाणुं व्रतमां इछा परिमाणमां कोइ आगली अनेक तरेहनी कर्म परिणतिनी संजावनायें करीने, पोताना निर्वाह समर्थनो उदय अति दुस्तर विचारीने घणी वस्तुउंनुं परिमाण राख्युं होय, तेमांथी फरी नित्यनो आश्रव निवारणने माटे संक्षेप करवाने अर्थें चौद नियमनी दिनप्रत्यें धारणा राखे, ते कहेठे.

१ त्यहां प्रथम सचित्त परिमाणमां मुख्यवृत्तिथी तो श्रावकने सचित्तनो त्याग करवो जोइएं, जे कारण माटे अचित्त वस्तुना आहारमां चार गुणठे. प्रथम तो प्रासुक जलादिक पीधाथी बीजा सर्व सचित्तनो त्याग थयो. ज्यां सुधी अचित्त थयो नथी, त्यां सुधी मुखमां प्रक्षेप न करे. बीजो गुण ए के रसनेंड्रियनुं जीतवुं थयुं. जेमे तेवो स्वाद सचित्त वस्तुमां होय, तो पण खाय नहीं. केटलीक चीज तो रांध्या विनानी पण स्वादिष्ट लागेठे. परंतु सचित्तत्यागें करी, ते सर्वनो त्याग थयो. त्रीजो गुण ए के अचित्त जलादिक लीधे थके कामचेष्टानी शांति थाय. घडी घडी उपयोगमां जीव

रहे के, रखे सचित्त वस्तु खावामां आवी जाय. चोथो गुण ए के, जेटलुं जलादि द्रव्य अचित्त कर्युं होय, तेनाथी जेटला जीवोनी वि राधना थइ, तेटली बंधकनावें चेतना थइ एटलामांज चेतना रही, पण वली प्रतिक्षणे ते वस्तुउमां असंख्य अनंत जीवोनी उत्पत्ति थाय, तेउनाथी विरोधिजाव मटयो. इत्यादिक बीजा प ण घणा गुणछे; माटे ते केटला लखियें?

जे अचित्त करवामां छकायनी विराधना थायछे, ए माटे एक ज कायनी विराधना सारी. एम कही ने जे सचित्तनो त्याग नहीं करे, ते जिनशासननुं रहस्य नथी पाम्यो. जे सचित्त परिहारमां आत्मदमनता, उत्सुक्यनिवारणता अने मंदविषयकषायपरि णति प्रमुख अनेक गुण थाय छे, ते नथी जाण्या एटलुंज नहीं, परंतु जेणे करी खदया घणी थायछे ते गुण तेणे न जाण्या; ए माटे सचित्तत्यागमां घणो लाज छे. एवुं आगममां घणुं सूक्ष्म र हस्य छे. ते कोइ पण छद्मस्थ जीवथी आगमनो पार पामवो बहु मुश्केल छे. जो हठ छोडी करीने बहु बुद्धिनो खरच करे, तो कांइ क रहस्य पामे, ए माटे बाहेर अल्पमतिनी कुयुक्ति सांजलीने मुंजावुं नहीं. जैनशैली अति गंजीरछे; ए माटे मुख्यपणे सर्व सचि त्तपरिहारीज थवुं; अने तेम नहीं बनी शके तो सचित्तनुं परिमाण करी लेवुं के, आटला सचित्तनी मने छूटछे. इति सचित्त नियम प्रथमः

२ बीजो द्रव्यनियम. तेमां धातुमय शिलाकापात्र प्रमुख तथा पोतानी अंगुलि प्रमुख विना जे मुखमां खाए, तेने द्रव्य क हीएं. "परिणामांतरापन्नं द्रव्यमुच्यते" ए लक्षण द्रव्यनुंछे. त्य हां खीचडी, मोदक, वडां अने पापड प्रमुख वस्तु, घणां द्रव्य नि ष्पन्नछे तो पण परिणामांतरथी एक द्रव्य कहीयें. घणां द्रव्य वि ना एक द्रव्य निष्पन्नछे. तो पण घउंनी रोटली, तथा बाटी, घुघ री, पोली, ढोकलां प्रमुख ए सर्व, जिन्न द्रव्य कहीएं. जे कारण

माटे नामांतर, स्वादांतर अने रूपांतर तथा परिणामांतरथी द्र
व्यांतर थायछे. अथवा अहींयां कोइ आचार्य, बीजी रीतें पण
द्रव्यविवक्षा कहेछे; परंतु वहु वृद्धपरंपरासंमत एहज छे ए मा
टे द्रव्यपरिमाण राखे के, आटलां द्रव्य, आजना दिवसमां हुं
खाइश. ए द्रव्य नियम बीजो जाणवो.

३ त्रीजो विगयनियम. तेमां दश विगयछे, तेमां चार महा
विगय छे, एक मधु, १ मांस, २ मांखण, ३ मदिरा, ४ ए चारनो
तो बावीश अभक्ष्यमां त्याग कस्योज छे बाकी छ विगय छे; ते
भक्ष्यछे. दूध, १ दहीं, २ घृत, ३ तेल, ४ गोल, ५ अने सर्व मि
ष्ट पकवान, ६ ए छए विगयमांथी एक, बे, त्रण छोडे, बीजानी
जयणा राखे. एना निविआता, पांच पांच जातिना एक एक
विगयना कह्याछे. ज्यारें विगय त्याग कस्या, त्यारें ते नीविआता
पण त्याग करवा जोइयें. अने जो न छोडया जाय तो, तेज व
खत धारी ले के मने विगयनोज त्यागछे पण नीविआतानी जयणा
छे. इति विगयनियम तृतीयः

४ चोथो उपानह नियम, एटले जोडानो नियम. पगरखांनी
जाति एटले जूती, खडाउ, मोंजा, बूट प्रमुख, ए जीवहिंसानां महो
टां अधिकरणछे. त्यां श्रावकने जिनपूजादिक कारणविना खडा
उ पहेरवां नहीं अने जोडा विना तो चालवाने समर्थ नथी; ए
माटे एनुं परिमाण करी लेवुं के, आजन दिवसमां आटला जूती
ना जोडा पहेरीश, बीजानी जूती पगमां पहेरुं नहीं. अ
ने भूले चूक्ये बीजानी जूती पगमां पडे, तो तेनी जयणा.
इ उपानह नियम चोथो.

५ हवे पांचमो तंबोलनियम. ते चोथो जे स्वादिम नामें आ
हारछे ते जाणवो. पान, सोपारी, लविंग, एलची, तज, तमा
लपत्र, सीतल, चिणिकबाव, जायफल, जावंत्री, पींपलीमूल.

अने पींपर प्रमुख करियाणुं जेनाथी मुखशुद्धि थाय, पण उदर पूर्ण न थाय. ते चीज खादिम आहारविशेष तंबोल कहीयें. ए नुं परिमाण करी लेवुं के, आजना दिवसमां आटलां तंबोल, मु खवास, ते शेर अथवा अर्द्धशेर, मारे खावां. एवी रीतें परिमाण राखे, अथवा संख्यायें राखे जे, आटली चीज तंबोलमां खावी, ए पांचमो तंबोल नियम.

६ ठठ्ठो वस्त्रनियम. ते स्त्री पुरुषना पांचे अंगोनां जे वस्त्र, ते वेष कहेनाय. एठेनी संख्या राखे जे आजना दिवसमां एटला वेष मारे पहेरवा अने आटनां वूटां वस्त्र वापरवां. जे कारण माटे रात्रीएं पहेरवानुं तथा स्नानादिक करतीं वखत पहेरवानुं वस्त्र वेषमां गणुं जाय नहीं. ए माटे ते वस्त्रने जूदां राखे, अ थवा वेष न गणे तो समुच्चय वस्त्रनी संख्या राखे के, आजना दिवसमां आटली संख्यायें मारे वस्त्र वापरवांछे. बीजां नहीं अ ने जेल संजेल पणे अजाणथी वदलाइने पहेरवामां आवे, तेनी जयणा. ए ठठ्ठो वस्त्र नियम.

७ हवे सातमो पुष्पजोगनियम कहेछे. ते एमके, मस्तकमां राख वा लायक, गलामां पहेरवा लायक फूल तथा फूलनी शय्या, फूल ना तकीआ, फूलना पंखा, फूलना चंदरवा, अने जाली प्रमुख जे जे चीज जोगमां आवे. फूलनी ठडी, फूलना सेहेरा, फूलनी कलंगी, फूलना तोरा इत्यादिक. अने फूलनी जातिमां जे सुगंधि फूल जो गमां आवे, तेनी आटली डव्यगणतिमां इछापरिमाणे वूट राखे, तथा एटलां फूल, नाकें करी वास लेवानी धारणा प्रमाणे वूट रा खे. तथा आटली जातिनां देहना जोगमां लेवां मोकलां राखे, ते ना तोलनी गणती राखे. एवो नियम, उपयोग राखीने करे. जेट लुं पले, तेटलुं तोल, वजन, गणती, जाति,व्यापार प्रमुख जेवी पो तानी शक्ति होय, तेवी रीतें राखे. ए पुष्पनियम सातमो.

माटे नामांतर, स्वादांतर अने रूपांतर तथा परिणामांतरथी द्र व्यांतर थायछे. अथवा अहींयां कोइ आचार्य, बीजी रीतें पण द्रव्यविवक्षा कहेछे; परंतु बहु वृद्धपरंपरासंमत एहज छे ए मा टे द्रव्यपरिमाण राखे के, आटलां द्रव्य, आजना दिवसमां हुं खाइश. ए द्रव्य नियम बीजो जाणवो.

३ त्रीजो विगयनियम. तेमां दश विगयछे, तेमां चार महा विगय छे, एक मधु, १ मांस, २ मांखण, ३ मदिरा, ४ ए चारनो तो बावीश अजक्ष्यमां त्याग कर्योज छे बाकी ठ विगय छे; ते जक्ष्यछे. दूध, १ दहीं, २ घृत, ३ तेल, ४ गोल, ५ अने सर्व मि ष्ट पकवान, ६ ए छए विगयमांथी एक, बे, त्रण छोडे, बीजानी जयणा राखे. एना निविआता, पांच पांच जातिना एक एक विगयना कहाछे. ज्यारें विगय त्याग कर्या, त्यारें ते नीविआता पण त्याग करवा जोइयें. अने जो न छोडया जाय तो, तेज व खत धारी ले के मने विगयनोज त्यागछे पण नीविआतानी जयणा छे. इति विगयनियम तृतीयः

४ चोथो उपानह नियम, एटले जोडानो नियम. पगरखांनी जाति एटले जूती, खडाउ, मोंजा, बूट प्रमुख, ए जीवहिंसानां महो टां अधिकरणछे. त्यां श्रावकने जिनपूजादिक कारणविना खडा उ पहेरवां नहीं अने जोडा विना तो चालवाने समर्थ नथी; ए माटे एनुं परिमाण करी लेवुं के, आजन दिवसमां आटला जूती ना जोडा पहेरीश, बीजानी जूती पगमां पहेरुं नहीं. अ ने जूले चूक्ये बीजानी जूती पगमां पडे, तो तेनी जयणा. ए उपानह नियम चोथो.

५ हवे पांचमो तंबोलनियम. ते चोथो जे स्वादिम नामें आ हारने ते जाणवो. पान, सोपारी, लविंग, एलची, तज, तमा लपत्र, मीनल, निणिकथाय, जायफल, जायंत्री, पींपलीमूल.

अने पींपर प्रमुख करियाणुं जेनाथी मुखशुद्धि थाय, पण उदर पूर्ण न थाय. ते चीज खादिम आहारविशेष तंबोल कहीयें. ए नुं परिमाण करी लेवुं के, आजना दिवसमां आटलां तंबोल, मु खवास, ते शेर अथवा अर्द्धशेर, मारे खावां. एवी रीतें परिमाण राखे, अथवा संख्यायें राखे जे, आटली चीज तंबोलमां खावी, ए पांचमो तंबोल नियम.

६ ठ्ठो वस्त्रनियम. ते स्त्री पुरुषना पांचे अंगोनां जे वस्त्र, ते वेष कहेवाय. एर्हनी संख्या राखे जे आजना दिवसमां एटला वेष मारे पहेरवा अने आटनां छूटां वस्त्र वापरवां. जे कारण माटे रात्रीएं पहेरवानुं तथा स्नानादिक करती वखत पहेरवानुं वस्त्र वेषमां गण्युं जाय नहीं. ए माटे ते वस्त्रने जूदां राखे, अ थवा वेष न गणे तो समुच्चय वस्त्रनी संख्या राखे के, आजना दिवसमां आटली संख्यायें मारे वस्त्र वापरवांछे. बीजां नहीं अ ने मेल संमेल पणे अजाणथी वदलाइने पहेरवामां आवे, तेनी जयणा. ए ठ्ठो वस्त्र नियम.

७ हवे सातमो पुष्पजोगनियम कहेछे. ते एमके, मस्तकमां राख वा लायक, गलामां पहेरवा लायक फूल तथा फूलनी शय्या, फूल ना तकीआ, फूलना पंखा, फूलना चंदरवा, अने जाली प्रमुख जे जे चीज जोगमां आवे. फूलनी छडी, फूलना सेहेरा, फूलनी कलंगी, फूलना तोरा इत्यादिक. अने फूलनी जातिमां जे सुगंधि फूल जो गमां आवे, तेनी आटली डव्यगणतिमां इछापरिमाणे छूट राखे, तथा एटलां फूल, नाकें करी वास लेवानी धारणा प्रमाणे छूट रा खे. तथा आटली जातिनां देहना जोगमां लेवां मोकलां राखे, ते ना तोलनी गणती राखे. एवो नियम, उपयोग राखीने करे. जेट लुं पले, तेटलुं तोल, वजन, गणती, जाति,व्यापार प्रमुख जेवी पो तानी शक्ति होय, तेवी रीतें राखे. ए पुष्पनियम सातमो.

८ हवे आठमो वाहननियम. ते रथ, गाडी, गज, घोडा, पालखी, ऊंट, बलद, नावप्रमुख. जे उपर बेशीने ज्यां जवुं होय त्यां जवाय, ते वाहन कहेवाय. ते वाहन सर्व त्रण जातनां छे, एक तरतां, बीजां फरतां अने त्रीजां चरतां. एनी संख्या परिमाण करी राखी ले. ए नियममां कोश खेडवो, क्षेत्र समारवुं, चकडोल तथा हिंडोले चढवुं, शेरडी प्रमुखना चक्रमां बेसवुं, ए सहु आवे. ए माटे तेउनी संख्यापरिमाण राखी लेवुं के, आटली संख्यानां वाहन उपर आजना दिवसमां महारे चढवुं. ए वाहन नियम आठमो.

९ नवमो शयननियम. ते एम के, शय्यानो नियम राखे. शेज, खाट, ते न्हानी मोटी नवन, इत्यादि लाकडाना तथा तखता, चोकी तथा जूमिउपर तूलनी तथा रूनी जरेली सुखशय्या, एटलानुं परिमाण राखे. जे आजना दिवसमां मने आटलानो जोग करवो. एवो नियम राखे,आटला आज दिवसें महारे बिछानां, उपरनां अने पलंग पोस प्रमुख अने आसन खुरशी उपर बीछावबानां, चोकीनां, पट्टा प्रमुखना. ए सर्व न्हाना महोटानो सर्व उपयोग धारीने परिमाण करी राखवुं अने जूला जूखयानी जयणा राखे. एवी रीतें शक्ति प्रमाणे परिमाण राखी ले. ए शयन नियम नवमो.

१० हवे दशमो विलेपननियम. ते एमके, जोगने अर्थे आटलो केसर, आटलुं चंदन, आटलो चूवो,अत्तर, जवादिक, तेल फुलेल, कमरी, कस्तूरी, अबीर, अरगजा प्रमुख जे जे अंगने लगाववानुं तेल के अत्तर,ए सर्वनां नाम धारीने गुलाबनुं अत्तर अथवा अंबरनुं, फितननुं खसखसनुं इत्यादिकना अत्तरनी संख्या करीने परिमाण राखे. अथवा उवटणा पण सहु एमांज आवे. ते सहु आजना दिवसमां आटला तोलनुं मारे जोइशे एटलुं राखी ले. एवी रीतेनो नियमले. बीजा पण विलेपननो सहु तोल परि

ण राखे. अहींयां पूजादिक धर्मकरणी करतां हाथ प्रमुखने
पे धूपधाणुं के अगरवत्ती लेवी पडे ते. तथा पोतानां अंग के
तर्के तिलक करवुं पडे तथा परमेश्वरना अंगें तिलक प्रमुख क
ां पडे, तेनाथी म्हारो नियम न नांगे, एम नियममां करेली
रणाथी धर्मने माटे जे कांइ विशेष अधिकरण जोइयें तेथी नि
मनंग थाय नहीं. ए विलेपननियम दशमो.

११ अगीआरमो ब्रह्मचर्यनियम. ते एमके, श्रावकनें दिवसें अ
ह्मसेवा तो प्रायें निषेधछे. अने रात्रीनी जयणाछे. अथवा परि
ाण करे के, आजनी रात्रीमां आटली वार अब्रह्मचर्यनी ज
णा. अहींयां स्त्री सार्थे हास्य, विनोद अने आलिंगनादिक,
ते सर्वमांहे मैथुनक्रिया लागेछे, ए माटे जेवी शक्ति तेवा नांगा
राखे. कोइ श्रावकनें रात्रीयें चतुर्विधआहार करवानो त्याग होय
अथवा रात्रीएं एकांतध्यान करवानो चाल होय, जप जापनी
रुचि तेने घणी होय. ते मनमां एम जाणे के, रात्रीयें विषयसेवा
करी अशुद्ध थइने जप केम करुं ? वली विषयरूप रोगनी लगन
लागीछे, ते पण परिणामने बगाडेछे, ए माटे दिवसने विषे विषय
विकल्प मटाडीने पछी शुद्ध थइने रात्रीयें निश्चिंत पणे स्वस्थचित्ते
जप करुं. एवी बुद्धिथी दिवसने विषे विषय सेवे, रात्रीयें न सेवे
ए माटे कोइनें दिवसमां निषेध अने रात्रीनी जयणा, कोइने
दिवसनी जयणा अने रात्रीयें निषेध, अने कोइने रात्री तथा
दिवस ए बंनेनी जयणा. पण गणती राखे के, रात्री दिवस मलीने
आटली वार स्त्रीसंगें नोगसेवा करवी, ते पण पोतानी जेवी शक्ति
होय, ते प्रमाणे नियम राखे. इति ब्रह्मचर्य नियम एकादश.

१२ बारमो दिसि के० दिशिनो नियम. ते दशे दिशियें जवा
आववानुं परिमाण. ते जेवी शक्ति अने जेवुं प्रयोजन, ते प्रमाणे
राखे. अहींयां आदेश, उपदेश, आदमी मोकलवानुं, कागलनुं वा

चवुं, खखवुं. ए सर्व एमां आवे. माटे जेवुं पखे, तेवुं राखे. इति दिशि नियम द्वादश.

१३ तेरमो स्नाननियम. ते एमके दिवसमां तैलादिक अन्यंग पूर्वक स्नान करवुं तथा अन्यंग कस्या विना स्नान करवुं, तेनुं परिमाण राखे जे दिवसमां आटली वार स्नान करीश. अहिंया देवपूजा निमित्ते अधिक स्नान करवुं पडे, तो पण नियमजंग यतो नथी. एवी रीतें सर्वव्रतमध्यें धर्महेतुयें जे कमवेश करवुं पडे, तो तेनाथी नियमजंग नथी. इति त्रयोदश स्नाननियमः

१४ चौदामो जात पाणीनो नियम. ते एमके, चारे आहारमां स्वादिमनुं तो तंबोलना नियममां परिमाण राख्युंछे अने बाकी त्रण आहार रह्या, तेमां प्रथम खादिममां मीगइ मिष्ट मेवा अ यवा मिष्टान्न, पान, मोदकादिक. अशनमां जात, रोटली, कचोरी, शीरो, तेनुं परिमाण प्रमुख राखे के, दिवसमां आटला शेरनी जयणा. अहींयां घरमां घणो परिवार होय, तेहने माटे अशना दिक घणुं करवुं करावुं पडे, तेनो गृहस्थने बूटको नथी ए मा टे एनी जयणा राखे तथा पारके घेर, जाति प्रमुख संबंधें जम वा माटे जवुं पके, त्यहां तो केटलाक मण जात प्रमुखनी रसोइ यनावी होय, पण नियम धारीने एनो दोष नथी, जे कारण मा टे नियम धारीएं तो स्वनिष्टाएं खावानुं परिमाण कर्युंछे; अने घ रसंबंधी ज्ञाति संबंधीथी बूटानुं नथी; ए माटे पोतें खायानुं परि माण करी राखे के, आटला तोलथी वधारे खावुं नहीं. एटलुं प खे. अने जो परिणाम दृढ करीने सर्व संबंध ठोमीने स्वनिष्टा परि माणथी अधिक पचन पाचनमां न जमे, तो ते बहुज सारुं; पण सर्व गृहस्थथी एवुं पखे नहीं. ए माटे यथाशक्तिएं परिमाण राखे तथा त्रीजुं पानआहारनुं परिमाण राखे के, दिवसमां आटला कळश, पाणीना वावरुं. अहींयां पण घणा परिवार वा

लाने पाणीनुं प्रमाण ते स्वनिष्टजोगनिमित्त जूडुं राखवुं, समुदा यना जेल संजेलनी छूट नथी, एमाटे ते जूडुं राखे तो बहु सारुं. इति जात पाणी नियम चतुर्दश.

अहींया जे कोइ अधिक जाववंत साधक होय ते सचित्तादि परिमाणमां तथा ऊव्यपरिमाणमां जूदां जूदां नाम लेइ लेइने राखे तेने महोटी निर्जरा थाय, अने अशक्तने तो सामान्य क ख्युंछे. ॥ इति चतुर्दश नियमाः समाप्ताः ॥

हवे पंदर कर्मादाननुं स्वरूप लखे छे. कर्मादान एटले जे व्यापार करतां गाढां पापकर्मोनुं बंधन थाय, एवुं व्यापारकर्म ते पापक र्म, तेनुं आदान एटले ग्रहणछे जे व्यापारमां तेने कर्मादान क हीएं. अहींयां संसारमां पाप तो सर्वे व्यापारमां थायछे, तोपण बी जासर्व व्यापारथी ए पंदरे कर्मादान व्यापारमां घणुं पाप अने म लिन परिणाम पणुंछे. ए व्यापारें करी पापनी परंपरा बहु चाले,ए माटे श्रावकने ए अवश्य त्याज्यछे. कदापि ए कर्मादान व्यापारमांज पोतानी आजीविका लागी होय ने तेथी करी ते न छूटे तो परिमा ण करी लेवुं ॥ हवे ए पंदर कर्मादाननुं जूडुं जूडुं विवरण कहे छे ॥

१ प्रथम इंगालकर्म. ते लाकडां बाली कोयला करीने वेचे अ ने तेणे करी पोतानी आजीविका उपजावे, ते इंगालकर्म. तथा कोइ तरेहनी जट्ठी करे, इंट नीपजावे, कुंजार कर्म, लोहार क र्म, सोनार कर्म. अंगारा कर्म. चंगडीकार, नीलकार, कलाल, ज ठियारो. जाडजुंजो, हलवाइ, धातुगालक प्रमुख जेटला अग्नि वडे व्यापार थायछे, ते इंगालकर्म. ए व्यापारमां घणा दोषछे, जे कारणे अग्नि, सर्वशस्त्रमां मुख्य शस्त्रछे. चार दिशि, विदिशि, ऊर्ध्व, अधो, ए सर्व स्थलें छकायना जीवने अवश्य हणे ए मा टे ए कर्म, अनाचरणीय छे. इति इंगालकर्म प्रथमं.

२ बीजुं वनकर्म. ते एमके, छेद्यां अछेद्यां वन वेचे, पणिया

नां फल, पत्र वेचे. पत्र, फूल, फल, कंद, मूल, तृण, काष्ठ, लक डी, वांसादिक व्यापार तथा लीली वनस्पति हरिबीज वस्तुनो जे व्यापार, ते पण सर्व वनकर्म जाणवुं तथा खेती कृषीनो व्यापार करवो, ए सर्व वनकर्म आजीविका निमित्तें करवुं तथा खेडुतने आगलथी पैसा आपीने पछी धान्य नीपजे तेवारें ते धान्यमां वधतुं ले. ते पण वनकर्म तथा धान्य दलावे, खंडावे, जरडावे, ए पण एनाज व्यापारछे, ए वनकर्म व्यापारथी, ते वनस्पतिना जीव अने वनस्पति आश्रित वनना त्रसजीवनी अवश्य विराधना थाय, ए माटे वनकर्म अनाचरणीय छे. इति वनकर्म.

३ त्रीजुं शाडीकर्म. ते शकट एटले मह्वोटां गाडां, वहेल तथा असवारीनो रथ, इक्का गाडी एटले छोटी गाडी तथा नाव जाति अथवा वजरा, पलवार,महिलगिरी,छलाक,नमलीआ प्रमुख. तथा हलदंताल, चरखा, घाणी प्रमुख. एनां नानां मह्वोटां अंग धोंस रां चक्की एटले घंटी प्रमुख. उखली, मुशली ए सर्व नवां वनावी ने वेचे तथा उपर रही वेचावे, ते सर्व शकटकर्म. ए महा हिंसा नुं कारणछे, अनाचरणीयछे. इति शाडीकर्म.

४ चोथुं नाडीकर्म. ते गाडी, वेल, पोठीयो, उंट, पाडो, गधो, वेसर, घोडो, नाव, रथ, सुखपाल, कोली प्रमुख पोतें राखे अने वीजाने भाडे आपे, वीजानो भार वोज, ते कहे त्यां पहोचाडी आपे तथा घर, दुकान, वस्त्र, वखार प्रमुख पोतानी होय, ते पार काने भाडे आपे तथा सार्थवाहनो व्यापार, हुंडा भाडानो व्या पार. ए सर्व भाडीकर्ममां आव्युं. जे पोतानी चीजनुं भाडुं लइने पोतानी चीज वीजाने सोंपे, ते पण भाडीकर्म जाणवुं. एमां वल द, घोडा प्रमुख जीवने भाडनादिक महा दुःख उपजे अने चलाव नां थकां मार्गमां त्रसादि जीवोनी हिंसा अवश्य थाय, ए माटे ए भाडीकर्म अनाचरणीयछे. इति भाडीकर्म.

५ पांचमुं फोडीकर्म. ते कूप खोदाववो तथा तलाव खोदाववुं, द्रोह वावडी खोदाववी तथा नीक खोदाववी इत्यादिक. तथा हल खेडन करवुं. संगत्रास पासें पत्थर फोडाववा, हीरा रत्ननी खांण खोदाववी तथा तेने रगडाववां, ठींड्पडाववां परच कराववी, घाट कढाववा.तरसाववुं.जोयरां तहखानानुं बनाववुं,तथा जव धान्य बुंट प्रमुखनी दाल कराववी. शालिमांथी चावल कढाववा इत्यादि व्यापार सर्व फोडीकर्ममां आवे तथा इंगालकर्ममां पण आवे. ए पृथ्वी विदारवामां पृथ्वीकाय अने त्रसकायना जीवोनी हिंसा थाय छे. अने बीजा जीवोनो पण अंगघात थाय छे. किलामणादि बहु उपजे तेथी पाप लागे ए माटे ए कर्म त्याज्यछे, ए पांचे कुकर्म छे, महा हिंसामय छे, ए माटे छोडवां. हवे पांच कुवाणिज्य लखेछे.

१ तेमां प्रथम दंतकुवाणिज्य. ते हाथीना दांत, उल्लूना नख, जीज, कलेजुं तथा पंखीनां रोम तथा पंखालिंगि प्रमुखनां अने गायना पुछनां चमर तथा हरणनां शिंगडां तथा गेंडाप्रमुखनां शिंगडां, तथा शंख, कोडा, कोडी, कस्तुरी, जवादि, मोती, वाघनुं चामडुं, वाघनी मूछना केश, सावरनां शिंगडां, कचकडुं, किरमजदाणा, रेशम, ऊन, तांत, नमूंम प्रमुख जे त्रस जीवनां अंग तथा उपांग, ए सर्वनो व्यापार दंतवाणिज्यमां आवे. ए वाणिज्यमां ज्यारें अंग लेवाने आगरमां जाय, त्यारें ते क्षुद्र जिह्वादिक लोक, तत्काल हस्ती, गेंडा, मृग प्रमुख जीवोनी हिंसा करवामां प्रवर्त्ते अने महा पाप अनर्थ करे. वली पोतानो परिणाम पण त्यां गये थके मलिन प्रवर्त्ते. लोजना हेतुयें व्याध लोकोने कदापि एवुं कहेवुं पडेके, अमारे वास्ते घणा सारा जारे अने मोहोटा दांत जो तमे आणी आपशो तो वली वधारे मूल्य पामशो. त्यारें ते व्याध लोको एना कहेवा उपरथी वधारे हिंसा कर्म करे. एवी रीतें सर्व द्रव्यमां जाणी

लेवुं. ए माटे ए सर्व चीज, व्यापारी पासेंथी लेवी पण आग रमां जइ न लेवी. ते माटे आजीविका करवा सारु तो ए कुवा णिज्य तजवुं. एक हस्ती मरे, त्यारें मात्र बे दांत मले, एक गाय मरे, त्यारें मात्र एक पुछ मले. ए प्रमाणे सर्व चीजमां विचारी लेवुं. इति दंतकुवाणिज्यं प्रथमं.

२ बीजुं लाखकुवाणिज्य. ते लाख, धावडी, गली मलुडां, साजी खार, साबू, मनशील, लोह, सोहागो, पडवास, कसुंबो, कपिला, तूरी. ए सर्व खारनी जाति, एउंनो जे व्यापार, ते लाखवाणिज्य कहेवाय. ते लाखमां प्रथम त्रस जीवोना समूह विना भाली उ पजे नहीं. पछी पण ज्यारें रंग काढे, त्यारें अन्न देइने सडावे छे, त्यां पण तेमां त्रस जीवो उपजे छे. महादुर्गंध रुधिरना जेवो भ्रम उपजे. धावडीमां पण त्रस जीवोनो आश्रय छे. एमां कुंथुआ घणा रहेछे. वली ए मदिरानुं अंगछे. गली पण प्रथम सडावे, त्यहां त्रस जीव उपजे, तेउंनी ज्यारें हिंसा करे, त्यारें गली उप जे. पछी पण गलीना कुंभमां त्रस जीवोनी घणी हिंसा थाय. केव ल गलीनां वस्त्र पहेरे तेमां पण त्रस जीवो जू, लीख प्रमुख उपजे. एमाटे ए ज्यहां त्यहां हिंसानां हेतुछे. तथा हरताल मनशिला दिकनी वासनाथी घणाज माखी प्रमुख त्रसजीव मरे. हरताल, मनशिलने वाटतां जो जतन राखे नहीं तो तेनी वासनाथी त्रस जीवो मरे. तूरी, उंस, पडवास प्रमुख पण ज्यहां ज्यहां जे जे काममां आवे, त्यां त्यां पण घणा जीवोनो घात थायछे. एमां आगल पाछल त्रस जीवोनी हिंसा थायछे. एमाटे ए वस्तुउं त्या ज्यछे. इति लाखकुवाणिज्यं.

३ त्रीजुं रसकुवाणिज्य. ते मध, मदिरा, मांखण, मांस, ए चारे महाविगयनो जे व्यापार, तथा दुध, दहीं, घी, तेल, गोल, खां ड प्रमुख रसवाली जे नरम चीजो तेउंनो जे व्यापार, ते रस

वाणिज्य कहेवाय. अहींयां रसवाणिज्यमां चार महाविगयछे. ते तो सदा अशुद्धछे. जे माटे सदा ते वस्तुउं त्रसजीवोयें करी संयुक्त थायछे. आगल पाछल हिंसा घणीछे. तथा दहीं, दुध, घृतादिक सं चिक्कण रसवाली चीजो मध्यें ज्यहां ए चीजोथी जरेलां पात्रो पण खुल्लां रहे, तो त्यां पण नहाना मोटा जीवो आवी पडे ; ते जीव, कोइ पण जीवे नहीं. बे दिवस उपरांत दहींमां असंख्यात जीवो त्पत्ति थायछे. तेल घृतादिकना गंधथी घणाज कीडी प्रमुख जीव आवे अने जे आवे ते तरतज तेमां लपटाइ जाय, ते बचे नहीं वली ज्यां घृत तेलादिकनां जाजन एटले पात्र रहेतां होय, ते जमीन थी कणी अने मलिन थइ रहे. त्यां फरनारा त्रस जीवो होय, ते लप टाइ रहे. तिलनो व्यापार ज्यां होय अथवा ज्यां तल, टीसी, काव रा प्रमुखनुं सदा पीलावबुं थातुं होय, त्यां ज्यारें फागण मास उप रांत मास थाय त्यारें अवश्य तिलादिकमां त्रस जीवो घणाज उ पजे. त्यारें ते जीवसंयुक्त तल पील्या जाय. ते वारें ते जीवो प ण ते तलनी सायेंज पीलाइ जाय. तेलनो दीवो करे, त्यां पण अनेक त्रस जीवोनो घात थाय. एम आगल पाछल घणी जीव हिंसा थाय. तथा गोल, चीनी मिश्री प्रमुखमां पण मिष्टताना योगें करी मांखी, कीडी, मंकोडा प्रमुख घणा जीव आवे ते माटे तेनो संहार थइ जाय तथा सादी चीनी चोमासामां अजक्ष्य थाय. जे कारण माटे आर्द्रा नक्षत्र लागे, त्यारथी सादी चीनीमां असंख्य जीवोनी उत्पत्ति थायछे. ए माटे चार मासतो अशुद्धछे. अने ज्या रें व्यापार थाय, त्यारें तो एथी बहु त्रसजीवोनी हिंसा थाय. ते मज मीण पण घणा जीवोनो घात थया विना नीपजे नहीं. अ ने पछी पण बहु हिंसानुं कारणछे. ए वस्तुनो मीणवती तथा रं गारा प्रमुखना काममां अधिकार होयछे माटे तेनुं अधिकरण कार्यछे. तथा मुरब्बो, पाक, रोगान, अत्तर अने अर्क प्रमुखनो

व्यापार पण सर्व एमां आवे. केटला एक रसवाणिज्यमां इंगाल कर्म. यंत्रपीलनकर्म. विषकर्म अने रसवाणिज्य. एटलानो दोष, ए कर्ममां लागे. ए माटे रसवाणिज्य निषिद्धछे. इति रसकुवाणिज्यं.

४ हवे चोथुं केशकुवाणिज्य. ते द्विपद मनुष्य दास, दासी, गुलाम. ए आजीविकाने कारणे लेइने स्वदेश परदेशमां वेचे, तथा गाय. ढोर. घोडा, ऊंट, हाथी, बलद, बकरी, पाडा, गधा. तथा पंखीओमां बाज. कुकडा. कुंजी, बहिरि, सिकरा, लालमेनां, मरघां, पोपट. मोर. सारस. सुग्ग. तेतर, ए पंचेंद्रिय पंखी जीवोने आजीविका निमित्तें ले अथवा वेचे ; ते केशवाणिज्य कहेवाय. ए केशवाणिज्यमां दास. दासी. तिर्यंच प्रमुख जीवने तो प्रथम स्थानकुटुंबनो वियोग पडे अने जे लेइ करीने बीजाने आपे, त्यां तेने नित्य परवश रहेवुं पडे, पोताना मननी इच्छा कांइ सरे नहीं. वली तिर्यंच जीवनो कांइ मुखथी बोले पण नहीं, के अमने दुःखछे किंवा सुखछे. ते कोने कहे ? जन्मपर्यंत बीचारां बंधनमां रहे, मनमां घणां कल्पे, घणी भूख, तृषा सहन करे, ते उपरांत वली जे माणस वेचातु ले, ते निरपराधें मारे, मार मारे, ए रीतें बहु बंधनादिक अनेक दुःख पामे, पंखी पण पांजरामां पडे, अने मनमां घणुं दुःख माने. वली शकरा, बाज, शिकरी, ए तो महा हिंसानां हेतुछे. एओथीतो नित्य परमांस विना रहेवुं जाय नहीं. ए माटे केशवाणिज्य पण, जे धर्मरुचि श्रावकछे ते श्रावकने तो त्याज्यछे. इति केशकुवाणिज्यं.

५ पांचमुं विषकुवाणिज्य. ते सोमल, वछनाग, अफीण, मनशिल, हरताल, गांजो, भांग. धतुरा, तंबाकु प्रमुख. तथा हथीआर ते धनुष, तरवार, कटारी, बरछी, तोमर, फरसी, कुहाडा, कोदाली, बुगी, ढाल, कवच, बंदुक, दारु, गोली, दाह, खंजर, पावर, जिरह, तोप प्रमुख जेना वपराशे संग्राममां मनुष्य, जनावर मा

य, तथा हल,मुशल,उखल,कोश, कोदाली,दंताली,करवत,दातडा, दात्रा, ठीनी, नाल, गोला, हवाइ, कुहुक, शतघ्नी प्रमुख सर्व हिं सानां अधिकरणछे. एउनो जे व्यापार, ते विषवाणिज्य कहेवाय. अहींयां शिष्य प्रश्न करेछे के, अमल प्रमुख विषने तो विष क ह्युं पण धनुष्यादिक हथीयारने विष केम कहोछो? ते वारें गुरु क हेछे के सांजल, तुं तत्व नथी पाम्यो. जे विषथी काम थायछे, ते एनाथी पण थायछे. विषें करी मरता प्राणीने तो कोइ माणस, तेनुं विष उतारी पण शके, परंतु शस्त्रनो मार्यो तो कोइ बचे प ण नहीं. तथा ज्यारें हथीयार ले, त्यारें तेना विषरूप परिणाम थाय. जेम जेम जलद शस्त्र होय, तेम तेम खुश थइने तारीफ करी मूल्य लइने वेचे, तेथी आगलानो परिणाम पण बगडे. ए मा टे हथीयारने पण विषरूप कहीएं. ए विषवाणिज्यमां वखनागछे, ते तो एकेंद्रियादिकथी मांमीने पंचेंद्रिय पर्यंत जीवोनो घात करेछे. सोमल तो वली एथी पण वधारे घात करनारोछे. जे सोमल खाय, ते घणुं कष्ट पामे, मरीने दुर्गतिमां जाय. विष खाइने जे गतिमां उपजे, त्यां पण विषरूप थाय. जो क्रोधथी विष खाय, तो मरीने सर्प थाय, कां वींछी थाय. अथवा फेरी जीवोमां उपजे. ए माटे तेनुं फल पण विषरूप थाय छे. तथा विषवस्तुना गंधथी जीवनो नाश थाय. हरताल अने मनशिल ए पाणीमां वाट्यां होय, ते उपर आवीने माखी बेसे, तो ते संताप पामीने तत्काल मरे. अफीण पण ज्यारें खाय, त्यारें आत्मघात करे. अमलीना शरीरनुं मल मूत्र पडे, त्यां त्रस अने स्थावर जीवो हणाय. खानारनी चेतना मुंजाय. तेथी दु र्ध्यान थयो थको मरीने दुर्गतिमां जाय तथा भांग प्रमुख पण चे तनाने मुंजावे. रात्रीभोजनादिक अविरति पणुं वधारे, अब्रह्मचर्य घ णुं करे. तेथी ते असत्यपणुं वधारे. व्रतनी दृढता जति रहे, कषायनी वृद्धि करे. तुछ पणुं आवे, निद्रा वधारे, मतिनी अज्ञानता करे, सा

री तबीयतने बदलावे, निरुद्यमी थाय, परनिंदा अने वाचालपणुं वधारे, मुखथी गमे तेम वचन बोलतो आवुं पाछुं न जुए, चित्त भ्रम थयेलानी पेठें अवस्था थाय, तेना आश्रित बहु जीवने हणावे. इत्यादि अफीण खाधाथी आलोकें दुःख अने परलोकने विषे गह न दुर्गतिमां पडे, ए माटे विष कह्याएं. तथा सर्व हथीयार तो प्र गट पापना हेतुछे. ए माटे विषवाणिज्य निषिद्धछे. इति विषकुवाणि ज्यत्याज्यस्वरूपं ॥ एटले पांच कुवाणिज्य थयां. ए सर्व मली दश थयां. हवे पांच सामान्य कर्म कहेछे.

१ तेमां प्रथम यंत्रपीलनकर्म. ते घाणी, शेरडी पीलवानो शीं चूडो, चरखा, चरखी, लीसा, उखल, मुशल, कंगइ, सावरणी, वेगडीयंत्र, सराण, जलयंत्र, पातालयंत्र आकाशयंत्र, कोलिकायं त्र प्रमुख यंत्रजाति, शतघ्नीयंत्र प्रमुख जे जे काष्ठ, पाषाण, लो ह, वस्त्रादि अनेक अनेक अंगमेलापथी जे जीवघातकारक प दार्थ होय ते यंत्रपीलनकर्म कहियें. ए यंत्रपीलनकर्ममां घ णो आरंजछे. घाणीयंत्रमां तिलादिमिश्रित जे त्रस जीवो होय, तेनो घात थाय. एवीज रीतें रक्षपीलनकर्मयंत्रमां पण अनेक जीवघात छे. एम जे जे यंत्रछे, ते मुकरर करीने जीवघातना हेतु छे, एमाटे आजीविकाहेतुयें यंत्रपीलनकर्म निषिद्धछे.

२ बीजुं निर्लंछन कर्म छे. ते एमके, बलदनुं नाक विंधावे, घोडाने डाग देवरावे, गाय, बलदना कान कपावे, शिंगडां छेदावे, पुछ छेदावे, उंटनी पीठ उपर लदावे, गाल नासिका प्रमुखने विं धन करावे, बलद घोडाने खासी करावे, डाम देवरावे, खोज क रे, करावे तथा कोटवाली खिजमत लेइने नवो कर वेसाडे. इजा रो लेइने आकरो कर वेसाडे, चोरधाडमांवासीनी पेरें दोडा दोडी करे, मनमा एम जाणे के मारुं नाम जगत्मां प्रसिद्ध थाय; ए माटे निर्दय शस्त्र चलावे. इत्यादिकनो रसिक थइ जे नरसां कार्य

होय, ते, करे तेने निलंछन कर्म कहीयें. ए निलंछन कर्ममां घ
णा पंचेंद्रियोने कदर्थना थाय; घात थाय. आपणा परिणामम
ध्यें अतिनिर्दय पणुं थाय. अने एथी करी, दुर्गति प्राप्त थाय.
ए माटे ए निलंछन कर्म अति निषिद्धछे.

३ त्रीजुं दावाग्निदान कर्म. ते केटलाएक जीव मिथ्यात्व अने
अज्ञानना जोरथी विपर्यास कहेछे के, आ वन घणुं मोहोटुं थ
इ गयुंछे, जिह्वादिक लोको दुःख पामता हशे; ए माटे ए वनने
दव लगाडी दइयें तो बधुं वन बलीने साफ थइ जाय,अने एथी महा
धर्म थशे. फरी नवी कुंपल निकलशे, ते वृक्षो ज्यारें फलशे त्यारें
लोको तेनां फल फूल खाशे, एथी धर्म थशे. एवो उपदेश दे तथा
देवरावे. वली वनमां दव लगाडवाथी धरती माताने बोजो उतरशे,
ते जग्या खाली थशे, त्यारें तेमां धान्य निपजशे, खेती नवी निपज
शे अने लोको सुखी थशे. वली जूनांतृण, काष्ट, वली जशे अने
नवां तृण रस भर्यां थशे, तो एने गाय,वाछरडां सहु सुखथी चरशे.
वली बलेली भूमिमध्यें धान्य पण सारुं नीपजशे. एवी रीतें मूढ
पुरुष, पोतानी मातवरी देखाडे. लोकनी लगनथी पापकर्म करतो
शंका पामे नहीं. वली चोर चखार जिह्वनो एमां वासछे,ए सौनो भय
मटी जशे. एवी न्यायरीतीथी वनमां दव लगावे, वनकटी करावे
तथा आजीविका निमित्तें महोटां महोटां गहन वन, जेमां आववुं
जवुं दुष्कर पडे; ते माटे पण वनने अग्निसंस्कार करे, त्यारें
त्रसजीवो वाघ, रींछ, चित्ता, गेंडा ए सर्वे भागी जाय. पोताना
स्थानथी छूटे. सर्पादिक भुजपरिसर्प्प, वली कीडी, मंकोडी प्र
मुख तो सर्वे हणाय. एवुं मनमां न आवे के, वनने अग्निसंस्कार
करतां, ए जीवो हणायानुं पातक आपणने चढशे? तेम तो क
हेज नहीं पण कहे के, वनमां दव दीधाथी सुखें हरवुं, फरवुं त
था आववुं जवुं थशे. रस्तो सारो थशे. पण एवी हिंसा निश्चयें

नरक गतिमां पहोचाडे. एमा संदेह न करवो. अहींयां केटली एक पालसो, गुलाब, वालो, लकडी, इत्यादिक वनस्पति नवी नीपजे. परंतु ज्यारें पहेली जमीनमां अग्नि दिये ने जमीन वलीने साफ थाय, त्यारें प्रवल योनि थाय तेथी वनस्पति सारी उत्पन्न थाय, ते पण दवदान कर्म एमांज आवे, ए माटे व्रती थइने धर्मरुचि पुरुष एवो उपदेश, पोतें कोइने दिये नहीं, अने बीजा पासें को इने पण एवो उपदेश देवरावे नहीं. इति दवदान कर्म.

४ चोथुं शोपणकर्म कहेछे. ते सरोवर, तलाव, अने द्रह प्रमु ख जलाशयोने शोषावे. पाणीने बहार कढावे; त्यारें मिथ्यामति, अज्ञानी, लोभांध थइ विपर्यास बुद्धियी धर्म बतावे, त्यहां लो भी, पोताना क्षेत्रमां धान्य थवानानिमित्तें जलने वहेवरावे. अने कहे के, शेरडी वहु तरशीछे ते माटे आ तलाव, क्षेत्रनी साथें मे लवीएं एथी करी धान्य नीपजे. एवी रीतें पाणी लइ जाय. पछी कादव रहे. तेमां जलजीव मछादिक अनेक त्रस जीवो भूखथी अ ने तापथी अवश्य मरी जाय. तथा त्यां मांसार्थी दुष्ट लोक आवी मछादिक जीवोनो घात करे. तेम छतां ते मूढ पुरुष, धर्मबुद्धियी एम कहे जे ए पाणी गंधाइ गयुंछे तेथी ए पाणी पीनारने रोग थायछे. ए माटे आगलुं पाणी घणा दिवसनुं छे, ए हाल कहाढी नाखीयें. अने नवुं सारुं जल आवशे, त्यारें ते पाणीयें जलाशय भराशे. एम कुतर्क करे पण एम न जाणे के, आ कोटान्कोटी जीवनो संहार थशे. तथा कूपनी सेर वंध थइ गइ. तेने खुलावीने पाणी कहाडी नाखो के जेणे करी बीजुं सारुं पाणी आवशे, त्यारें पीशुं. आगलथी एवी अधर्मबुद्धि करे, अने पछी कहे के एमां पुण्य छे. एवुं शोपणकर्म पण समजु पुरुष, न करे. अने करावे पण नहीं ॥ इति चोथुं शोपणकर्म.

५ पांचमुं असतीपोषणकर्म. ते कौतुक अर्थें असती जानवर

कुतरां, बीलाडां, मरघां ने सूडा, मोरने पाले, बीजा पण केटला एक जीवो कौतुकने अर्थे बंधनमां राखे, पंखी जीव जे दुष्ट होय, अने बीजां पंखीनी हिंसा करे, तेवा पंखीने पाले, तथा दुष्ट भार्या अने दुष्ट पुत्रादिकने मोहें करीने गाढ पोषे, साच जूठ न गणे अने जेम तेम करी तेउने खुशी राखे तथा वेचवाने माटे दास दासीनुं पोषण करे, ते पण असतीकर्मछे. तथा भाठी, कसाइ, वाघरी, चमार प्रमुख बहु आरंभी जीवनी साथें व्यापार करवो, एउने द्रव्य खरची प्रमुख आपवी, ते पण दुष्ट जीवनुं पालण थयुं. अहींयां थो डाने माटे घणुं पाप माथा पर लीए ए माटे ए कर्म निषिद्धछे. अ हींयां अनुकंपायें श्वान प्रमुख अथवा काक प्रमुख जीवने देवुं, ते पुण्य हेतुयें देवुं; तेनो दोष नथी, अने पोताना महोल्लामां जे जी व थया, तेउनी खबर लेवी तथा लोक रीतियें तथा नीति माफक पोताना पाप कुटुंबनुं भरण पोषण करे. एमां कोइ दोष नथी. ॥ इति असतीपोषणकर्म पांचमुं ॥ इति पंदर कर्मादान कथनं.

॥ हवे कर्मादान राखवानी विगत लखेछे.

१ अहींयां अंगारकर्मनी आजीविका निषिद्धछे, ए माटे अंगारकर्म न करे तो पण गृहस्थ छे तेनाथी निरवशेष छोड्युं जाय नहीं ए मा टे एनी समज करी ले. पोतानी शक्ति प्रमाणे विचारीने रूपुं सोनुं ग लाववुं, तेना घाट कराववा, सिका पडाववा तथा तपाववुं प्रमुख वर्ष प्रत्यें आटलुं करवुं, तेनो नियम राखे तथा वस्त्र जे अग्निपक्व रंगमां रंगाववुं, तेनुं मान राखे. तथा इंट, चूनो, विगेरे घर कामने माटे लेवानो आगार. व्यापारने अर्थे लेवानो निषेध. एमा पण पो ताने माटे इंट प्रमुख लेवामां आवी होय, एवामां कोइ संबंधी तथा मित्रादिक महोवतवालो तेमाथी मागे ने देवुं पडे ने तेनी किम्मत प्रमाणे पैशा लेवा पडे तेनो आगार. तथा भाडभुंजानुं कर्म, घर कुटुंब संबंधी कराववुं पडे, तेनुं वर्षप्रत्यें परिमाण राखे.

केशेर, पांच शेर, अधमण अथवा मण पर्यंत सर्व धान्य शेकाववुं प डे, तेटलुं छूट राखे. अग्निकर्मनी चीज लेवा देवामां आवे, तेने अ ग्निकर्म करावबुं पडे, तेनो आगार. तेने वेचवानो आगार. बीजुं सर्व निषिद्ध छे. कंसारा, ठंगारा तथा लोहार प्रमुख पासेथी घर संबंधी वाशण कुशण प्रमुख करावे, तेनो आगार. लज्जा, दाक्षि ण्य, कुटुंबादि कार्यें सहाय आपवानी, आदेशादिक देवानी जयणा.

२ तथा वनकर्ममां घरसंबंधी बलद, घोडा, गौ, उंट प्र मुखने वास्ते घांस प्रमुख राखवां तथा मंगाववानी जयणा. पो ताना बगीचाने माटे उत्तर प्रत्युत्तर देवानो आगार.

३ शाडीकर्म मध्यें नाव, गाडी, ठकडा, वेल, रथ, वलद जे घरना होय तेने सुधारवा पडे, तेनो अगार. निकामां शकटादि क होय, तेने वेचवानो आगार, लहेणामां आव्यां होय तेने राखे अथवा वेचे, तेनो आगार.

४ चोथुं जाडीकर्म. तेमां पोतानां घर, हाट, नाव, गाडी, हरेक वाहन प्रमुखने जाडे देवानी जयणा. तेनो पण आगार.

५ फोमीकर्ममां पोताना घरसंबंधी कूछ, जोंयरुं, टांकुं, ताजखा नुं प्रमुख करावबानो आगार. घरनी खाल करावबानो आगार. तथा घर करावबानो आगार तथा जवाहीरनो व्यापार, घरसंबंधी नंग, घाट घूटने माटे तोडावबुं, फोडावबुं तथा मोती विंधाववां, तथा घरने माटे पत्थरनी खाण कढाववी, ते पत्थरनो घाट घडाववो पडे, तेनी जयणा. लज्जा, दाक्षिण्यें, साहाय्य करवुं पडे तेनी जयणा. घर खरचमां फोडीकर्म जे जे आवे, तेनो आगार.

६ छठा दंतवाणिज्यमां घरखरचने विषे पोताना जोगना अधि करणमां लेवा मंगाववानो आगार. आगल व्यापारनी विगतमां जे परिमाण करी छूट राख्युं होय, तेनी जयणा. लेणा देणामां आवे, तेनी सरजरा करवानो आगार.

जयणा तथा घरखरचमां जे जंत्रपीलन आवे, तेनी जयणा.तथा पोताना अंगना जोगादिक निमित्तें अत्तर चूआ प्रमुखना यंत्र,तथा रोगादिक कारणे कोइ औषध करवानो यंत्रकरवो, कराववो पडे, तेनी जयणा. लज्जा दाक्षिण्यें तथा फरमाशें नहीं छूटतां जे करवो पडे, तेनो आगार. इति यंत्रपीलनकर्म.

१२ बारमुं निलंछनकर्म. तेनो व्यापार करवो निषिद्धछे. पण कोइ राजादि, आग्रह करीने अधिकार आपे,तेमां जे निलंछन कर्म आवे, तेनो आगार. तथा घरसंबंधी पशु बालकादिकने करखुं पडे, तेनो आगार. लहेणामां आवे तेनी तजवीज करवी पडे, तेनी जयणा.

१३ तेरमुं दवदानकर्म. तेनो निषेधछे, पण रस्ता वच्चें एटले मार्गे जतां कोइ ठेकाणे रहेवुं थाय, त्यां रसोइ प्रमुख करतां वायुना प्रयोगें करी यत्न करतां पण अग्नि, वनमां पसरी जाय, तेने उंलववानी शक्ति नथी तो मारुं व्रत एथी न जांगे. ए अग्नि उंलववानी शक्ति होय, तो हुं ते अग्निने शांत करवामां आलस करीश नहीं. वली घरखरचमां कोइ रीतें दवदान कार्य करखुं पडे, तेनी जयणा. इति दवदानकर्म.

१४ चौदमुं शोषणकर्म. तेमां सरोवर, ड्रह, तलाव प्रमुख जलाशयोने शोषाववानो निषेध, परंतु घरप्रमुखना कूवाने सुधार वा गलाववानो आगार, टांकुं धोवानो आगार. नदीमांवीरडो करवो पडे, तेनो आगार. बीजा पण घरसंबंधी कार्यमां जे महोल्लामां रहेता होइएं, तेमांना उचित पंचनी सरासरीयें कूवाने निमित्तें कांइ खरच देवो पडे, पाणी सारुं पीवा माटे आगलना कूवाने शोषावीने नवो करवो पडे, तेमां तेना खरच निमित्तें पंचनी सरासरीएं कांइ खरच आपवुं पडे, तेनो आगार. इति चौदमुं शोषणकर्म.

१५ पंदरमुं असतीपोषणकर्म. तेमां घर परिवार संबंधी न छूटे, तेनी जयणा.पण चाह धरीने, तेउंनुं पोषणकर्म न करुं. प

७ सातमुं लाखवाणिज्यकर्म तेमां पण दंतवाणिज्यनी परें जा णवुं. घरखरचने माटे कोइ कार्य पडवाथी लेवुं वेचवुं पडे, तेनो आगार. इति सातमुं लाखवाणिज्यकर्म.

८ आठमा रसकुवाणिज्यमां घरखरच संबंधी जे परिमाण क री राख्युं होय. तेनो आगार. व्यापार संबंधी जे राख्युं होय,तेनी जयणा. लहेणामां आवे तेने वेचवानी जयणा. लज्जा दाक्षिण्यथी केफरमासथी सरजरा करवी पडे, तेनी जयणा तथा आपणी तेण्या र बीज कोइ सारा माणसें मागी तो यथायोग्य ते वस्तुनुं मूल्य लेइने देवी पडे, तेनो आगार. इति रसवाणिज्य आठमुं.

ए नवमुं केशवाणिज्यकर्म. मूल आजीविका हेतुयें आदर करी व्यापार करवानो निषेध. घरसंबंधी पशु वेचवानो आगार. लहे णामां आवे, तेने राखवा वेचवानो आगार. घरमां पुत्रादिकना उपरोधें करी तोता, मेनां प्रमुखने लेवां पडे तेनो आगार. पोताना जोगनिमित्तें घोडा प्रमुख वेचीने, बीजां लेवां पडे, तेनो आगार. कोइ संसारीने स्नेहथी उचित घोडा प्रमुख खरीद करी देवानो आगार. राजादिकने प्रसन्न करवा माटे कोइ जातिनां चतुष्पद वे चानां लेइने नजराणो करवानो आगार. फरमासें करी केशवाणि ज्यनी न चाखनां सरजरा करवी पडे, तेनो आगार, ए केशवाणिज्य.

१० दशमुं विषवाणिज्य. ते ए के, जे जे आगल व्यापारमां राख्यां होय, तेनो आगार. तथा घर खरचमां जे विषबीज औ षधमां आवे तेनो आगार. तथा पोतानी मोजने माटे घरखर चीनां जे जे शस्त्र लेवामां आवे, तेने राखवानो आगार. वली ते राखवां, समरावां तथा मंगाववां पडे, तेनो आगार. लहेणामां आवे तेनी जयणा. इति दशमुं विषवाणिज्य.

११ परिमाण राख्युं यंत्रपीलनकर्म. तेमां आगल जे जे व्यापारने आवे, तेनी ... ते व्यापारमां जे जे यंत्रपीलन क्रिया आवे, तेनी

रिग्रहपरिमाणमां पण राख्यांछे, तेउने पोषण करवानो आगार. तथा म्लेछादिक राजानी साथें व्यापार आजीविका अर्थे, पोतानी गरजने माटें आहारादिकें पोषण करवुं पडे, तेनो आगार, पण पोतानी इछाथी छूट नथी, तथा पोताना उदयिक भावथी मल्युं जे पाप कुटुंब, तेउनुं भरण पोषण करवानो आगार; पण एथी करी हुं मह्यारो अवतार सफल थयो, एम जाणुं नहीं. तथा लह्येणामां आवे तेनुं प्रतिपालन पोषण करवुं पडे, तेनो आगार. दया बुद्धियें श्वानादिकने पोषवानो आगार. एवी रीतें पंदरे कर्मादान दोष तजुं. ए पंदर कर्मादानमां जे जे चीज घरसबंधें, दाक्षिण्यता संबंधें, इत्यादि न चाखतां लह्येणा प्रमुखमां आवे, ते कारणें तेमां जे कर्मादान क्रिया करवी पडे तेनी जयणा. अहींयां जे कर्मादान राख्यांछे, एमां एकेक कर्मादानमां बीजां बे, त्रण, चार, कर्मादान भलतां आवे, तेनी जयणा. इति पंदर कर्मादान राखवानी विगत.

हवे ए सातमा व्रतना पांच अतिचार लखेछे. सचित्तेति–

१ त्यां प्रथम सचित्त आहारनामा अतिचार छे. ते मूल भांगे तो श्रावकने सचित्तत्याग नियम होय. कदापि तेम नहीं तो, सचित्तनी संख्या करी राखे. त्यहां सर्व सचित्तनो परिहार करे अथवा सचित्तपरिमाणवंत थाय. वली कोइ अनाभोग दोषथी सचित्त आहार करे, तथा अपरिणतोदक तो त्रण उकाला पाणी उपर आवे, त्यारें शुद्ध पाणी थयुं. तेमां एक, बे उकालानुं पाणी अपरिणतोदक कहेवाय. ते पाणी अचित्त थयुं, एवुं जाणीने पीए तथा सचित्तने फासु करतां कहीं काचुं रही जाय, एने पण अचित्तबुद्धियी खाए. श्रावकने तो सचित्त चीज अचित्त करवाने अछी तरेहथी शस्त्र लागे, त्यार पछी अंतर्मुहूर्त वीत्या केडें खाए. त्यां अचित्तबुद्धियी सचित्तने खाय, अथवा अनाभोगादिकें खाय, तो ते प्रथमातिचार, सचित्ताहारनामा जाणवो.

२ बीजो सचित्तप्रतिबंध अतिचार. ते जेने सचित्त नियम ठे, ते तरतनो उखाडेलो एवो जे खेरनी गांठनो गुंदर प्रमुख ते ने खाय. ते त्यहां गुंदर तो अचित्त ठे पण सचित्तनो स्पर्श था ग्यो हतो, ते दूषणठे. तथा पाकी केरीना समुदायने चूसे, रायण घोर, समुच्चय सहित मुखमां मेहेले, अने मनमां उपयोग एवो आणे के में तो ए फल पाकुं चूसुंठे. ए अचित्त थयुं एमां शो दोष ठे ? पण एवो उपयोग न जाणेके ए फलनी अंदर, गोटली स चित्तठे. ए माटें सचित्त त्यागी होय, ते एवी चीज अचित्त बुद्धि एं खाय; त्यारें तेने बीजो अतिचार लागे.

३ त्रीजो अपक्काहारातिचार ते अचालित आटो प्रमुख तेणे अग्निसंस्कार न कस्यो होय ने काचो आटो फाके. जे कारण माटे श्री सिद्धांतमां आटो, दख्या पठी केटला एक दिवस, सचि त्तमिश्र रहेठे, पठी अचित्त थाय, एवुं लख्युंठे. श्रावण जाडवा मां आटो, दख्या पठी पांच दिवस सुधी अण ठाण्यो सचित्त मिश्र रहे, आश्विन मासमां चार दिवस सचित्त मिश्र रहे. कार्तिक, मा गशीर्ष अने पोष महीनामां त्रण दिवस, सचित्त मिश्र रहे. मा हा अने फागण महीनामां पांच प्रहर, सचित्त मिश्र रहे. चैत्र वैशाखमां चार पहोर सुधी, सचित्त मिश्र रहे; पठी अचित्त थाय. ज्येष्ट आषाढमां आटो, त्रण पहोर सचित्त मिश्र रहे; प ठी अचित्त थाय. ए माटे काचो आटो अण ठाण्यो अचित्तनी बुद्धिएं खाय, तो तेने त्रीजो अतिचार लागे.

४ चोथो दुप्पक्काहारातिचार. ते कांइ काचो, काइ पाको ए वो, जेम सर्व जातिना ढंला, पोंक ठंबी, जुवारनो पोंक इत्यादिक सर्वजातिना लीला पोंक थीजथी परेला ते अग्नि संस्कारमां केट ला एक दाणा अचित्त थाय, केटला एक दाणा सचित्त रहे अने ते

ने अचित्त बुद्धिथी जाणे,केमके अग्निसंस्कार थयो त्यारें अचित्त थया; एवुं जाणी खाय, तो तेने चोथो डुप्पकाहारातिचार लागे.

५ पांचमो तुच्छौषधिजक्षणातिचारछे,ते तुछ एटले असार,जेना खावाथी कांइ तृप्ति न थाय अने आरंज तो घणोज थाय. जेम घोडा प्रमुखनी अति घणी असार छीमी, जे बोडानी अंदर थयछे, एना खावाथी कांइ आत्मानी क्षुधा प्रबल जांगे नहीं अने प्रसंगदोप लागे. वली कोमल वनस्पतिमां कोइ रीतेंथी अनंतकायनी शंका रहेछे. रसरुद्धिपणुं वधे. कोमल फल फली प्रमुखने अचित्त करीने खावानो व्यवहार पण नथी. ए माटे घोडा प्रमुखनी कोमल फली खाय अने मनमां जाणे के, बोडानी फली तो मारे खावी योग्यछे. एवुं जाणी करीने खाय; पण एम न जाणे के तुछौषधिजक्षण दोप लागेछे. इति पांचमो अतिचार. ए पांच अतिचार जाणवा, पण आदरवा नहीं.

इति श्री द्वादशव्रतविवरणे सप्तम जोगोपजोगविरमणनामा द्वितीयगुणव्रते पंमित श्रीउद्योतसागरगणिना कृतजाषा संपूर्णा ॥ ७ ॥

॥ अथ ॥

॥ अष्टम अनर्थदंम विरमणव्रत प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

द्वादश व्रतकी टीपमें, कहे सात निरधार;
अष्टम अनर्थ दंमका, जेद लिखुं सुविचार ॥ १ ॥

१ प्रथम अर्थदंम. एटले जे सप्रयोजन धन धान्य क्षेत्रादिक नव विध परिग्रह संबंधि हानि वृद्धिरूप. जे कारण माटे धनवृद्धि निमित्त संसारी जीवनें घणां पापनां कारण सेववां पडे,तेवारें साचुं जुठुं बोल्या विना रहेवातुं नथी. पापोपकरण मेलववां पडे छे, मनसुबा करवा जोइयें अनेक विकल्परूप आर्त्तध्यान करवुं

पडे; जे कारणे धनादि परिग्रह, आजीविका हेतुयेंछे. ए मा
धनवृद्धि निमित्तें जे जे आश्रवसेवन करवुं पडे, ते सप्रयोज
छे, ते कारण माटे ए अर्थदंडछे.

२ बीजुं एमज ज्यारें धनहानि थाय, त्यारें पण एवुं कार
पामीने गृहस्थने ते धनहानि निवारवाने अर्थे अनेक निकट
करवा पडे, पापनां स्थानक सेववां पडे, ते पण अर्थदंडछे, जे क
रण माटे संसार संबंधी सुखनुं मूलकारण व्यवहारें तो धनज
ए माटे एने वास्ते आत्मा दंडाय, ते अर्थदंडछे.

३ तथा त्रीजुं पोतानां स्वजन कुटुंब परिवारादिकने वास्ते तथ
आवरुना योगें जे जे अवश्य, पापस्थानक सेववां पडे, ते पण अ
दंडछे, जे माटे ज्यांसुधी प्रबल कषाय निवार्युं नथी, त्यांसुध
स्वजनादि पाश छूटे नहीं. संसारमां इंद्रियसुखनां पुष्टहेतु ए स
जनजछे, व्यवहारमां हेतु कहेवायछे. आपणा सुखें सुखी, अ
आपणा दुःखें दुःखी. एमाटे एउने सारु पापस्थानक सेवे, ते प
एक अर्थदंडछे. जे माटे संसारी जीव, पुद्गलविलासी, पुद्गला
दीछे. ते प्रबल अविरतिकषायोदयथी एउने छोडी शकतो नथी

४ अने चोथुं पंचजोगना आसेवनथी केटली एक वेला इंद्रि
यो तृप्त रहेछे. आत्मा प्रमुदित रहेछे, ते पण अर्थदंडछे. ए चार
प्रयोजनमां कोइ पण प्रयोजन होय नहीं, अने जे पापवृत्ति करे
ते अनर्थदंड कहेवाय. कारणविना फोकट ज्यहां ज्यहां आत्मा
दंडाय, तेथी जे जे दुष्कर्मनी वृद्धि थाय, ते अनर्थदंड कहेवा
य. एना चार भेदछे, ते लखेछे.

१ प्रथम अपध्यान अनर्थदंड. २ बीजो पापोपदेश अनर्थदंड.
३ त्रीजो हिंसाप्रदान अनर्थदंड. ४ अने चोथो प्रमादाचरित अन
र्थदंड. तेमां अपध्यान अनर्थदंडना बे भेद छे. १ एक आर्त्तध्या
न. २ बीजो रौद्रध्यान. त्यां वली प्रथम आर्त्तध्यानना चार भेदछे.

तेमां १ प्रथम अनिष्टसंयोगार्त्तध्यान. २ बीजो इष्टवियोगार्त्तध्यान. ३ त्रीजो रोगनिदानार्त्तध्यान. ४ अने चोथो अग्रशोचनार्त्तध्यान.

१ तेमां इंद्रियसुखने विघ्नकारि अनिष्ट शब्दादिक तेउंना संयोगनी त्रणे काल चिंता रहे के,रखे मने ए अनिष्ट शब्दादिक मले ? आ मने नवविध परिग्रह जे मल्याछे, तेउंनो रखे वियोग पडे ? अथ वा इष्ट एटले वाहालां माता, पिता, स्त्री, पुत्र अने मित्र प्रमुख नुं विदेशगमन अथवा मरण थाय, तेणे करी घणी चिंता करे, खाय पीए नहीं. वियोगनां दुःखें करी आत्मघात करवानी चिंतव ना करे, आदरे, आखो दिवस गुस्सामां रहे, तथा घरमां आ कपुत छे, ए जाइ, वे दिलछे, ए वापनुं दिल मारा पर नथी, आ स्त्री न गरी मली छे, ए स्त्री माराथी वेदिली करे छे, एनो कशो उपा य पामुं तो ठीकछे. एमज स्त्री विचारे के, मारी शोक्य मने चूंनी मलीछे, भर्त्तारने जोखवे छे, कोइ दिवस भर्त्तारने माराथी जूदाइ करावशे, ए माटे एनो कांइ उपाय पामुं तो सारुं थइ जाय. सेव क होय ते एवुं विचारे के स्वामिना महोढा आगल फलाणो महा रो दुश्मन चढ्यो छे, ते मारो नाश करशे, मारी राह रीति छे ते गमावी देशे, स्वामिने कांइ मारुं साचुं जूठुं कहेतो हशे, मारी चा करी छोडावशे, त्यारें हुं शुं करीश? एनो कांइ उपाय पामु तो सारुं छे. एना निग्रहने माटे कोइ यंत्र, मंत्र, कामण, मोहन, वशीकरण शोधे. कोइ साचुं अथवा जूठुं तेनुं छिद्र ताके, तेने अछतुं आल दे, लोकोना मुख आगल तेनुं बुरुं बोले. वली ते पूछतो फरे के, एनो निग्रह करवावालो कोइ छे? तेवामां कोइ धूर्त्त जटिल प्रमुख बो ली उठे के, *फलाणा त्रस जीवनो घात करीने बलिदान कर, तो श त्रुनिग्रह होय.* ते सांजली ते मूढ, ते जीवघात पण करे अने ते पुरुषनुं मरण वांछे; पण मूढ एम न विचारे के, जे पोताना शुद्धमार्ग अने साचे दिलें सेवा करशे, तो तेने कोण काढी मे

लशे ? पुण्योदय ज्यां सुधीछे, त्यां सुधी कोइ बुरुं करी शके नहीं. ए प्रमाणे जूठी आर्त्ति विचारे. इत्यादिक सर्व संबंधें संसारी जीव, अनर्थे दंमायछे. तथा आगलथी पोतानी आतुरतायें अशुज कारण मळ्या विना प्रथमज मनमां कुविकल्प करे, जे दुश्मनना कुलमध्यें फलाणो सामर्थ्यवान् पेदा थयोछे, ते मने दुःख देशे; एमाटे राज्य द्वारादिकें एनी आवरु जाय, अने दंम पामे तो सारुं थाय. जो ए घणी तस्दी पामे, तो ए गाम ठोडी करीने जागी जाय; एनुं जो कोइ छिद्र पामुं तो फलाणाने कहुं; अने ते राजदरबारमां जाहेर करे, एटले पोतानी मेले दुःख पामशे. एवी विचारणा ते मूढ करे, अने ते जेने वेरी गणतो होय, तेना दिलमां तो कांइ पण होय नहीं; परंतु ए अज्ञानी एवा अनर्थमां पडे.

वली बीजुं पण ते मूढ विचारे के, ए क्षेत्रमां चोर घणा थया छे. एर्डने हाकेम, ठानी फोज राखीने ए चोरो ज्यारें एना दावमां आवे त्यारें सर्वनो निग्रह करे, तो सारुं थाय. पण ते चोरोनो तो ज्यां लगी पूर्वपुण्योदय प्रबलछे, त्यांसुधी एर्डनुं कांइ पण वगडे नहीं; परंतु ते कुविकल्पवालो जे चिंतवेछे तो तेने चोर मारवानी आर्त्तध्याननी हिंसाक्रिया वेही. वली कोइ अमुक मातबर थयोछे ते, ए आपणी बरोबरी करशे, अमाराथी आगल पग धरशे, ए माटे ए हरामजादानो एवो उपाय करवो के, एने फरी उपर आववाने दाद फरियाद लागे नहीं. इत्यादिक अनर्थोने वेगो वेगो विचारे, पण ते मूर्ख मनमां एवी विचारणा न विचारे के, मारे कह्ये शुं थवानुंछे ? एनो पापोदय थशे, त्यारें पोतानी मेलें होण हार हशे, ते मटवानुं नथी; तो शा माटे ए विचारवुं ? इत्यादिक अपध्यानार्त्त अनर्थदंक छे. विना मतलब एवी रीतें पापजाल पोतें बांधे, ए अनिष्ट संयोग अने इष्टवियोग बे आर्त्तध्यानना जेद कह्या.

३ तथा त्रीजो रोगनिदानार्त्तध्यान. जे रखे मारा शरीरमां कदा

पि कोइ वखत रोग थाय ? सर्वरोग माराथी दूर रहे तो सारुं? एवुं विचारीने कोइने पूछे के फलाणो रोग केम करी थायछे ? त्यारें ते कहेके, फलाणी चीज खाय तो उतावलें रोग थायछे, अने फलाणी अजक्ष्य वस्तु खाय, तो कदापि पण रोग थाय नहीं. त्यारें ते अजक्ष्यादिक खाए, वली ते बीजाने बतावे. तथा ज्यारें शरीर मां रोग उत्पन्न थाय, त्यारें घणी हाय हाय करे, घणो आरंज करे. घणुं ड्रव्य खरचे, अने विलाप करे के हाय हाय, आमारो रोग क्यारें जशे !!! वली ते पलें पलें अने घडीयें घडीयें ज्योतिषीने पूछे के, मारी दिनदशा केवीछे ? आ रोगनी व्यथा क्यारें मटशे? वली वैद्यने पूछेके, हे महाराज ! मारा दिलमां महोटी शंकाछे. तमाराथी कांइ कर्त्तव्य छानुं नथी. मारा उपर कोइयें जाडु कर्युं ह शे ? फलाणो माणस मारा उपर खुनस राखेछे. तेणे मारा उपर को इ पासें कांइ जाडु कराव्युं हशे, ते केवी रीतें जशे. कराव्युं होय तो हवे तमे साजो करो. एवी रीतें नवी नवी शंका धरे अने रोग जवा माटे कुलविरुद्ध धर्म आचरे, अजक्ष्य खावाने तैय्यार थाय अने अकरणीय करवाने पण लागे. एना मनसुबामां सदाय एम रहे. ने जे जे रोगछेदननी चीज जडी, बुटी, ओषधि, यंत्र, मंत्र, उतारो, फाडो, हजराय. ए सर्वनी चाहना राखे के ए चीज कोइ वखत मारा काममां आवशे. नजरमां राखे के ए सर्व मारा काम नीछे. एने आपणी पासें अमलमां राखी होय तो सारुं, फरी एवी चीज हाथ नहीं चढशे. एवुं जाणीने ते जडी बुट्टी सर्व एकठी करवा लागे, ए सर्व रोगनिदानार्त्तध्यानछे.

४ तथा चोथो अग्रशोच आर्त्तध्यान. जे आगला कालनी चिंता करे के, आगली शालमां आ विवाहनुं काम करीशुं, एवी तरेहथी विवाहना उछव सरनजाम करीशुं, तथा फलाणा साथें कजियो थाशे त्यारें आवी वातोथी अने आवा जुवापथी एने हरावीशुं.

एवी रीतें काम करीशुं तथा ए मेहेल, हवेली एवी तो बनावी शुंके, तेने देखी करीने सर्व अचंबो पामे, तथा फलाणा पुरुषें क्षेत्र वगीचो वनाव्योछे, तेवो हुं पण वनावीश. अने ते एवो वनावीश के, बीजा सर्वना वगीचा एना आगल नाकार थइ जाय, अने सर्व दुश्मननी छाती बले एवो वनावीश.

तथा वली आ शोदो जे आपणे कर्योछे, ते आगल जतां ज्यारें घणो मोंघो जाव थशे, त्यारें अमें पोताने मोढे माग्युं मूल्य लेइशुं, बीजा कोइनी पासें ए माल नहीं मलशे, तो पो तेंज गरजना मार्या लइ जशे, एवां वचन, आर्त्तध्यानथी बोले, अने विचारे के, एटला पैशानो हाथ मारी लेइशुं. हवे शी फि कर छे ! एवी रीतें दिलमां आगलथी मलकाय.

तथा आ चीज नवी छे, कोइनी पासें नथी. माटे कोइ सारा शि रदार, राजा, पादशाहने ठेकाणे देखाडीशुं तो तेउ पण एने देखी, चा हना करीने लेशे, मने पण मान आपशे, प्यार करशे, उपर शिरपाव मलशे, आपणुं पण काम थइ आवशे, पैशा मोढेमाग्या लेइशुं, अने तेणें करी सारी सारी मोज मारिशुं, अने लोको सर्व जोइ रहेशे. एवा एना मनोरथ प्रमाणे कांइ थयुं तो छे नहीं, अने ते पहेलांज मनमां महामग्न थइ रहे, खोटां कर्म, आगलथी बांधे. आगलथी शुं जाणी यें के शुं थशे ? चीजमां नफो मलशे के नहीं मले ? अथवा ते चीज, कांइ खोवाइ जशे के रेहेशे ? एवी तो खबर रहेती पण नथी, अने वातो करवा थकी कर्म तो साचां बांधेछे. ए पण आर्त्तध्यान.

अथवा महारा घरमां अनाज संग्रह घणो छे, अने आगला व र्षनां चिन्ह मातां देखाय छे. अने ज्योतिषवाला पण एम कहेछे के आगलुं वर्ष बहु निपिद्धछे, ए माटे जो चार दाणा कोइ राखशे तो चार पैशा सारी पेठें मलशे, माटें अवश्य दुष्काल पडशे, तो पण वेचीश नहीं तो धान्यमां बमणो चोगणो नफो मलशे. तो पण नहीं

वेचुं. एम जतां जतां धान्यनो जाव अमारा मनमानतो थशे, त्यां रें आठ गणो नफो, अने ते उपर वली व्याज खाइशुं, त्यारें वेच वानी वात काढशुं. ते वखत पैशा घणा मलशे, त्यारें फरी वली दूर देशांतरथी बीजुं अनाज मगावशुं, तेमां बीजा घणा पैशा मल शे. ए प्रमाणे ड्रव्य वधशे, लाखो रुपैय्यानी मोज करशुं, पठी वली कोइ अनेक तरेहना व्यापार करशुं, आपणी नजरमां सर्व व्यापार ठे, सर्व व्यापारनी आपणने माहिती ठे, कोइ व्यापारमां ठगाइयें नहीं, कोइ शेहेरमां शाहुकार सायें सारुं शोदो लगावशुं, कोइ जग्या यें आपणो गुमास्तो रहेशे, त्यांनी हुंमी अमारा उपर लखी मोक लशे, अने वली त्यहांथी हुंमी विगेरे अमो मगावी लेशुं. अथवा कोइ बंदरथी आपणने गम पडे तेवी चीज मंगावी लेइशुं, तेमां पण चार पैशा मलता जशे. अने कोइ वर्षमां चार पांच रकमो सारी था यशे तो लक्ष्याधिपति, कोटिध्वज नाम काढीने ठचा रहीशुं. तेवारें आपणुं पण नाम सर्वोपरि सर्वशिरोमणि थशे. सर्वरीतें आपण ने आसान थइ जशे, आपण कोइने पण खातरमां नहीं लावशुं. एवामां कोइ ठेकाणे सगाइ लादीनो पण जोग बनी जाय, तो घणुंज सारुं. पठी घर, बार, हवेलीउं, अहीयांज फरी बनावशुं, अने ठोकरां, ठेय्यां सर्वनो योग मली जाय, मनना मनोरथ सर्वे फले. त्यारें डुश्मननी ठाती उपर साहेबी करी मग दलीशुं, त्यारें हैडुं ठरशे. ए शत्रुउं पण दीन थइ रहेशे, एम वली राज्यदरबारमां पण प्रख्यात थइशुं. त्यारें आपणा प्रिय मित्रोने ठंचे अधिकारें चडा वशुं, मुरइउने काढी मेलावशुं. एटले जेम जेम आपणो जाग्यनो थशे, एम एम मननी इच्छा प्रमाणे सर्व करीशुं. जोग विलास सर्व करशुं, अने जो अहींयां अमारी सारी थइ तो पठीज खु शवखती करीने कोइ समयें स्त्रीयादिक पोताना जीवथी गुस्सो करी बेसशे, तो ते समयें तेने मनावशुं, सारी सारी रीतें वस्त्र

२ बीजुं मृषानंदरौद्रध्यान कहेछे. ते एमके, जूठुं बोलीने हर्ष पामे, अने मनमा विचारेके में केवी केवी वात बनावीने कही के जे वात, सर्व लोकोयें कबूल करी? मारुं कपट कोइएं पण न जाण्युं. बीजा कोइने एवी कला आवडे नहीं. एटला महोटा महोटा अक्कल वाला सर्वे मल्या हता पण कोइ बोली शक्या नहीं. में सर्व सवाल जूवाब कस्या. बोलवामां तो घणी करामतछे. बोलवुं ए तो कांइ कामज आवेछे. आ वखतें अमें नहीं होत, तो खबर पडत? ए सर्वेनीशी गति थात? एवी रीतें मनमां फूलाय. वली पोताना डुश्मनने माथे जूठुं तहोमत मेले, अने ते डुःख पामे, त्यारें पोतें हरखायके में एने केवो जेर कस्यो छे? तथा पोताना फरजंदसंबंधी प्रमुखनी आगल वातो बनावी बनावीने कहेके, अरे मूर्खाउं! तमे शुं करशो? अमे केवां केवा फेल कस्यांछे? पण ते कोइने मालमज नथी. पोतानुं फेल कोइ जाणे, त्यारें अक्कल शानी? तथा दरबारमां जइने, चुगली करतां राजानो स्वार्थ करे अने मनमां हरखेके, में राजाने केवो वश कस्योछे? एवा एवा मनमां कुविकल्प करे. इत्यादिक मृषानंदरौद्रध्यान कहीयें.

३ त्रीजुं चौर्यानंदरौद्रध्यान. ते एमके, जड्क जीवोनी साथें कूड कपटनी वातो बनावीने घणा मूल्यनी चीज ठेक थोडामूल्यमां ले, तथा पारकुं डव्य, व्यवहारथी अधिक ले, तथा चोरी करीने कोइनी गुमास्तीमां जूठुं साचुं नामुं मांकी दे, अने पैशा खाइ जाय. कपट कला बनावीने शेठने प्रसन्न करी, पछी मनमा हर्ष पामे के, अमारी केवी कलाछे आटलुं डव्य पण खाधुं अने शेठने पण राजी राख्या. मारुं केवुं रूहापणछे?

तथा व्यापार करे, तेमां जूठा जूठा सोगन खाइने अने मीठुं बोली करीने बीजाने प्रतीति करावीने अधिक मूल्यनी वस्तु, थोडा मूल्यमां ले अने थोडा मूल्यनी वस्तु अधिक मूल्यमां वेचे, तोलमां

ठेवुं आपे,अने वधारे छे. तेथी पोताना घरनां संबंधीथी वधारे क माय त्यारें मनमां हर्ष पामे अने घरमां फूलाय के, मारा घरमां ए चाइ प्रमुखछे, ते सर्व नकाराछे. कोइमां कोइ वातनी सलुकाइ नथी. तो व्यापारनी कला क्यांथी आवशे ? व्यापार करवो तो बहु मुश्केलछे. अने मोहोटी अक्कलनुं कामछे. अमे न होत तो ए सर्वेनीशी गति थात ? जूउं ! आ चीजना शोदामां तमे केटलो न फो लीधो ? अने तेज चीज अमे वेची, तो सर्वेनी हजूर आट लो नफो लीधो. ए अक्कलनुं कामछे. हमारी कलाने तमे नहीं पामो, एम पोताना जीव साथें फूले.

वली राजद्वारमां पोतें जातो होय तो त्यहां साचां जूठां फेल बनावीने लोकोने कर देखाडीने राज्यमां पैशा लेवरावे, अने पोतें पण वच्चेथी कांइ लइने सुखेंथी खाइ जाय. चार वातो सारी तरेहथी बनावे. कोइने त्यां बियानुं फेल बनावीने, इंद्रजाल प्रमुख चमत्कार वतावीने विश्वासघात करी, तेनी पासेंथी पैशा ले, अने मुखथी कहेके, अमे तमारुं द्रव्य फोकट गमावनार नथी. तमे अमारी तरफनी खातर जमा राखजो. एवी रीतें कही ने पारकुं द्रव्य, खाइ जाय अने वली खरचावे, अने लोकोमां महोटो विद्वान् कहेवाय, अने मनमां जाणेके जुउं ! मारा जे वो कोण अक्कलवान् बीजो हशे, के आवी रीतें पारकुं द्रव्य खा य ? लोकमां पण हुं सर्व ठेकाणें विख्यातछुं,महाराज जेवा प्रख्यात तो मारा पिता पण न हता. हुं बालपणमांथीज कमाइ करीने लावुंछुं. एवी खोटी कुगतिनी सहायता बांधे, अने फेल करे.

क्यारेंक औषध, जडी, बुट्टी प्रमुख यद्वा तद्वा कंइकचीलावीने तेनी लोकोना मुख आगल घणी तारीफ करे, के हुं आजे औषध बनावुं छुं, ते रसायनछे. ए औषध, खानारने बहु गुण करवा वा लुं छे. में ए औषध उपर घणो पैशो खरच्योछे. एना उपर रात

दिवस घणीज मेहेनत थइछे. ए औषध, हुं तमनेज आपुं हुं, तमे अमारा छो माटे आपुंछुं. वली तमने दररोज खरच पडे छे, तो जे औषधनी तमे तारीफ करता हता तेज औषधि आज हुं तमने आपुंछुं. तेनी तमारे अमोने एक दमडी पण आपवी पडशे नहीं, मात्र मोवतने खातर आपुंछुं तमोने गरमी रहेछे, ते माटे ते गरमीने मटाडवाने आज, मने यादगिरी आवी. तेथी में तमने औषध आप्युंछे. ते सांजलीने ते औषध लेनार कहे के, मारी उपर आप साहेबें म्होटी महेरवानी करी. तमे अमारी खबर न ल्यो, तो बीजुं कोण लेशे ? एवी तजवी जथी वातो बनावीने पेशा लीए, म्होटी लायकी बतावीने, आगलानी पासेंथी पेशा लेइने खुशी थवुं. इत्यादिक खराब वि कल्पना करवी, ते पण चौर्यानंदरोद्र कहीएं.

४ हवे चोथो संरक्षणानंदरोद्र कहेछे. संरक्षणानंदरोद्र, एटले परिग्रह, धन, धान्य, घणुंज वधारे. वली अधिक वधारवानी इ छा करे, पाप कुटुंबनुं पोषण करवाने माटे परिग्रह वधारवानी वे हद कुबुद्धि विचारे. अने तेवां कर्म पण आदरे. लोकविरुद्धादि कनी अपेक्षा न करे. एम करतां वली कोइ प्राचीन पुण्यें करी पाप परिग्रह पामे, अने घणुं द्रव्य मले, त्यारें मनमां घणो हर्ष पामे अने कहे के, जुर्ज ! आ सर्व में एक जीवें पेदा कर्युंछे. एवो मारा जेवो कोण हुशीआर थशे ? अने मारा जेटली दोलत कोण मे लवशे ? एवा अहंकारें करी, मग्न रहे. अने तेज परिग्रहमां पो ताना मननी वृत्ति लागी रहे. रखे ए परिग्रहने कांइ नुकशान थाय ? एवी रात दिवस चिंता करे, अने द्रव्यने घणा यत्नथी जा लवी राखे, ताला प्रमुखनी ख्बरदारी राखे, रात्रे सुखें करीने सू ए नहीं. सगा पुत्रनो पण विश्वास करे नहीं. अने पुत्रादिकने क हेके, तमारामां शुं अक्कलछे ? तमारी बुद्धि जती रहीछे कारण

के, तमे निरुद्यमी ठो, माटे अक्कलवाला थाउं. अमारी पर्छे शुं तमे क्यारें पण कमाशो? तमे तो धनने बगाडवा वालाठो. अमे ज्यारें नहीं होइशुं, त्यारें कोण जाणे पाठल तमारा शा हाल थशे ? तमारां लक्षण तो हमणांथीज जाहेर दीठामां आवेठे, जे तमोने आगल जतां मोहोटी आपदा पडशे. कमाववानी युक्तितो कोइमां पण नथी, तो आ पेट, केम नरशो ? अरे मूर्खाओ !!! धन कमा ववुं तो महा मुश्केलठे. कमाइ करीने लखुकाइथी एकवुं राखवुं. ते तो वली घणुंज मुश्केल ठे. हमणां तमे सारी रीतें जूउके, हुं धन कमायो अने कमाउं पणलुं. आज सुधी लोकोमां प्रतीत, आवरु अने व्यवहार राखता आव्या ठेयें, ते अमारी खबरदा री जाणवी. अने डुश्मनोने पण जेर करीने पग नीचें राख्या ठे. मारा ठतां कोइ दावो मुद्दो पण काढनार नथी. तमारा जेवा होत, तो धन कमाववुं तो दूर रहुं, परंतु ते डुश्मनो तमने खावा पण देत नहीं, एवा डुश्मनो लागी रह्याठे, ए माटे अमारी अक्कल शीखो, के जेणे करी तमारुं नवुं थाय, ए प्रमाणे परिग्र हमां चेतना लागी रहे, तेने संरक्षणानुबंधिरौद्रध्यान कहेठे. ए सर्व अपध्यानाचरित अनर्थदंड कहेवायठे.

एटले प्रथम अपध्यान अनर्थ दंड. तेना पूर्वे बे नेद कह्या, ते मां एक अर्त्तध्यान, अने बीजो रौद्रध्यान. ए बेठ ध्यानना नेद, विस्तारथी कह्या. हवे बीजो पापकर्मोपदेश अनर्थ दंड लखेठे.

२ बीजो पापकर्मोपदेश अनर्थदंड. ते हरेक वखतें कोइने घर संबंधीने लज्जा दाक्षिण्यता विना पापोपदेश करे,ते एमके तमारा घरमां वाठरडां महोटां थयांठे ते अमारे देखवामां आज आव्यां, ते माटे तमने कहीयें ठेयें के.तेउने हवे समारो के जेम ए वाठरडां सुप रे. तो पठी गाडी, हल विगेरे सर्वस्थानमां सारी रीतें जोतरी शकशो, नहीं तो तेउना शरीरनुं बल वधशे. तेथी गायने जो

इने उन्मत्त थशे, ने लोकोने मारशे, ए माटे एने पलोटो, अने उतावलथी खासी करावो, पोताना मालने शा माटे बगाडो छो? हमणां एने नहीं पलोटो तो, पछी ए जूतमां जूपशे नहीं. अने फेरवशो तो चमक मटी जशे. नाथ्या विना तो चालेज नहीं, ते माटे नाथवो तो पहेलोज जोइयें. एवो पापोपदेश करे. वली कहे के, आ घोडीनो वछेरो महोटो थइ जायछे. हवे एने फेरणीथी एटले दोरीथी फेरववो जोइयें जेथी करी ए वछेरो,सारी चाल शीखे एने चोकडुं, लगाम चढावो. हवे एना उपर काठडो विगेरे साज मांड्या करो.बांध्युंने बांध्युं राखवाथी जानवर खराब थइ जायछे.

तथा वली एम कहे के, वरसादना दिवस आव्याछे माटे आपणा खेत्रमांथी गांठ, गुछ, घांस, खाडा विगेरे होय, ते कपावी नाखीने सुधारोके जेथी करी जमीन साफ थाय, अने वरसादनुं पाणी खेत्रमांज जरी जाय. पाणीएं पचीने जमीन तर थाय तो तेमां धान्य सारुं नीपजे. वली वरसाद पण आव्यो, माटे घरनी मरामत करावो. ए घर जाजरुं थइ गयुंछे, माटे फरी बंधावो. आ वखतछे. अने हमणां मशालो मजुरी सो शस्ता थयांछे. हवे मूलथी नवी हवेली बनावो. ए बाबत तमोने खबर न होय, तो मने पूछी लेजो. अमें जे मनमुवाथी कयु एवी नजवीजथी तमे पण बनावशो तो सर्व कोइ जोइने आश्चर्य पामशे. एवो उपदेश देइने खोटां कर्म बांधे; तथा फरी वली एवुं कहेके, भाइजी! त मारी दीकरी तो घणी महोटी थइछे. एनी फिकरमां तमे छो के नहीं? हवे विवाह करवा योग्य थइछे. ए माटे तमारी पासें कोइ न होयतो, मारी पासेंथी लियो, पण बीजा कोइनुं करज करशो नहीं. जो करजें काढवा होय तो मने कहेजो, एटले मारी मात थरीथी तमोने कोइनी पासेंथी अपावीश; परंतु तमारे आ काम

करवुं जोइएं. ए धर्मनुं कामछे. माटे एमां ढील करो नहीं. एवी रीतें संसारने वधारनारो उपदेश करे.

वली कहे के, हे भाइजी ! बगीचो समरावो. कोइ ठेकाणे जमीन सखत होय. तो त्यां आग लगाडो. एमां जंगलनी पतें घांस कुशनो घणो वधारो थयोछे, ते कपावी नाखीने ए जग्यायेंज बाली ना खो एटले ते जमीन साफ थशे. एवी रीतें कहे.

वली बीजी प्रेरणा करे के, फलाणो माणस. तमारी सार्थे दु श्मनाइ करेछे. तेने जेर करवानो हमणा तमारो वखतछे. राजद रबारमां तमारे तो वग छे. ए माटे कोइ ठेकाणे कोइ पेचमां लेइने फसावी नखावो. आपणुं चालतुं होय, त्यारें तो दुश्मनने जेर करवानो उपाय कर्या विना रहीएं नहीं; मारी तो एवी अक्कलछे. आवो अवसर तमें फरी क्यारें पामशो ? पोताना चालता चलण मां सारुं नठारुं करवामां न आव्युं, तो जींदगीनुं फलशुं ? ते मा टे दुश्मननो नाश करी. तेने नाबुद करवो. तेज सारुं. ए तो त मारी बदगोइ लोकोनी आगल घणीज करेछे, एक बे वखत तो में पण सांभली हती. ते माटे तमे मूर्ख लेखाओछो. ते दुश्मन शी र उपर चढतो जायछे. एटली पण तमोने कालजी नथी. दुश्मन ने तो उगतोज जड मूलथी कापी नाखवो, लोकोनी एवी कहे वतछे के, " करतेलेंती कीजीयें, अथवा हणताने हणियें, एमां पाप दोष न गणीयें " एवो एवो उपदेश आपे.

वली बीजाने एवी रीतें कहेके आटलो बधो दिवस चढ्योछे तो पण हजी रसोइनी तो कांइ वातज नथी. उठो जइने रसोइनी कांइ तजवीज करो ! चोको प्रमुख देवरावो, स्नान करी रसोइ कर्या पछी. सर्व काम थायछे. अमे तो उठतां वेत. महोटा परो ढीयामां रसोइ करी लाइयें तो पछी अमने कांइ काम काज सुजे. इत्यादिक उपदेश आपे, प्रयोजन विना जूठुं साचुं कहेवुं, तेमां

शुं फायदो? उलटुं एवुं करीने पोताना आत्माने बंधन करवुं. ए बीजो पापोपदेश अनर्थदंड कह्यो.

३ हवे त्रीजो हिंसाप्रदान अनर्थदंड कहेछे. पोताना संबंधीने दाक्षिण्यताथी तथा कोइ पण गरज विना हरकोइने कहेवुं के, केम रसोइ करता नथी? अग्नि न होयतो अमारे घेरथी अग्नि लेइ जाउ. वली ज्यारें जोइयें, त्यारें घेरथी सुखें अग्नि लइ जजो. अमारे त्यां तो ज्यारें जोइयें त्यारें अग्नि रहेज छे, माटें सुखेंथी लइ जाउ. वली एवो उपदेश करेके, अग्नि देवानुं तो महोटुं पुण्यछे. वली कहे के, आज बजारमां तरकारी एटले शाक भाजी घणुंज आव्युंछे, ते जलदी लेइ आवो, एक बे दिवस चाले एटलुं लेइ आवो, पछी फलाणी तरकारीने तो चाकुयें करी, आपणे हाथे छोलीने सारी बनावशुं; पछी तेमां हिंग, हलदर, विगेरे मशालो, सर्व नाखीने रांधशुं, तो पछी खावानी वखतें तेनी मजा पामशो; त्यारें कहेशो के, शाबाशछे. वली आगल पण तमे निरंतर एज तरकारी खाशो, जे खावानी चीज छे, ते सारी रीतें बनावीने खाइयें, कारण के कोइ जुए तो पण कहेके, ए घणा चतुर पुरुषोछे. एवी रीतें कोइना पुछ्या विना कहे तथा माग्या विना अग्नि प्रमुख आपे, अधिकरण क्रियानी अक्कल शिखवाडे, ते पण अनर्थदंड.

तथा बीजा यंत्र. जेवा के घंटी, खारणीउं, सांबेलुं, गाडी, रथ, वाहाण, चरखो, चरखी, घाणी, सूडी, दाव, छूरी, चीपीया, कातर, पावडो, तरवार, खंती, कुहाडो, फरशी, बीजा पण सर्व हथीयार नाना मोहोटा जेटला होय. ते तरवार, बंदूक, कटारी, कबाण प्रमुख तथा वली बीजां अधिकरणमां सावरणी, पावडी, पंखो, घांसनी टट्टी, जीडवुं आदि दइने तथा बीजां मंत्र, साप वींछी उतारवानो तथा तीड वर्षादना दिवसमां क्षेत्र खायछे, ते मनी झाड मंत्रथी उतारे तथा खिलावणी करे, तथा शाकिनी,

व्यंतर, चूडेल, चूलडी प्रमुख. भूत, प्रेत, जोड, व्यंतर, महीत एटले एठेथी पीडाताउने ठोडाववाना जाडा प्रमुख उपचारो करा ववा, तथा धूणाववां, खेलाववां, शीशामां उतारवां तथा मा रण, मोहन, मुखबंधन करवानां, तानां. तुनां, जादु प्रमुखना करवां, तथा काष्ट कपावीने नवां उखल, मुशल, चक्की, मांची, खाट, चोकी, अने खडाउ प्रमुख जे थकी जीवहिंसा थाय, एवां अधिकरण बनावे. बीजा पण जे थकी हिंसा थाय, एवां सर्व उपाय एमां जाणी लेवां. तथा मूलगर्न एटले गर्नादि थवानी जडी, उंपधि, यंत्र, मंत्र प्रमुख करे, करावे तथा कोइ स्त्रीने कुकर्म थकी गर्न रह्यो होय, तो ते स्त्रीने ते गर्नपात थवाना उंपध प्रमुख करी खवरावे, अथवा कोइ शातन, पातनना इलाज योनि प्रमुखमां बत्ती अथवा गोली चढावीने गर्नपात करे, अथवा बीजानी पासें करावे तथा मोहन वशीकरणनी जडी, बुट्टी, तो डावे, होम करावे, त्यां बलि प्रमुख जीवनो आपे, अथवा अ पावे, तथा बीजा पण उंपध करवानां पत्र, मूल, कंद, फूल, फल प्रमुखनो हुन्नर शीखवाने तेने जमीनमांथी तोडाववां, कोइ उपा य करीने खोदी कढाववां. कोइक बीजने पीलावीने तेनो रस कढा ववो, ते पण अधिकरणक्रिया अनर्थदंड जाणवो.

तथा बीजी रसायननी क्रिया करवाने आठ प्रहर, शोल प्रहर सुधी अग्नि आपे, ए रीतें हरताल, पारो, सोमल, त्रांबुं, रूपुं, सोनुं. तथा लोहने मारवानो हुन्नर करे, करावे, बीजाने बतावे. ए रसायन करवानो विधि. ए पण सर्वअधिकरण पापोपदेशनां बे. तथा बीजी तेलक्रिया, ते अनेक जडियोना रस काढे, अथ वा अजदयादिक कोइ बीज उकलता तेलमां नाखे. अग्नि निचें आपी बे. तेनी तो गणती पण न राखे. एवा आरंभ करे. नारायणी तेल, लाक्षादिक तेल, विषगर्नतेल, तथा शतपाक

शुं फायदो ? उलटुं एवुं करीने पोताना आत्माने बंधन करवुं ए बीजो पापोपदेश अनर्थदंड कह्यो.

३ हवे त्रीजो हिंसाप्रदान अनर्थदंड कहेछे. पोताना संबंधे ने दाक्षिण्यताथी तथा कोइ पण गरज विना हरकोइने कहेके, केम रसोइ करता नथी ? अग्नि न होयतो अमारे घेरथी अग्नि लेइ जाउ. वली ज्यारें जोइयें, त्यारें घेरथी सुखें अग्नि लइ जजो. अमारे त्यां तो ज्यारें जोइयें त्यारें अग्नि रहेज छे, माटें सुखेंथी लइ जाउ वली एवो उपदेश करेके, अग्नि देवानुं तो महोटुं पुण्यछे. वली कहे के, आज वजारमां तरकारी एटले शाक भाजी घणुंज आव्युंछे. ते जलदी लेइ आवो, एक वे दिवस चाले एटलुं लेइ आवो, पछी फलाणी तरकारीने तो चाकुयें करी, आपणे हाथे छोलीने सारी वनावशुं; पछी तेमां हिंग, हलदर, विगेरे मशालो, सर्व नाखीने रांधशुं, तो पछी खावानी वखतें तेनी मजा पामशो; त्यारें कहेशो के, शाबाशछे. वली आगल पण तमे निरंतर एज तरकारी खाशो, जे खावानी चीज छे, ते सारी रीतें वनावीने खाइयें, कारण के कोइ जुए तो पण कहेके, ए घणा चतुर पुरुषोछे. एवी रीतें कोइना पुछ्या विना कहे तथा माग्या विना अग्नि प्रमुख आपे, अधिकरण क्रियानी अक्कल शिखवाडे, ते पण अनर्थदंड.

तथा बीजा यंत्र. जेवा के घंटी, खारणीउं, सांबेलुं, गाडी, रथ, वाहाण, चरखो, चरखी, घाणी, सूडी, दाव, छूरी, चीपीया, कातर, पावडो, तरवार, खंती, कुहाडो, फरशी, बीजा पण सर्व हथीयार नाना मोटा जेटला होय. ते तरवार, वंदूक, कटारी, कवाण प्रमुख तथा वली बीजां अधिकरणमां सावरणी, पावडी, पंखो, घांसनी टट्टी, जीडवुं आदि दइने तथा बीजां मंत्र, साप वींछी उतारवानो तथा तीड वर्षादना दिवसमां क्षेत्र खायछे, ते मनी झाड मंत्रथी उतारे तथा खिलावणी करे, तथा डाकिनी,

तमोने धन्य धन्य कहेछे. ते वारें एवी रीतनी पोतानी तारीफ सां जलीने पोतें घणोज खुशवखत थाय. अने मनमां फुलायने जा णेके महारी वडाने चाहना रहेछे. फरी एवी पोतानी घणी ता रीफ सांजलीने आगल करतां वधारे अधिकरण मेलववानो उद्य म करे. वली बीजाने पण अधिकरण पोतें आगल थइने बनावी आपवे. दुनियांमां आरंजक्रियानी उस्तादी आपे, लोकोनें कहेके कोइ शिष्यने महारी विद्या वडी शीखवाडुं, हवे हुं वृद्ध थयो हुं माटे आ क्रिया, सर्व शीखो, ए हुन्नर रूडोछे, एमां कमाइ पण छे, अने घहुज शोजा, यश, कीर्त्ति छे, जीवदया पण पलेछे. वली अमारुं, पण नाम कायम रहेशे. तमें लोकोमां कहेशो के, अमुक माणस पासेंथी अमें ए विद्या पाम्या छैयें. तेथी महारो पण लोको मां यश वधशे. वली ए क्रिया शिखीने कोइनी उपर उपकार करशो, तो तेने आराम थशे, तेथी तमारुं पण नाम थशे. एवी वातो करे, पण ए समग्रक्रिया पाप रूपछे, तेनी खवर अज्ञानना प्रवलथी तेने रहेती नथी. इत्यादिकने हिंसा प्रदान अनर्थदंम कहियें.

४ चोथो प्रमादअनर्थदंम कहेछे. ते एमके, छता सामर्थ्य अ ने छता योगें जयणा करे नहीं. चालतां चाले. तेटलामां खाली गडवड करे, कारण विना पाप लगाडे, ए केवल, पोतानी अज्ञान ताथी तथा धिठांइ पणाथी लागे. जेम घणी जातिनां तेलमर्दन करावीने उपर उवटणा, पीठी अने सुगंध द्रव्य निष्पन्नथी तेलनी चीकणाश मटाडे, ते पीठीमां कडवी, तीखी, घणी गरम चीज आ वे तेथी अंगुठणा करावीने, पठी जीवोयें करी परिपूर्ण एवी जूमि होय, ते जग्या उपर वेसीने स्नान प्रमुख करे, त्यहां ते पीठीना पाणीनो रेलो चाले, तेथी करी त्यां जे जीवो होय, तेउ कडवा रसना गंधथी विनाश पामे, तथा ज्यां थोडा पाणीनुं काम होय, त्यां घणुं पाणी रेडे. अहींयां तजवीज करी शुरू जूमि जोइ

सहस्त्रपातादिक तेल प्रमुख, तेनुं करावर्वु तथा बीजां जे जे जडी, बुटीथी ओषधक्रिया, जाडुक्रिया, वशीकरण करावर्वु अथवा विरोधकरण, उच्चाटन, आगीयो, कतरीयो, रगतीयो, प्रमुख तथा वीरोने चलाववुं. इत्यादिक क्रियामां पोतें कुशलछे, तेवारें कोइने संबंध विना दाक्षिण्यताथी पोतानी सिद्धाइ देखाडवानें अर्थे अथवा पोतानी बाबु, बुजरगी वधारवाने अर्थे लौकिकमां यशनी वृद्धि थाय एवा कारणे तथा महोटाइनो फांको राखवानुं विचारी ते मूढ पुरुष, धर्मसंज्ञाथी मंत्रादिक प्रयुंजे. मंत्रादिक पोतें करे, अथवा बीजो कोइ तेनी सेवना करे. तेने शिखवाडे अने हिंसानी परंपरा वधारे, परंतु ए बधां, कृत्यो, परंपरायें पापबंधन करवाना उपायरूपछे. तथा बीजुं पण घणा आरंज रूप विविध प्रकारनी जडी, बुट्टी मंगावीने तेनुं तेल काढी, घरमां राखे. अने वली लोकोने कहेके, अमारा घरमां एटली चीज हाजरछे, जेने जोइयें, ते सुखेंथी मंगावी लेजो. अमें तो लोकोने आसन थवाने अर्थे बनावीछे. एवी पोतानी प्रजुता वधारवी तथा वली बीजुं कहेके. फलाणा माणसजी! आज काल तमे फिकरवान् केम रहोछो ? अमारी पासें आवजो जे कहेशो, ते तमारी फिकर, अमे मटाडी आपीशुं. तमारुं कार्य करी आपशुं. अमे आ अमुक चीज, राखीछे ते वधी परोपकारने अर्थेज राखीछे, एवी वातो करे, पण ते मूर्ख एवुं न विचारेके एथी महोटो अनर्थ थाशे. पोतानी तुच्छ बुद्धिना प्रमाणथी सर्व पापयोग करी आपे, त्यारें आगलाउना पुण्ययोगें करी धारेलुं कार्य थाय, तेवारें ते वखाण करीने कहेके तमारी शुं तारीफ करियें ! तमे तो महोटा परोपकारी छो, लायक माणस छो. परलोक सुधारो छो, तमारा जेवो बीजो कोइ पण आ शेहरने विषे अमारी नजरमां आवतो नथी. तमारा जेवो कोण थशे. तमें तो रत्नरूप छो, वधी वातोथी आप दयाना सागरछो. सर्वलोक, पववाडेथी

तमोने धन्य धन्य कहेछे. ते वारें एवी रीतनी पोतानी तारीफ सां ज्ञलीने पोतें घणोज खुशखत थाय. अने मनमां फूलायने जा णेके महारी वडाने चाहना रहेछे. फरी एवी पोतानी घणी ता रीफ सांजलीने आगल करतां वधारे अधिकरण मेलववानो उद्य म करे. वली बीजाने पण अधिकरण पोतें आगल थइने बनावी आपावे. दुनियांमां आरंजक्रियानी उस्तादी आपे, लोकोने कहेके कोइ शिप्यने महारी विद्या वडी शीखवाडुं, हवे हुं वृद्ध थयो छुं माटे आ क्रिया, सर्व शीखो, ए हुन्नर रूडोछे, एमां कमाइ पण छे, अने बहुज शोजा, यश, कीर्त्ति छे, जीवदया पण पलेछे. वली अमारुं, पण नाम कायम रहेशे. तमें लोकोमां कहेशो के, अमुक माणस पासेंथी अमे ए विद्या पाम्या छैयें. तेथी महारो पण लोको मां यश वधशे. वली ए क्रिया शिखीने कोइनी उपर उपकार करशो, तो तेने आराम थशे, तेथी तमारुं पण नाम थशे. एवी वातो करे, पण ए समग्रक्रिया पाप रूपछे, तेनी खबर अज्ञानना प्रबलथी तेने रहेती नथी. इत्यादिकने हिंसा प्रदान अनर्थदंम कहियें.

४ चोथो प्रमादअनर्थदंम कहेछे. ते एमके, छता सामर्थ्य अ ने छता योगें जयणा करे नहीं. चालतां चाले. तेटलामां खाली गडबड करे. कारण विना पाप लगाडे, ए केवल, पोतानी अज्ञान ताथी तथा धिठाइ पणाथी लागे. जेम घणी जातिनां तेलमर्दन करावीने उपर उवटणा, पीठी अने सुगंध द्रव्य निप्पन्नथी तेलनी चीकणाश मटाडे, ते पीठीमां कडवी, तीखी, घणी गरम चीज आ वे तेथी अंगुछणा करावीने, पछी जीवोयें करी परिपूर्ण एवी जूमि होय, ते जग्या उपर वेसीने स्नान प्रमुख करे, त्यहां ते पीठीना पाणीनो रेलो चाले, तेथी करी त्यां जे जीवो होय, तेर्ड कडवा रसना गंधथी विनाश पामे, तथा ज्यां थोडा पाणीनुं काम होय, त्यां घणुं पाणी रेडे. अहींयां तजवीज करी शुद्ध जूमि जोइ

करीने स्नान मज्जन करे, तो दया पले. प्रमाददोपथी धर्मनी कोइ क्रिया गडबडजरी करे तथा कौतुक, नाटक, पेपणा प्रमुख, पोते जोवाने जाय अने बीजाने सार्थे लेइ जइने देखाडे, त्यारें ते दोडा दोडीथी चालता आवे, तेणे करी घणा जीवनी विराधना थाय. त्यां जइ तमासो जुए; खुशी थाय, बीजाउंनी पासें तारीफ करे. पोतानो आलोक परलोकनां साधननो जे व्यापार, जप पूजादिकनो उगरेलो वखत पण थइ जाय, तेथी ते काम पण बगडे. फरी ते, घणा तमासा जोइ ने घेर आवीने परिजनोनी आगल वर्णन करे. तेणे करी पोतें चीकणां कर्म बांधे. बीजाना पण परिणाम बगाडे तथा कोइ सती, सत करवाने माटे काठ लेवा चाले, अथवा कोइ चोरने मारवा माटे लेइ जता होय, त्यहां जोवा माटे दोडे. जोवा उजो रहे, त्यां एना मनमां ए परिणाम रहेके हवे ए चोरने क्यारें मारशे ? अने सती एनी मढुलीमां क्यारें पेसशे? अग्निमां केम बेसशे? वली ते शिवाय बीजुं पण मिथ्यात्वीनी अनुमोदना, तारीफ करे. चोर मारे, त्यां चोरना पापनी निंदा करे. त्यहां चीकणां कर्म बांधे. फरी फरी ज्यारें ते वात काढे, त्यारें तारीफ करे, ते वखतें पण चीकणां कर्म बांधे. एम केटला एक वखत वारं वार कर्म बांधे. तथा काम शास्त्र जे कोकशास्त्रादिक तेनो घणो परिचय करे. चोराशी जोगासन शीखे तथा बीजाने शिखवाडे. पडवादिकथी मांडीने पूर्णिमा तिथि सुधी शुदि तथा वदिमां चढतो उतरतो कामदेवनो वास तेने पोतें धारे, अने बीजाने धरावे. नखशिखनां वर्णनादिवालां शास्त्रने जणे अने जणावे तथा जावजेद अंग उपांगने बतावे. वली नदीने तट, जलक्रीडा करवाने जाय. बीजाने बोलावे. ते नदीमां ज्यां सुधी पोतानो परसेवो मेल धोवाइने ते मेलनुं पाणी चाले, त्यां सुधी सर्व जल जीव जे सूक्ष्म होय, तेउनो नाश थाय. वली होरीं करीने पोतानी

कामसंज्ञा वधारवाना हेतुएं केफी वस्तु जे माजम, गोली, चूर्ण प्रमुखछे, ते खाय. वली पंचेंद्रियवधोत्पन्न एवी, मक्षमनी पट्टी ल गाडे, धंधेजनुं औषध करे. बीजाउंने शिखवाडे, तथा जे वचने करी पोताने तथा पारकाने कामसंज्ञा वधे, अने चेतना वगडे, एवां वच न बोले, बीजा पासें बोलावे, तथा हाथना, मुखना, नेत्रना, अने ज्रकुटीना चाला करे. जे चाला देखीने बीजाने हसवुं आवे. वली कोइनी मश्करी पोतें करें, बीजा कने करावे, तथा अत्यंत मर्मनां वचन बोले.

१ तथा राजकथा, ते राजानी दोलत वखाणे, राजानी ल डाइ वखाणे के एवी रीतें फोज चढी अने एवी रीते लडाइ थइ. ते अने पण जत्रा रहीने दीठीछे. एवी रीतें मनसुबो करी ने दुश्मनने जेर कस्या. ए महोटो शमसेर बाहादूर कहेवाय छे. वली राजाना जाग्यने वखाणे. कहेके ए राजानी बराबरी कोण करे? आजे तो, ए बीजो इंद्रतुल्यछे. अने राजाना काम जोग, व खाणे ने कहे के, आटला शेर अत्तर तो नित्यजोगमां आवेछे, व ली राजाना अंगबलनुं वखाण करे.

२ तथा काम काज विना देशकथा तफत जे इंद्रियसुख जे खान पानादिक, तेने वखाणे, अथवा वखोडे. ते सांजलीने बीजाउंनी प ण चेतना तेवा विषयो उपर राचे. पोताने आरंजनी अनुमोदना थाय, तेथी ते क्षेत्रविपाकी कर्म बंधाय.

३ तथा स्त्रीकथा जे स्त्रीनुं रूप, रंग, चतुराइ, तेना वदफेलनी निपुणता, तथा शुकबत्तोत्तेरीनां दृष्टांत संजलावे, जारी विजारी क री जाणे. ते महोटो चतुर केहेवाय, ते वातो सांजलीने कइक पु रुषनुं परिणाम वगडे, स्त्री सांजलीने फेल शीखे, पोताने विषय कर्म जूदी जूदी जांतिनां बंधाय.

४ तथा जक्तकथा जे खावुं पीवुं अशनादिक चारे प्रकारना आ

हारनी कथा कहे, वखाणे, तथा वखोडे. कोइ रसवतीना संस्कारनी
गात तरेह तरेहनी करीने तेने वखाणे, ते रसवती बीजाने शिखवा
डे. अने कहेके फलाणी रसोइ, फलाणी तरकारी आ रीतें बना
वीयें तो ते एवी स्वादिष्ट थायके देवता पण पोतें आवीने आरो
गे, परमेश्वरने पण तेनो जोग चढे, एवी बनेछे. अहींयां निष्क
लंकने पण कलंक लगाडे. वली एणे करी गाढ, मिथ्यात्वनुं पो
षण थाय. केटला एक जीव, ते सांजलीने एवा आरंजमां प्रवर्त्ते.
तथा एक दिवस बहु आरंज करीने खाधुं, ते फरी फरी याद करी
ने वखाणे, त्यारें वारंवार चीकणां कर्म बांधे. ए चार विकथा क
स्वाथी लाज, मर्यादा, नीति तथा धर्म अने गंजीरतानी हानि
करे, एथी लबाड कहेवाय. वली ए चार विकथा न करे, तो तेथी
कांइ पोतानुं काम बगडे नहीं, अने कांइ इंद्रियसुखमां पण हा
नि न थाय, केवल नकामुं चीकणुं कर्मबंधन थाय. ए प्रमाद
थी थायछे. ए कुचाल जो मटाडीदे तो मटे, ए रीतें कामकाज
विना फोकट आत्मा दंडावे, ए प्रमादाचरित अनर्थदंड कहीयें.

हवे ए व्रतना पांच अतिचारछे, ते लखेछे.

१ प्रथम कंदर्प्प कुचेष्टा अतिचार. ते एमके मुखविकार, ज्रकु
टीविकार, नेत्रविकार अने हाथनी संज्ञा बतावे, पगना विकारनी
कुचेष्टा करे, अने ए चेष्टा करतां थकां बीजाने हसवुं आवे. कोइ
ने कषाय उपजे, तेथी क्यांनी क्यां चाली जाए, ए कारणे पोता
नी लघुता थाय, धर्मनी निंदा थाय, एवी कुचेष्टा करे, तेने प्र
थम अतिचार जाणवो.

२ बीजो मौखर्य अतिचार. मुखथी अतिशय वाचाल पणुं करे,
एटले असंबंध वचन बोले; जेणे करी बीजानी एब प्रगट थाय,
अने ते कष्टमां पडे. वली पोतानी लघुता थाय, वैर वधे, धिक्का

इ. लवाड, चुगलिर्ठ, इत्यादिक नाम पडे. लोकमां लाज गमाडे. एवी रीतें घणुं वधीने वोलवुं, ते वीजो अतिचार.

३ त्रीजो जोगाधिक आरंज अतिचार. ते एमके जोग, उपजोगमां, स्नान, पान, आहार, धोवन, विलेपन, इत्यादिक शौचता प्रमुख आरंजनी क्रियार्ठ, ते पोताना खप करतां वधारे करे. नकामो आरंज करे, एणेकरी डव्यनो व्ययथाय. घणो इशकधरे, ते त्रीजो अतिचार.

४ चोथो काममर्मकथन अतिचार. ते एमके, कामनां मर्म वोले जेना वोलवाथी पोतानी तथा वीजानी चेतना काम क्रोध मय थइ जाय. एवुं वे तरेहनुं वोलवुं तथा विहरनी वात डुहा, साखी, रेखता, फुलणा, कवित्त, परजीया, श्लोकमां शृंगाररसनी कथा कहेवी. ते चोथो अतिचार.

५ पांचमो अधिकरणदोष अतिचार कहेछे. ते एमके पोताना काम काज करतां अधिक अधिकरण मेलवीने तैय्यार करी राखे. सर्व अंगोपांग मेलवीने सुधारीने राखे. ते अधिकरण कहीयें. जे णे करी हिंसादिक पापस्थाननी पुष्टता थाय एवा रथ, उखल, मुशल, घण, चक्की, उरी, तरवार, कटारी, वंदूक, कमान, तीर, तरकस, ढाल वरठी, सूडी, ठिनी, फरशी, पावडो, कोदाल, केची, आरा, सांडसी, दांती, कोदाली प्रमुख हथीयार पोताने जरूर जोइयें तेथी सर्व वधारे वनावे. अने ते हथियार, विना संबंधे अने माग्या विना दाक्षिण्यताथी वीजाने चाहीने आपे. ए पांचमो अधिकरण दोषनो अतिचार. ए आठमा व्रतना पांच अतिचार जाणवा. पण आदरवा नहीं. समजु श्रावकछे, तेतो त्याग करे. ए एमने महोटो लाजछे.

इति श्री द्वादशव्रतविवरणे अष्टमअनर्थदंडविरमणनामा तृतीयगुणव्रते पंडित श्रीउद्योतसागरगणिनाकृतजापा संपूर्णा ॥८॥

॥ अथ ॥

॥ नवम सामायकनामक प्रथमशिक्षा व्रत प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

अब चो शिक्षा व्रत कहुं, नवम सामायिक नाम;
दोप वतीसे टांळि करि, बैठे एकंत धाम ॥ १ ॥
द्वादश कायाके प्रथम, पुनि दश वचन प्रमान;
मनके दश दोप जु मिली, सव वत्तीस सुजान ॥ २ ॥

एवी रीतें छठ्ठुं, सातमुं, अने आठमुं ए त्रण गुण व्रतो कह्यां. हवे पूर्वोक्त आठे व्रतने अने आत्मगुणने पुष्टिकारक, अविरति विषय कषायमां तदात्मभावें मळ्यो, अनादि अशुद्धता जे विभाव परिणामनी टेव ते मटाडवाने, अने आत्मिक गुणानुभव करवाने, सहजस्वरूप रसास्वादनी मजा पामवाने, नवमुं सामायिक करण रूप पहेलुं शिक्षा व्रत लखेछे.

त्यहां सामायिक ते जघन्य बे घडी प्रमाण, ते आर्त्तरौद्र ध्याननी परिणति रूप क्रिया ते अशुभ सावद्य व्यापार कहीएं; तेनो त्याग करीने आत्माने समता परिणाममां राखे, ते सामायिक कहीयें. अथवा सम आय सामायिक एटले सम के० सम्यक् प्रकारें रत्नत्रयी जे ज्ञान, दर्शन अने चारित्र रूप सहज रूप उदासीनवृत्ति मुक्तिनो मार्ग, ते सम कहीएं. तेनो जे आय के० लाभ थाय जेने विषे तेने सामायिक कहीयें. ए सामायिक व्रत, बे घडीनी मुनिना भावनी वानकी अथवा निशानीछे. अने अनादि काळना संसार परिभ्रमण थकी विश्राम करवानो रूडो उपायछे. हवे जे साधक होय, ते बे घडी स्वरूप सन्मुख चेतना करीने अने सहज स्वरूपनी चाहना धरीने अने सकलसावद्य त्रिकरणयोगें तजीने सामायिक करे. ते बत्रीश दोष टाळीने करे त्यारें शुद्ध थाय. तेमां प्रथम कायाएं करी बार दोप थायछे, ते बतावेछे.

१ प्रथम दोष.सामायिक करती वखतें पग पर पग चढावीने उंचे आसने पलांठी वालीने वेसे, ते माहात्म्य पर्यायथकी विनय गुणनी वृद्धिनी हानि करे, अथवा वस्त्रवडे जानु एटले गोठण वांधी करी वेसे, ते प्रथम दोषछे, माटे जेणे करी विनयगुण रहे, उकता न जणाय, अजयणा न होय, एवा आसनें वेसे.

२ बीजो चलासनदोष. ते आसनने स्थिर न राखे, वारंवार आ गल पाछल चलायमान करे, पोतें चपलता घणी करे, मूलमार्ग तो एवोछे के, श्रावक एकज आसनें वेसीने सामायिक पूरुं करे. अकगपणे रहे, कदापि रोग निर्वलतादिक कारणे एकासनें टक्युं न जाय ने फेरववुं पडे, तो उपयोगसंयुक्त जयणापूर्वक उठी उठीने चरवलाथी पुंजन प्रमार्जन करीने आसन फेरावे. पण एम कीधा विना चपलता राखे, तो बीजो चलासनदोष लागे.

३ त्रीजो चलदृष्टिदोष. ते सामायिक लेइने पछी दृष्टिने ना सिका उपर राखे, अने मनमां शुद्ध श्रुतोपयोग राखे, मौन पणे ध्यान करे. तथा जे सामायिकवंतने शास्त्राभ्यास करवो होय, तो जयणायुक्त यइ मुहपत्ति मुखें वांधीने पुस्तक उपर दृष्टि राखीने जणे तथा सांजले. तथा सामायिकमां काउसग्ग करवो होय, तो चार अंगुल आगल अने साडा त्रण अंगुल पछवाडे एटली बन्ने पगनी वच मां मोकलाश रहे, एवी योगमुद्रायें उजो रहे, बन्ने वाहुउं प्रलंवित रा खे अने दृष्टिने नासिका उपर राखे, अथवा जमणा पगना अंगुठा उ पर राखे, ए शुद्ध सामायिकनी शैलीछे. ते शैलीने छोडी करीने चपल पणे चारे दिशाउंयें चकित मृगनी परें नेत्रो फेरवे, ते त्रीजो दोष.

४ चोथो सावद्यक्रियादोष. तेमां कायायें करी कांइक साव द्यक्रिया करे, अथवा सावद्यक्रियानी संज्ञा करे, ते चोथो दोष.

५ पांचमो आलंवनदोष. ते जे सामायिकमां दिवालप्रमुख नो आशरो छोडीने निरवष्टंज्ञ एकासने वेसवुं, एवी रीतछे; ते रीत

त्यागीने दिवाल अथवा थांजलाने पीठ लगाडीने वेसे, अथवा वीजा कोइ पदार्थनो आशरो लइ वेसे, तो आलंवननामें पांचमो दोप लागे, कारण के, पुंज्या विनानी दिवाल उपर घणा जीवोनो विश्रामछे, त्यहां पीठ लगाडतां घणा जीवोनी विराधना थाय, तथा निद्रादि प्रमाद वधे, ए माटे आलंवन नामें ए पांचमो दोपछे.

६ छठो आकुंचनप्रसारणदोप. ते एमके सामायिक लेइने नकामो कारण विना हाथ पग संकोचे, अथवा लांवा करे, अने सामायिकमां तो पुष्ट कारण विना हालवुं चालवुं कांइ कल्पुं नथी. जरुरथी लाचार थये थके, चरवला प्रमुखथी पुंजन प्रमार्जन करी हाथ पग हलावे. मनमां आकुंचनस्थिति न सहवानो खेद धरे. एवी शैली विना नकामा हाथ, पग, हलावे, तो छठो दोपलागे.

७ सातमो आलस्यदोप. ते एमके, सामायिकने विषे अंगें आलस मोडे, टाचका फोडे, करडका करे, कम्मर वांकी करे. ए प्रमाणे प्रमादनी वहुलताथी व्रतमां खेद उत्पन्न थाय; त्यारें शरीरमां अरतिभाव जागे, ते वखत आलस मोडीने असुहामणो उठे, ए सातमो दोप.

८ आठमो मोटनदोप. ते सामायिकमां अंगुलि प्रमुखने वांकी करीने करडका काढे, ए पण प्रमादनी प्रवलताथी थाय. ए आठमो दोपछे. छठो, सातमो अने आठमो, ए त्रण दोप, निद्राप्रमादनी उपाधिथी थाय अने दर्शनावर्णी कर्मना उदयथी थायछे.

९ नवमो मलस्यदोप. ते सामायिक लेइने अंगमां खस थएली होय, तेने वलूरे, मूल जागें तो सामायिक लीधा पछी खसप्रमुखनी उपाधि थइ तो समजवुं के, चेतना ठीक पणे रही नहीं, विकल्प थवा लाग्या. ए प्रमाणे शुभ आलंवनमां चेतना स्थिर रहे नहीं, त्यारें लाचार थइने चरवला प्रमुखथी जयणा पूर्वक पुंजन प्रमार्जन करीने मनमां पोतानुं अखण्ड मन न रह्युं, तेनो पश्चा

जाप करतां, महा पुरुषनी धीरजता मनमां जावतां, धीमे धीमे खसने चलूरे, एवी शेलीठे. तेम न करे, तो नवमो दोप लागे.

१० दशमो विमासणदोप. ते सामायिकमां अंग वीमासण करावे, एटले हायनो टेको दे, गले हाय देइने बेसे, ते दशमो दोप.

११ अगीयारमो निद्रादोप. ते सामायिक लेइने निद्रा करे. ते सर्व घनघाति कर्मनी प्रकृतिठे; ते सामायिकने निष्फल करेठे.

१२ वारमो दोप एके, सामायिकमां टाढ प्रमुखना प्रवलथी पोताना समस्त अंगें सारी पेरें वस्त्र उंढे.

ए वारे दोप, सामायिकमां कायाथकी उत्पन्न थाय ठे, ते तजवा. हवे वचनना दश दोप ठे. ते कहेठे.

१ प्रथम कुत्सित वोलनो दोप. ते एम के, सामायिक लेइनें कुवचन वोले. जला उत्तम पुरुषने कुवाक्य वोलवां लायकज नथी. तेम ठतां जे वचन सांजली कोइने लज्जा, जय, कपायादिक उपजे, तेवां वचन वोले, ते कुवचनदोप कहीयें. ए प्रथम दोप.

२ वीजो सहसात्कारदोप. ते सामायिक लीधा पठी जे वचन वोले, ते आगल पाठल उपयोग दीधा विना वोले तथा अविचार्यु वोले, अने जेम मनमां आवे तेम कहे, ते वीजो दोप.

३ त्रीजो असदारोपणदोप. ते सामायिकमां कोइनी उपर खोटुं तोहमत आपे, नकरयांने कर्युं कहे, ते त्रीजो दोप.

४ चोथो निरपेक्वाक्यदोप. ते सामायिक लेइ शास्त्रनी अपेक्षा विना पोताना ठंदें वोले. जैनमार्गीने तो निरंतर सापेक्ष वचनज वोलवुं जोइएं, निरपेक्ष वचन न वोलवुं; तेम ठतां सामायिक लइने पोताने जावे तेम वोले. ते चोथो दोप.

५ पांचमो संक्षेपदोप. ते सामायिकमां सूत्रपाठें वचन संक्षेप करी वोले, अक्षर पाठादि हीन करीने कहे, यथार्थ कहे नहीं.

६ ठहो कलहकर्मदोप. ते सामायिकमां साधर्मीसाथें क्लेश करे.

अने सामायिकमां तो कोइ मिथ्यामति गाल पण दे, अथवा उपसर्ग करे, कुवचन कहे, तो पण तेनी सार्थे कलह न करवो. शुद्ध जैनमार्गी तो विना सामायिकें पण कोइ तेना उपर कुवचननी प्रेरणा करे, तो पण तेनी सार्थे कलह न करे, जेम तेम करी कलहने समाववानी चिंता करे, तो ते साधक, सामायिकमां साधर्मीनी सार्थे क्लेश केम करे ? अर्थात् नज करवो जोइयें, अने जो करे, तो छठो दोष लागे.

७ सातमो विकथादोष. ते सामायिक लेइने राज्यादिक विगेरेनी चारे विकथा करे, सामायिकमां तो सिझाय अने ध्याननी मुख्यता कहीछे, कदापि ते न करे तो बेठो बेठो धर्मकथा करे अथवा महापुरुषनां चरित्र अथवा तीर्थादिकनो महिमा कहे, पण जेवी तेवी कर्मबंधनी विकथा न करे, जो करे तो सातमो दोष लागे.

८ आठमो हास्यदोष कह्यो छे. ते एमके सामायिक लेइने वीजानी मश्करी करे नहीं. कारणके, हास्यरूप मोहनीना उदयथी हास्यरसवडे आ लोकमां कोइनी मश्करी करे, ते लघुताने पामे, वली लोकमां पण कहेवतछे के "अनर्थनुं मूल हांसी, अने रोगनुं मूल खांसी" वली परलोकमां तो, ते हास्यरसकर्मउदय आवे त्यारें ते कर्म, रुदन करतां पण छूटे नहीं. ते कारण माटे साधके, सहेज मश्करी पण कोइनी करवी नहिं, त्यारें सामायिक लेइने कोइनी मश्करी करायज केम ? जो करे, तो ए दोष लागे. नीति शास्त्रमां पण उत्तम पुरुषने हास्य करवुं निषेध्युं छे, माटे ए हास्यदोष त्याग करवो.

ए नवमो अशुद्धपाठदोष. ते जे सामायिक लेइने सामायिकना सूत्रादिक उच्चार करे तेमां मुखथी संपदाहीन, अथवा हस्व अक्षरने ठेकाणे दीर्घ बोलावे, दीर्घने ठेकाणे हस्व बोलावे, कोइ ठे

काणे मात्राहीन, अधिक उच्चरे. एम अशुद्ध पाठनो उच्चार करे, यद्वा तद्वा सूत्राक्षर कहे. ते नवमो अशुद्धपाठदोष.

१० दशमो दोष, मुणमुण बोले, एटले जे सामायिक लेइने उतावळें पाठनो उच्चार करे. स्पष्ट प्रकट अक्षर न उच्चारे. पदनुं गाथानुं, ठेकाणुं कांइ मालम पडे नहीं, मुख थकी अक्षर कांइ ठीक पडे नहीं. कोइ जाणे माखी बण बणाट करेछे ? एम गडवड करीने पाठ पूरो करें, ते दशमो दोष जाणवो.

ए दश दोष वचनना जाणवा. हवे मनना दश दोष कहेछे.

१ प्रथम अविवेकदोष. ते सामायिक लेइने, सर्वक्रिया करे पण मनमां विवेक नहीं, एटले सामायिक शुं चीजछे. विवेक सहित सामायिक करीने कोण तर्या छे ? एनाथी शुं फलछे ? ए कोनुं साधनछे ? एमां कोण परसाध्यछे ? व्यवहार सामायिक कयुं ? अने निश्चय सामायिक कयुं ? समायिकनी शुं शैलीछे ? एवा विवेक विना जे सामायिक करे, ते अविवेकनामा प्रथम दोष.

२ बीजो यशवांछादोष. ते सामायिक करीने यश एटले कीर्त्तिनी इछा करे. सामायिक तो निर्जरानुं हेतुछे, अने शिवपदनुं मुख्य साधन छे. ते सामायिक करीने यश इच्छे, ते बीजो दोष.

३ त्रीजो धनवांछा दोष. ते सामायिक करतां धनादिकनी इछा करे के आ सामायिक कर्याथी मने धन मलजो. अथवा सामायिक करतां मनमां विचारे के, कोइ एक जन्य प्राणी, धर्म जाणीने अथवा सामायिकना प्रसादें मने धन आपे. ए त्रीजो दोष.

४ चोथो गर्वदोष. ते सामायिक लेइने मनमां गर्व आणे के, हुं धर्मने जाणनारो छुं. वली जाणे के, अहो ! हुं केवुं सामायिक करुंछुं ? बीजा मूर्ख लोको सामायिक करवामां शुं समजे ? हुं तो संसारी कामकाजमां पड्योछुं, तोपण सामायिक करुंछुं, एटलें महारा जेवुं सामायिक बीजो कोण करी शके ? बीजा तो बद्धा विचारा

पेट जरवावालाछे, बत्रीश दूषण टालीने शुद्ध सामायिक तो हुंज करुंछुं, एवो गर्व करे. ते चोथो दोष.

५ पांचमो जयदोष. एटले जय पामतो थको सामायिक करे, ते एमके, लोकमां हुं मुख्य श्रावक कहेवाउं छुं, माटे जो हुं सामायिक नहीं करुं, तो लोक कहेशेके श्रावककुलमां उपज्यानुं फल शुं ? एवी सहु कोइ मारी निंदा करशे. वली लोक कहेशे के जूर्ज ! फलाणो आवो वृद्ध थयो छे, तो पण कांइ धर्मनी निष्ठा तेना मनमां आवतीज नथी. बीजुं तो सर्व रह्युं, पण दररोज एक सामायिक करवुं, तो ते पण करी शकतो नथी. एवुं ते शुं छे ? नाम तो महोटुं धरावेछे, पोसह पडिकमणां करवानी तो हालज वखत छे, ते पण नथी करतो, एवो लोक ठबको देशे, माटे मनमां सामायिक करवानो जाव नहीं, पण अपवादजयथी सामायिक करे, ते पांचमो जयदोष.

६ छठो निदानदोष. ते सामायिक करीने, धनादिकनुं अथवा बीजी कोइ पोतानी इछित वस्तुनुं नियाणुं करे के, आ सामायिकनुं फल होय, तो आ लोकमां घणुं धन पामु, परलोकमां पण देवतानां सुख पामु, एवो आशय राखीने करे, ते कोडीने अर्थे क्रोडनी चीजने हारेछे, सामायिकनुं फल महोटुंछे, तेम छतां नियाणुं करवाथी ते वेची नाख्युं, एवुं करे ते छठो दोष.

७ सातमो संशयदोष. ते एमके जे सामायिक करे, पण संशय मटे नहीं, संशय जर्युं ते सामायिक करे, पण तेने तत्वनी प्रतीति नहीं. मनतां एम विचारे के कोण जाणे सामायिकनुं शुं फल मलशे ? करीयें छैयें तो खरा, पण आगल उपर एनुं फल थशे के नहीं ? एवो संशय धरीने करे, ते सातमो दोष.

८ आठमो कषायदोष. ते एमके कषाय जर्युं सामायिक करे. अथवा कोइने सार्थे रोष वर्त्तेछे तेथी तेने जवाब देवो नथी, तो

तेटला वास्ते सामायिक करी वेसे. एवी रीतें कपाय नखुं सामायिक करे, तेमां शुं फल मले ? सामायिकमां तो पूर्वे जे कपाय कस्यो होय, तेनो पण परित्याग करे; एवुं रहस्यछे तेम छतां जो ते कपाय सहित सामायिक करे, तो तेने आठमो दोप लागे.

ए नवमो अविनयदोप. ते एमके, विनय रहित थको सामायिक करे. विनय ते गुरुनो अथवा थापनाचार्य प्रमुखनो जाणवो. जैनशैलीमां तो सर्वधर्मनी करणी, विनय विना नथी. धर्मनुं मूल पण विनयछे, विनयें करीने वहुमाननी पुष्टतायी अगणित फल यायछे, थोडी घणी धर्मकरणी करे, त्यहां पण जो विनय, वहुमान अति घणुं होय, तो एथी करी ते महाव्रत जेवुं फल पामे. ए माटे सामायिकमां तो विनयसहाय सामायिक सफल छे. ते विनय जे न करे, ते नवमो दोप.

१० दशमो अवहुमानदोप. ते एमके, वहुमान रहित सामायिक करे, पण नक्तिनाववी न करे. सामायिक उपर तो घणुं वहुमान राखवुं जोइयें जेम कोइ दुःखी जीव,रोग,शोक,दुःख,दरिद्र तामां पची रह्यो थको महा दुःख नोगवे छे,एटलामा कोइ कृपावंत महोटो उपकारी सुजन होय, तेने जोतांवेत तेना उपर दया उपजे. त्यारें ते दरिद्रीने पोताना घरमां लावीने औपधादिक करी सर्वदुःख मटाडे, धनादिक आपी दरिद्रता मटाडे, वीजी पण सर्व रीतें सहायता करे. ए प्रमाणे पोतानी वरावर करी वेसाडे, त्यारें ते दरिद्रीने ते उपकारी पुरुप उपर केवुं वहुमान अने केवी नक्ति रहे ? मनमां विचारे के ए उपकारी उपर मारां प्राण पण कुरवान छे. हवे ए तो एक आ लोकना पुजलिक सुखनो उपकारी छे, तेनी उपर एटलुं वहुमान रहे छे, त्यारें सामायिक, तो आ लोक अने परलोकने विपे पुजलिक तथा मोक्ष, ए उनय सुखनुं दाता छे अने वाह्याभ्यंतर दुःखनुं मटाडवावालुं छे, ए माटे

ते सामायिक ऊपर तो एना करतां पण महोटुं बहुमान अने अधिक जक्ति राखवी जोइयें. ते प्रमाणे न करे, तो दशमो दोष लागे.

एवी रीतें मनना दश दोष, तेम वचनना दश, अने कायाना बार, ए सर्व मलीने बत्रीश दोष थाय. तेउने टालीने जे शुद्ध सामायिक करे, ते सुखनुं कारण कहीयें. बत्रीश दोष रहीत एक सामायिकनुं फल श्री जैनागममां व्यवहारथी तो आ प्रमाणे कह्युंछे, जे बाणुं करोड, उंगणशाठ लाख, पचीश हजार, नवशें पचीश, एटला पल्योपम अने वली एक पल्योपमना नव जाग करवा, तेमांना आठ जाग ऊपर एटला पल्योपम देवतानुं आयुष्य बांधे, अने नरकगति कापे, ए माटे श्रावकने प्रतिदिन सामायिक करवुं, जेणे करी जन्म सफल थाय. ए व्यवहारशुद्ध सामायिकनुं फलछे; अने निश्चय शुद्धोपयोगथी सामायिकनुं फल, अनंत गणुंछे, एटले ते यावत् सिद्धिस्थानकें पहोचाडे. ए माटे सामायिक छे, ते एकांत उपादेय छे. ते सामायिकना पांच अतिचार छे, ते कहेछे.

१ प्रथम कायदुःप्रणिधान अतिचार. ते एमके, पोताना शरीरना अवयव जे हाथ पग प्रमुख, ते अणपुंजे, अण प्रमार्जे हलावे. जींतने पीठ लगाडीने बेसे, निद्रा प्रमुख करे, ते कायदुःप्रणिधाननामे प्रथम अतिचार.

२ बीजो मनदुःप्रणिधान अतिचार. ते एमके, मनमां कुव्यापार चिंतन. ते क्रोध, लोज, द्रोह, अजिमान, ईर्षा,असूया प्रमुख दोषसहित कार्यव्यासंगासक्तसंभ्रमचित्तसहित सामायिक करे, ते मनदुःप्रणिधान नामे बीजो अतिचार.

३ त्रीजो वचनदुःप्रणिधान अतिचार. ते एमके, सामायिकमां सावद्य वचन बोले, अथवा पद अक्षरादिक अशुद्ध बोले, ते उच्चारतां थकां सूत्रनी स्पष्टता मालम पडे नहीं अने अशुद्ध सूत्र उच्चारे, अर्थनी पण मालम पडे नहीं. अतिशय चपलपणा

यें गडबडथी कही जाये; ते वचनडुःप्रणिधान त्रीजो अतिचार.

४ चोथो अनवस्थादोषरूप अतिचार. ते एम के, सामायिक जे वखतें करवुं जोइयें, ते वखते करे नहीं; अने करे तो यद्वा तद्वा करे, अथवा हठथी पाले अथवा उतावलथी पाले, आदर विना करे, स्वेछायें क्रिया करे, ते अनवस्थादोषरूप चोथो अतिचार.

५ पांचमो स्मृतिविहीन अतिचार. ते एमके, सामायिक लेइ ने नूली जाय. क्रियादिकमां ज्रांति पडे. सामायिकदंकक सूत्र उच्चार्यां के नथी उच्चार्यां ? अथवा पाल्युं के, नथी पाल्युं ? एवी ज्रांति, प्रबल प्रमादना उदयथी थाय. सर्व साधननुं मूल तो रुप ए यादगिरिछे. जायतनो उपयोगछे ते तो विसरी गयो, त्यारें सामायिकना फलमां वहो लागे. ए विस्मृतिरूप पांचमो अतिचारछे.

इति श्री द्वादशव्रतविवरणे नवम सामायिकनामा प्रथम शिक्षा व्रतकथने पंकित श्री उयोतसागरगणिना कृतजाषा संपूर्णा ॥ ए॥

॥ अथ ॥

॥ श्री दशम देशावगाशिकनामा द्वितीय ॥
॥ शिक्षाव्रत प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

श्रीपारस पदकमलयुग, चंदू चडे उमेद;
देशावगाशिक दशम व्रत, तिसका कहों सुनेद ॥ १ ॥

हवे देशावगाशिक एटले देशावगाहीनो तो, छठा व्रतमां राख्युं जे दिशिपरिमाण, ते तो यावज्जीवनुं कर्युं छे. ते दिशिक्षेत्र घणां छे, ते तेनुं कांइ नित्य काम पडतुं नथी, एमाटे दिनदिन प्रत्यें तेनां संक्षेप करे, केआजना दिवसनां दश कोश. वा पचास कोश, वा पांच कोश अथवा नगरना दरवाजा सुधी, अथवा कोश, अर्द्धकोश, घाग थकी

चा सुधीनी जग्यानी दिशि राखे. अथवा अमुक घरनी हद्द सुधी इ त्यादिक हद्दपर्यंत जवुं आववुं उपरांत जावानो नियम करे. एवुं करवुं, ते देशावगाशिक व्रतछे. ए छठा व्रतनुंज विशेषछे, तेतो याव ज्जीव संबंधनो नियम कस्योछे अने एतो चोमासुं, वीश दिवस, दश दिवस, पांच दिवस, अहोरात्री, अथवा दिवस सुधी अथवा प्रहर अथवा मुहूर्त्त सुधीनुं पण. एटला व्रतमां पूर्वे बहु क्षेत्र राख्यां हतां तेउनो दोष अहीं संक्षेप कस्यो. क्रिया उतारी, एटले दिग् व्रतनुं देशावगाशिक नित्य प्रत्यें परिमित क्षेत्रगमननुं परिमाण राखे जे, हुं कायायें करी फलाणे गाम, फलाणी जग्यायें, देवलें, दरगाहें अथवा देवीना गामें, अथवा कोइ बीजी जग्यायें जइश. ते उपरांत जवानो मने निषेध छे. एमां जे दिग्व्रती प्राणीने देश परदेशनो व्यापारछे, ते व्रती एम कहेके, मारे कायायें करी अमु क क्षेत्रथी उपरांत जवानो निषेधछे. पण दूर संबंधनो कागल प्र मुख लखवो ने वांचवो ते अथवा कोइ माणसने मोकलवुं ते मने माफ छे तथा ते देश संबंधी वात प्रमुख सांजलवी पण माफछे अने जेने दूरनो व्यापार नथी, ते तो परिमाण उपरांतनी हद्दनो आवे लो कागल पण वांचे नहीं, कोइने कागल लखीने मोकले पण नहीं. अने जो चित्तनी प्रकृति संकल्प विकल्पमां न होय तो ते दूर देशनी वातो पण सांजले नहीं अने वात करे पण नहीं. परंतु जो एवी रीतें न रही शकाय तो व्रतना जांगामां बूट राखे अने जा णतां थकां परिमाणमां दोष लगाडे नहीं. ए देशावगाशिक नि त्यव्रत करे, ते सदा सर्वदा सवारना पहोरमां चौद नियमनी याद गिरीमां सर्व संजारीने राखे. वली पण एने संक्षेपीने रात्री संबंधी जूदां राखे, अने जे अहोरात्रनां करे, ते सवारना पहोरमांज याद करे. एवी रीतें गुरुपासेंथी विधिसहित व्रत धास्यां होय, तेम पा ले. ए देशावगाशिक व्रतना पांच अतिचार छे. तेनां नाम लखेछे.

१ पेहेलो आणवण प्रयोगातिचार. ते नियमनी जूमिका वाहे रनी कोइ चीज होय, तेनी गरज पडे, त्यारें विचारे के मारे तो नि यम उपरांत जूमियें जावुं नथी अने जीवनी चाहना तो ते चीज मांज लागी रहीछे. त्यारें कांइ पोतानी बुद्धि उपार्जे अने ते जूमि जणी जनारा कोइने देखीने कहेके हे जाइजी! फलाणी जग्या सुधी जाशो तो अमारुं पण कांइ कामछे, ते पण तमे करता आव जो. ते सांजली ते माणस कहेके हाजी, हुं जइश. ते समयें ते व्रती कहेके, त्यारें तो अमुक चीज मारे माटे जरूर लेता आवजो त्यारें ते तरफ जनाराने ते जणश. तेनी महोबतें करी लाववी जोइयें. एवी रीतें ते चीज, नियमबाहेरनी जूमिथी मंगावी ले अने पोताना शाणपणाथी ते व्रती विचारे के, मे मारुं व्रत पण राख्युं, अने मारे कामें जे चीज जोइती हती, ते पण आवशे, अने एतो पो ताने कामे जायछे तेनाथी हुं महारुं पण काम करावुं छुं, एनो बोजो मारा माथा पर नथी. एवी रीतें बुद्धिनुं अज्ञानपणुं करे, पण एम न विचारे के, एथी करी उलटो तोटो थाय छे. केम के, जे कार णे देशावगाशिक व्रत जे कर्युंछे, तेमां तो जातां आवतां हिंसाप्रमु ख दोष बहुज लागे. ते दोषनी क्रिया मटाडवा माटे कर्युंछे. अने जेवारें बीजा माणस पासें नियम क्षेत्रथी बाहेरनी चीज मंगा वे, ते वारें ते आजाण्यो पुरुष, अजयणा करतो जइने ते चीज लइ आवे, तेनाथी तो पोतेंज जइने लइ आवे तो सारुं? कार णके पोतें तो धर्मरुचियुक्तछे, तो तेथी जयणाथी जवाय, ते नाथी हिंसा केम थाय? अने ते अज्ञानी तो अनेक हिंसादि दोष लगावीने ते चीज लावे, फरी तेनी पापक्रियानी अनुमोदना क री जाय. जुर्ड! फलाणो अमुक क्षेत्रें गयो हतो तेथी सारुं थयुं अमारुं पण काम थयुं. ए माटे व्रतधारी यइने एवा कपटव्रत नो जांगो न करे. व्रतधारी तो गुरुनी आज्ञायें अने शास्त्रनी रीतें

के एमां अज्ञानपणुंछे. जे जाणीबूजीने पोतानुं कार्य चतुरताथी करे, तो तेने चोथो रूपानुपाति अतिचार लागे.

५ पांचमो पुद्गलप्रक्षेप अतिचार कहेछे. पुद्गलप्रक्षेप अतिचार ते नियमना क्षेत्रनी बाहेर कोइ पुरुष, पोताना कामने माटे जतो होय. त्यारें तेने जोइ व्रती अज्ञान दोषथी खोटी माया केलववा ने तत्पर थयो, जे हुं ए जता माणसने साद करी बोलावी लउं, अथवा हुं तेनी सामो जइने उनो रहुं तो म्हारा व्रतने दूषण लागे. माटे साद कर्या विना अथवा एनी सामु जवा विना कोइ बीजी क लायें करी एने बोलावुं. के जेथकी ए पोतें आवी म्हारी आगल उनो रहे. एवो विचार करीने आवनार पुरुष उपर कांकरी फेंके समस्या करे; कपडानो छेडो बतावे. त्यारें ते कांकरी ते माणस ना देहने लागे एटले ते पण पाछुं फरीने तेनी सामुं जुए. त्यारें व्रती माणसनी अने तेनी दृष्टि एक थाय तेथी ते पोतेंज चाल्यो आवे, पछी ते व्रती मोहोंवनथी पोतानुं कार्य करी तेने विदाय करे, त्यारें विचार करे के, में केवी बुद्धि वापरी ? जेम लौकिक मौनि बोलता नथी अने संज्ञा चेष्टा करीने कार्य करे छे, तेम में पण बुद्धि बलथी मारुं व्रत राख्युं अने कार्य पण कर्युं. एवी अज्ञानक्रिया ते पांचमो पुद्गलप्रक्षेप अतिचार जाणवो. माटे समजु व्रती होय, ते एवी अज्ञानपणानी वात जो न करे, तो ते म्होटा लाजना हेतुने पामे. अहींयां पहेला वे अतिचार अज्ञानताथी थाय, अने पाछला त्रण अतिचार, कपटपणे थायछे; ते माटे ए अतिचार न आदरवा. ए बीजुं शिक्षाव्रत थयुं. अहीं छठा व्रतना नदर्यी दशमुं व्रत संक्षेप छे. ए सर्वी कहेवामां एवुं जाणी लेवुं के जेम ए व्रतमां संक्षेप तेम परिग्रहादिक सर्वव्रतमां संक्षेप थायछे. इति तत्वं.

[illegible] शिकनामा द्वितीयशिक्षा व्रतकथने पंडित श्री उद्योतसागरगणिना कृतनाषा संपूर्णा ॥१०॥

॥ अथ ॥

॥ श्री एकादश पौपधोपवासनामा तृतीय ॥
॥ शिक्षाव्रत प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

अब अग्यारम व्रत लिखुं, नाम पोसह उपवास;
जो विधिसहित करे मती, तो पामे उल्लास ॥ १ ॥

तिहां पोसह व्रतना चार भेदछे, ते लखे छे. तेमां प्रथम आहार पोसह, बीजुं शरीरसत्कारपोसह, त्रीजुं अब्रह्मपोसह, अने चो थुं अव्यापारपोसह. ए चारे पोसहना प्रत्येके बे बे भेदछे. एक देशथकी पोसह अने बीजुं सर्वथकी पोसह.

१ तेमां प्रथम आहारपोसह. ते देशथी जे त्रिविहार उपवा स करीने पोसह करे. अथवा आयंबिल पोसह करे, अथवा त्रि विहार एकाशना करी पोसह करे. ए त्रणे प्रकारनां पोसह करे, ते देशथी पोसह कहेवाय तेनी शैली कहेछे. पोसह लीधा पहेलां पोताना घरमां कही राखे जे हुं पोसह करीश ने आयंबिल अ थवा एकाशणुं करीश. ते माटे भोजन काले हुं आहार करवाने आवीश; अथवा तमे पोसहशालामां आहार लेइ आवजो, एवुं कहीने पछी पोसह लीए, त्यां पोसह लीधा पछी जेवारें मध्यान्ह ना देववंदन करी रहे, तेवार पछी चरवलो, मुहपत्ति अने पोंछणुं, ए त्रणे उपकरण, साथे लेइ पछेडी ओढीने साधुनी रीतें उपयोगी रहेतो थको मार्गमां जयणा सहित चाल्यो जाय. अने भोजन स्थानकें जइने इरियावही पडिक्कमे, गमणागमण आलोवे, अने प छी पोंछणुं पीछाथीने बेसीने आहारनुं पात्र पडिलेहे. पछी पोताने लेवा योग्य जे आहार, ते लीये अने ते लेइने साधुनी रीतें अरक्त थको आहार करे. मुखथी आहारनुं वखाण न करे, आहारने

वखोडे पण नहीं, आहारनी जूठ, गीरावे नहीं, आहार करी र
पठी गरम पाणीथी आहारनुं वाशण धोइने ते पाणी पी जा
पठी पात्रने शुद्ध करीने नितारी पाणी प्रमुख सूकाइ जवा देइ,
पात्र कोरुं करीने पाछुं आपे. त्यार पठी फरी उपयोगी थको
नी पेरें पौषधशालामां पूर्व स्थानके जइ वेसे. मार्गमां कोइ ज
आवतानी साथें वात करे नहीं. ए प्रमाणे स्वस्थानकमां आवी
इरियावही पडिकमे, चैत्यवंदन करी धर्म क्रियामां प्रवर्त्ते. अ
वा जो कोइ संबंधी तथा सेवक सामो आहार, पोसहशाला
लावे, तो पण पूर्वोक्त रीतें आहार करीने पात्र कोरां करी
पाछां आपे, अने पठी धर्मक्रियामां प्रवर्त्ते. जो त्रिविहार उपव
होय तो एकलुं पाणीज मात्र पूर्वनी पेरें जइने लइ आवे, एवी र
आहारपोसह करे, तेने देशथी पोसह कहीएं अने चौविह
उपवास करी पोसह करे, तो तेने सर्वथी पोसह कहीयें.

२ वीजुं शरीरसत्कारपोसह. ते सर्वथा शरीरनो सत्कार
ले धोवन, धावन, तैलमर्दन, वस्त्राभरणादि शृंगार प्रमुखथी
इ रीतें शरीरनी शुश्रूषा न करे. साधुनी पेरें अपरिकर्मित थ
रहे, ते सर्वथी शरीरसत्कार पोसह कहीएं. तथा देशथी श
सत्कार पोसह ते पोसहमां हाथ पग प्रमुखनी शुश्रूषा करवा
छूट राखे, ते देशथी शरीर सत्कारपोसह कहीयें.

३ त्रीजुं अब्रह्मचर्य पोसह. ते जे त्रिकरण शुद्धें पोसहमां
... पाले, ते सर्वथी ब्रह्मचर्य पोसह जाणवुं अने जे म
अने दृष्टि प्रमुखनी छूट राखे अथवा परिमाण राखे,
ब्रह्मचर्य पोसह जाणवुं.

... थुं सर्वसावद्यव्यापार त्याग करे ते सर्वथी अव्यापार पो
तेम परि- अने जो एकादि अने जो एकादि वस्तुनी अथवा उ
इति श्री द्वादश- दिकनी छूट राखे, ते देशथकी अव्यापार पोसह कही
व्रतकथने पंक्ति

ए प्रमाणे चार प्रकारनां पोसह छे. ते दरेकना बे बे भेदछे. ते प्रथम ज्यारें आगमविहारी गुरु विद्यमान हता. त्यारें ते भव्य जीव श्रावको पण शुद्ध उपयोगी घणा पापभीरु हता; अने तेओ पोतें जे जे प्रतिज्ञा करता हता, तेवीज शुद्ध पालता हता, तेवीज रीतें उपयोगमां राखीने चालता, पण विस्मृति कर ता न हता, तथा तेमां कमवेश करता न हता अने गुरु पण अतिशय ज्ञानना प्रभावथी योग्यता जाणी लेता हता के आ देश थकी पोसह करवा लायकजछे, अथवा सर्वथकी पोसह करवा लायकछे. वली छद्मस्थ भावथी कदापि कमवेश थइ जाय तो ते तरत जाणीने विचारता के मारी प्रतिज्ञामां आटली खोंच लागी आटलुं अविरति पणुं लाग्युं. एवुं जाणीने तेनी तरत आलोय णा लेता, अने पडिक्कमतां पण महोटी भूल न पडवा देता. अ ने हमणां तो एवा उपयोगी जीव नथी. काल दोषना प्रभावथी वक्र जडछे, ए माटे पूर्वाचार्यायें उपकारने अर्थे लाभालाभनी तुल्यता विचारीने आ मुजब जीतव्यवहार बांध्योछे. तेमां प्रथम जे आहारपोसहछे, तेना बे भेद कीधाछे. ते आहारपोसह दे शथी पण करे अने सर्वथी पण करे. एम जेवी पोतानी शक्ति होय ते प्रमाणे करे. अने बाकीनां जे त्रण पोसहछे, ते तो स र्वथीज करे. देशथकी तो थायज नहीं. ए व्यवहारशैली बांधीछे. एवी रीतें वर्तमान कालें पोसहनी प्रवृत्तिछे. हवे पोसहनो प्रभाव आगममां जे कह्योछे, ते लखेछे.

जे, पापना समूह तेणे करी भारयुक्त थयेला एवा बहु सावद्यव्या पारी गृहस्थने आरंभनो बोजो उतारवाने पोसह, ते विश्रामनुं स्था नकछे. विश्राम करतां अल्प बोजो थाय. जेम भार उपाडनारो पोताना मस्तक उपर मोहोटी गांसडी उपाडी बे, चार कोश चा ले एवामां कोइ विश्रामनुं स्थानक आवे, त्यारें ते प्रसन्न थइने

बोजो उतारे. जे माटे शीतल ठाया विश्रामनुं स्थानक होय तथा घडिवार जलाशय होय त्यां बेसें, त्यारें आनंद थाय, थाक मटे, शरीर हलवुं थाय, फरी बोजो उपाडीने चालतो थाय. ए प्रमाणे बे, चार विश्राम लेतो थको सुखें धारेले ठेकाणे पहोची जाय, तेम श्रावकें पण दररोज सावद्य व्यापारनो बोजो घणो उपाड्यो छे. अने तेवो महोटो जारे बोजो उपाडीने चालेछे, ते ज्यारें पांखी प्रमुख पर्वना दिवस आवे, त्यारें प्रसन्न थइने घरनो जे सावद्य कर्मरूप बोजो, तेने उतारी घरमांज राखीने विश्रामरूप क्षेत्र पौ पध शालामां जइने बेसें, अने पोसह धारे त्यारें, सावद्यरूप बो जानो परिश्रम एटले थाक उतरी जाय. अने जावना उपदेशरूप शीतल पवन थकी विषयकषायरूप गरमी, विकल्प पशीनो मटी जाय, आत्मा शीतल थाय. अने जिनशासनरूप कल्पतरुनी ठा यामां बेसीने पोताना स्वरूपचिंतवनरूप जलें करीने घणा का लनुं पाप धोइ नाखे. आत्माने ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररूप जा वजोजनथी पोषे. ए प्रमाणे वचमां वचमां पोसह करण रूप वि श्राम लेतो थको आराधकजावना स्थानकें जइ पहोचे. अहींयां आठे दिवसें अथवा पंदरे दिवसें पोसह करे, तो पण फल एक पोसहनुं एटलुं कह्युंछे. शास्त्रमध्ये एक पोसहनुं फल कह्युंछे, ते जाणवुं, जे प्रजुनी आज्ञापूर्वक एक अहोरात्री पोसह करे, ते जीव बे हजारने सातशें कोडी तथा ते उपर सीत्तोतेर कोडी सी त्तोतेर लाख, सीत्तोतेर हजार, सातशें ने सीत्तोतेर. एटला पल्योप म तथा एक पल्योपमना नव जाग करीयें तेवा सात जाग उपर एटलुं देवतानुं आयुष्य बांधे; अने एटलीज नरकगतिथी बूटे. अहो ! एक पोसह कस्याथी जीव, एटलो लाज उपार्जे ? तेना अंकसंख्यानी स्थापना. (२७७७७७७७७७७ अने ७/९) एटलुं फल, एक शुद्ध व्यवहारपोसहनुंछे. अने वली जो व्यवहारपोसह क

रतां थकां चेतनाने निश्चयपोसहनी लीनता लागी, तो ते पोसह ना फलप्राप्तिनुं तो परिमाण पण न थाय, तेनो अगणित लाजठे. यावत् रत्नत्रयी क्षायकजावें थइ जाय. त्रणे लोकनां जव्य जीवने पूजनीय थाय. ए माटे पोसहठे, ते गृहस्थने अवश्य करवुंज. ए पोसहठे, ते कर्मरूपी जावरोगनुं औषधठे. माटे गृहस्थें पर्वदिवस आवे त्यारें जरुर पोसह करवुं. हवे ए व्रतना पांच अतिचार लखेठे.

१ प्रथम अप्पडिलेहिअ, डुप्पडिलेहिअ, सिज्झासंथारक अतिचार. ते जे स्थानकने विषे पोसह संथारो करे, ते जूमिनी तथा संथारानी पडिलेहणा करे नहीं. एटले संथारानी जग्या पोतानी आंखेथी सारी पेठें निगाह करीने जूए नहीं अने कदापि जूए तो प्रमादथी कांइ दीठी कांइ न दीठी, एवी रीतें जूए, ते पहेलो अतिचार.

२ बीजो अप्पमज्जिय, डुप्पमज्जिय, सिज्झासंथारक अतिचार. ते एम के, ते संथारो, रजोहरण प्रमुखथी पुंजे नहीं. कदापि पुंजे, तो जेवो तेवो गडवडथी संथारो पुंजे, पण वस्त्रांचलें दंकाशणथी पुंजे नहीं, अने कोइ जीवनी रक्षा करे नहीं. ते बीजो अतिचार. जे प्रमाणे श्री जैनशासननी शैली एवी ठे, ते प्रमाणे मार्गी जीव क्रिया करे, ते आवी रीतेंके प्रथम तो दरेक क्रियामां दृष्टिपडिलेहण करे. सारी रीतें सर्व स्थलें चीज ने निगाह करी जोइने पठी पुंजणा प्रमुखथी पुंजे, पठी ते वस्तु वापरे, एवो तो सहेज चाल ठे. त्यारें पोसहादिक क्रियामां तो निपट उपयोग धरीने पडिलेहणा प्रमुख करवी जोइयें. अने एवी रीतें जयणाथी जो न करे, तो तेने बीजो अतिचार लागे.

३ त्रीजो अप्पडिलेहिय, डुप्पडिलेहिय, उच्चारपासवण जूमि अतिचार. ते एमके लघुनीति अथवा वडीनीति परठवानी जूमिने सारी रीतें दृष्टियें करी अवलोकन न करे, अने अवलोक

न करे, तो जेम तेम काम चलावी दे. जीवयत्न कीधा वीना लघु नीति प्रमुखनी परठवणा करे, ते त्रीजो अतिचार.

४ चोथो अप्पमज्जिय, डुप्पमज्जिय, उच्चार पासवण भूमि अतिचार. ते मात्रानी, तथा पोसहशालनी भूमि अप्रमार्जित देखीने न पुंजे. अने पुंजे तो यद्वा तद्वा करीने काम करे. एम वडीनीति, लघुनीति प्रमुख यत्नथी परठवे नहीं; ते चोथो अतिचार.

५ पांचमो पोसह विधि विचरीए अतिचार. ते आहार त्याग पोसह कीधे, क्षुधादि परिसह जागे, त्यारें पारणुं करवानी चिंता करे, के प्रभातें फलाणी रसोइ अथवा फलाणी चीजनो अहार करशुं तथा एम चिंतवे जे अमुक काम सवारें करवुं छे, ते त्यां जइश अने तेनी उपर तागादो करीश. तथा प्रभातमां पोसह पालीने पछी सारी रीतें तेलमर्दन करावीने खुब गरम पाणीथी स्नान करीश. तथा अमुक पोशाक पहेरीश, अने कुलस्त्रीनी सायें खूब तरेहथी आवी रीतनो भोगविलास करीश. एवुं सावद्य चिंतवे, तथा संध्यासमये स्थंमिलशोधन न करे पोसहमां विकथा करे, निद्रा करे अने नीचें लखेला अढार दोषोने टाले नहीं. ते अढार दोषोनां नाम लखीएं छेयें.

१ पोसहमां व्रती विनाना वीजा श्रावकनुं आणेलुं पाणी न पीवुं.
२ पोसह निमित्तें सरस आहार लेवो नहीं.
३ पोसेह करवाना आगल दिवसें उतर पारणामां विविध प्रकार संयोग मेलवीने आहार करवो नहीं.
४ पोसह अथवा पोसह निमित्त आगले दिवसें देह विभूषण न करवुं.
५ पोसह निमित्तें वस्त्रादिक धोवरावबां नहीं.
६ पोसह निमित्तें आभूषण घडावीने पहेरवां नहीं, वस्त्र लेवां नहीं, अंगें घरेणां पहेरवां नहीं. स्त्रीने पण नथ तथा कंकण प्रमुख जे सौभाग्यना कुशल चिन्ह छे, ते पहेरवां परंतु ते विना पोसहमां वीजां नवां घरेणां घडावीने स्त्रीयें पहेरवां नहीं.

७ पोसह निमित्त, वस्त्र रंगावीने पहेरवां नहीं.
८ पोसहमां शरीरथी मेल प्रमुख उतारवो नहीं.
९ पोसहमां शयन करवुं नहीं. निद्रा करवी नहीं.
१० पोसहमां सारी वा नठारी स्त्री संबंधी कथा करवी नहीं.
११ पोसहमां आहारने सारो नठारो कहेवो नहीं.
१२ पोसहमां सारी वा नठारी राजकथा तथा युद्धकथा करवी नहीं.
१३ पोसहमां अमुक देश आवो रूडो छे अथवा अमुक देश जूंडो छे, एवां देशकथानां वचन, बोलवां नहीं.
१४ पोसहमां पुंज्या विना जूमिए लघुनीति अथवा वडीनीति परठवी नहीं, अने परठवे तो पोतायी वोसिरावे. इरियावही पडिक्कमे.
१५ पोसहमां बीजानी निंदा करवी नहीं.
१६ पोसहमां स्त्री, पिता, माता, पुत्र. जाइ विगेरे सर्व संबंधी सायें वार्तालाप करवो नहीं.
१७ पोसहमां चोरनी कथा न करवी.
१८ पोसहमां स्त्रीनां अंगोपांग दृष्टि लगावीने जोवां नहीं.

ए अढार दोष पोसहना छे. ते त्याग करीने पोसह करे, ते शुद्ध पोसह कहीयें. तेथी जो विपरीत करे, तो पांचमो अतिचार लागे. इति श्रीद्वादशव्रतविवरणे एकादश पौषधोपवासरूप तृतीय शिक्षा व्रते पंमित श्रीउद्योतसागरगणिना कृतजाषा संपूर्णा ॥ ११ ॥

अथ

॥ श्री द्वादश अतिथिसंविजागनामा चतुर्थ ॥ शिक्षाव्रत प्रारंजः ॥

॥ दोहा ॥

अब बारम व्रत हे "अतिथि, संविजाग" यह नाम;
कहुं दोष आहारके, पुनि अतिचार हे ताम ॥ १ ॥

हवे अतिथि एटले जेने लौकिक पर्वोत्सवादिक दिवसोनुं प्र योजन नथी, ते अतिथि कहीयें. एटले लोक व्यवहारमां जे संसा र वृद्धिनी हेतु तिथि, तेहेवार, विवाहादि लग्नतिथि इत्यादिक सर्व जेणे गेडी दीधांछे. सर्वे दिवसोमां जेनी धर्माराधनकरवानी एक निष्ठाछे. तेने अतिथि कहीयें. अथवा जेम अतिथि एटले प्राहु णो, मिजमान माणस कोइने घेर आवे, ते कांइ तिथि तेहेवार नो दिवस जोइजे न आवे, गमे ते दिवसें पंथेंथी चाल्यो आवे. ते ने कांइ तिथिके तेहेवारनुं प्रयोजन नहीं, अणचिंतव्यो आवीने उजो रहे; तेम साधु पण निमंत्रणादि कीधा विना जोजन कालें आवी हाजर थाय. प्रायें साधु अमयो तो गुरु आज्ञा विना गृह स्थने घेर कदापि जाय नहीं, अने जोजन कालें मधुकर एटले ज्रमरनी वृत्ति करे. निमंत्रण विना गृहस्थने घेर विचरता जाय. ते पण गृहस्थने अकलामण न उपजावे. एवी रीतें आहार लिये, ते अतिथि जिनाज्ञाकारी शुद्ध साधु तेनो जे संविज्ञाग क रे. एटलें न्यायोपार्जित शुद्ध व्यवहारें कमाएलुं जे ड्व्यादिक ते मांथी पोताना उदर जरणने माटे उत्तम कुलाचार पूर्वक जे शु द्ध निर्दोष आहार नीपजाव्यो अने ते पण पूर्वकर्म पश्चात्कर्मा दि दोष रहित होय, एवो शुद्ध अने निर्दोष आहार ते बहुमान सहित जाग्ययोगें गृहने विषे साधु आव्या थका अतिहर्षवंत थ यो थको आहार आपे. अने ते पण दानना पांच गुणें करी युक्त दातारनी शुद्धता धरी आपे. ते दानना पांच गुणनां नाम लखेछे.

१ प्रथम जे जैनमार्गी दातार. ते शुद्ध पात्रनी प्राप्ति पामीने प्रथम पोताता घरना आंगणाने विषे मुनिनां दर्शन मात्र थयां अने तेणे करी घणा दिवसनी अंतरंगनी चाहनाना उल्लासथी आनंदनां आंसु आवे, जेवी रीतें कोइ आपणो प्रिय अने परम हित कारी प्राणप्रिय एवो वल्लज सज्जन दूर देशांतरें गयो होय, तेने कदी

पण मनथी विसारत्तो नथी; मनमां एज वांछा लागी रहे के ते आपणने क्यारें मळशे ? एवी चाहना राखतां राखतां घणो काळ वीत्या पछी लांबी मुदतें कोइ वखत ते सज्जन अणचिंतव्यो एका एक आवी उजो रहे, त्यारें ते परम वल्लजने जोइने अंतरंग रागनी धारा उल्लासथी आंखमांथी हर्षनां आंसु पडे. ते शीतल होय जे कारणे वियोगना आंसु गरम होयठे अने हर्षना आंसु शीतल होयठे. तेम श्रावक पण साधुने आवतो देखी करी प्रशस्त रागजक्तिना उल्लासें उठे; अने मनमां विचारे के अहो ! आज हुं महोटो जाग्यशाली के जे हुं अनादिनो जूख्यो, लब्ध संवलरहित, जाव दरिद्रें पीडित, ज्ञानलोचन रहित अंधजावें पीड्यो, अपारसंसारचक्रमां पड्यो जटकतो हतो, एवो जे हुं, ते बहु अकथनीय दुःख पामतो अने कशी गणतीमां नहीं हतो, एवो महादुःखी मने जोइने आ महारा मोहोटा हितकारी मुनिराजे महोटो करूणाजाव धारण करी मारा उपर महोटी मेहेरबानी कीधी. जे प्रथम तो मने ज्ञानांजनशलाका फेरवीने मारां सम्यक्ज्ञान लोचन खोली दीधां अने ए मुनियें श्रण तत्वसेवारूप आजीविकानो व्यापार शीखवाड्यो, तथा मुजने रत्नत्रयी धारणरूप नियमा करी दीधी. एवी रीतें महारो अनादिनो दरिद्र जाव मूकाव्यो, मने सारा आदमीनी गणतीमां आण्यो. एवा निष्कारण अने गरज विना महोटा उपकारी महामुनिराज ते मारा घर आंगणाने विषे आव्या, ए जावनानी बुद्धिथी, प्रशस्तरागना जाव उल्लासथी हर्षानंदनां आंसु आवे, ते दाननो पहेलो गुण.

२ बीजो जेम संसारी जीवने अत्यंत इष्ट वस्तुनो संयोग पामवाथी रोमावलि उजी थाय, तेम महोटी जक्तिना प्रजावथी मुनिने जोइने ते श्रावकनी सर्व रोमावलि उल्लसित थाय, अने हृदयमां हर्ष समाय नहीं, ते दाननो बीजो गुण.

३ त्रीजो मुनिने देखीने मुनिप्रत्यें बहुमान उत्पन्न थाय. जेम कोइ संसारी सामान्य गरीब गृहस्थने घेर राजा पोतें चालीआवे त्यारें ते गृहस्थ, ते राजाने केवुं मान आपे ? अर्थात् घणुंज मान आपे. मनमां घणोज आश्चर्यमय थइ उमेद जर्यो हर्ष जर्यो थाय. अने मनमां विचारेके अहो ! आज म्हारे घरे महा राज आव्या, माटे घरमां कोइ सारी अने नवाइ जेवी चीज होय ते हुं एमने भेट करुं, फरी फरी एवा म्होटा लोको मारे घेर क्यां थी आवे ? आवो संयोग फरी क्यारें मलवानो छे ? आ दुर्लभ यो ग तो मारा म्होटा जाग्योदयथी मल्योछे. एवो विचार करी घर मां जे सर्व करतां सारी अने नवाइनी चीज होय, ते राजाने भेट करवा माटे काढे. वली विचारेके आ म्हारा घरनी चीजने महा राज कबूल करे, तो म्हारां म्होटां जाग्य हुं मानुं, एवा उल्ला सथी ते गृहस्थ, राजाने पोतानी वस्तु भेट करे, तेम श्रावक पण साधुने पोताने घेर आव्या देखीने तेउ प्रत्यें घणुं बहुमान करे. अने विचारे के एवा निस्पृहीमां शिरोमणि, जगद्बंधु, जगत् हि तकारी, जगद्वत्सल, निष्कामी, आत्मानंदी, आत्मारामी, करुणा निधि, परमोपकारी, परमपात्र, करुणासागर, संसारजलधिउ द्धरण, परमउपकार करवामां दक्ष, क्रोधादिकषायजक्षक. पोतें तरेला, परने तारनारा, एवा महामुनिराज चालीने म्हारे घेर आव्या, तो आज म्हारां म्होटां जाग्य जाणवां. आज रूडो सुवि हाण थयो, आज म्हारे आंगणे कामधेनु, कल्पवृक्ष, चित्रावेली अने चिंतामणि ए अणचिंति चाली आवी अने आज म्हारी जा गृत दशा सफल थइ. एवो हर्षजर्यो ससंभ्रम होतो थको ते मुनि नी सन्मुख जाय अने त्रिकरण शुद्ध प्रणाम करीने कहे के हे स्वा मि ! दीनदयालुजी ! पधारीयें. म्हारा घरनुं आंगणुं पावन करियें. एवुं बहु मान दइ करीने घरमां पधरावे, पछी मनमां विचारे के,

अहो ! महारां अतुल भाग्यनो उदय थयो होय तो आज आ साधु महारां आहार पाणीनो अनुग्रह करे जे कारण माटे साधुजीने आ हार लेवामां मह्होटी तजवीजछे. आहारनी गवेषणा करे, शुद्धनिर्दो पनी प्रतीति आवे. त्यारे तो साधु आहार ले. ए कारण माटे रखे कोइ दोषमाराथी उपजे ? एवो विचार करी त्रिकरण योगें बहुशुद्ध, मान जत्यो उपयोगी थको विधिपूर्वक आहार लावे, अने मीठां व चनोथी ते साधुनी विनति करे के हे स्वामिजी ! हे गुरुजी ! आ शु द्ध निर्दोषी आहारछे, ए माटे हे कृपानिधान ! मुज सेवक उ पर परम शुभ दृष्टिनो पसाय करी सपात्रकर पसारीयें. महारो नेस्तार करीयें. एवां मीठां अने परम भक्तिवंत वचनोयें विनति करतो थको आहार आपे, त्यारें ते मुनिराज, ते योग्य आहार जाणीने ले, अने श्रावक पण जेटली दानलायक निर्दोष वस्तु होय, तेज सर्ववस्तुनी निमंत्रणा करे. एवा विधियें करी दान आपीने फरी ते मुनिप्रत्यें हाथ जोडी, नीचो नमी, पृथ्वीपर मस्त क लगावीने नमस्कार करे. पछी वली मीठां वचनोयें विनति क रे के हे स्वामि ! कृपानिधान ! मुज गरीबनी एक विनतिछे, ते सां भली लेश्यों. सेवक उपर मोहोटी कृपा करी मने मह्होटो कस्यो, मारी पर मह्होटो उपकार कस्यो, आज महारुं घर पावन थयुं. उत्कृ ष्ट भाग्योदय विना मुनिना चरणकमलनी रज घरमां क्यांथी पडे ? (गुणिपदकजधूलरजकंचन सेवहुं मूल मेरा) आजनो दिवस सफल थयो. फरी पण हे स्वामिजी ! अशन, पान, खादिम, स्वादि म, औषध, भेषज, वस्त्र, पात्र, सिझा, संथारकादि प्रयोजन उप जे, त्यारें सेवक उपर कृपा करी अवश्य अनुग्रह करवोजी. स्वामि जी ! आप तो मह्होटा मुनिराजछो, गुणवान्छो, निस्पृहीछो. आपने कोइ चीजनी कमती नथी, कोइ वातनो प्रतिबंध नथी, वायुनी पेरें अप्रतिबंधछो. तो पण हे करुणानिधान ! मुज सेवक उपर

कृपा करीने फरी अनुग्रह करवो. ए प्रमाणे कहेतो कहेतो पोता नी हदसुधी ते मुनिश्रेष्ठने पहोचाडवा जाय.

४ चोथो गुण एके, त्यांथी ते मुनिने वंदना करी, पाछो फरी घेर आवी, जोजन करे. पण तेने मनमां हर्ष समाय नहीं. महा रो मुनिना आगमनरूप जाग्योदय थयो, तेणे करी हर्षवंत थयो थको विचारे के आज कोइ माहारे जली वात थइ गइ, मने म होटो कोइ लाज थयो. कारण, जे मुनिराज निस्पृही तथा तृष्णा रहित, गतप्रतिबंधी, सहजउदासी निरीह, एवाने में विनति की धी एटले तरत महारे घेर आव्या. वली में जे आहार आप्यो, ते पण सर्व लीधो. वचमां कोइ अंतरायरूप विघ्न न थयुं. एथी करी महारो कोइ सारो वखत प्रगव्यो जणायछे. फरी आवो योग क्यारें मले ? अने जो मले, तो जाणुं जे महारे अतुल्य पुण्यनो प्रसाद थयो. एवी अनुमोदना वारंवार करे.

५ पांचमो गुण. ए जे जेम कोइ मंदजाग्यवान् पुरुष, व्यापार क रतां करतां थोडुं कमाय, तेने कोइक दिवसें एकज शोदामां लक्ष द्रव्यनी प्राप्ति थाय, त्यारें ते फरी व्यापारनी अनुमोदना केवी चा ही चाहीने करे ? तेवी रीतें एना करतां पण अधिक दाननी चाह ना समकेती जीव राखे. ए पांचे गुणोयें युक्त दान आपवुं, ते शु द्ध दान कहेवाय, ए शुद्धदानथी अतिथिसंविजागव्रत थाय.

अहींयां श्रावकें साधुने दोष रहित आहार आपवो, अ ने साधुयें पण दोषरहित आहार लेवो. त्यां दोषनी विचा रणा करतां प्रथम शोल दोष श्रावकथी लागे. अने शोल दोष साधुथी लागे, तथा दश दोष साधु अने श्रावक बन्नेयकी उपजे, ए प्रकारे बधा मली बेंतालीश दोषनो त्याग करीने सा धु आहार लीये, ते बेतालीश दोषमांथी प्रथम श्रावकथी शो ल दोष लागे, ते लखे छे.

१ पहेलो आधाकर्मी दोष. ते साधुने वास्ते बकायनो आरंज करी, आहार नीपजावे, ते आधाकर्मी दोष.

२ बीजो उद्देशिकदोष. ते जेवारें रसोइ करवा मांके, तेवारें पोतें रसोइ करनारने कहेके, रसोइ घणी करजो. कारणके, साधु प्रमुख आवशे. तेमने सारी रीतें आपशुं. जो रसोइ घरमां पुष्कल होय, तो कोइने देवाय. कदापि रसोइ कमती होय, तो देवाय न ही. त्यारें साधुने शुं अपाय ? ए माटे रसोइ वधती करजो. एवी रीतें साधुनुं नाम लेइनी वधारे रसोइ करावे, ते उद्देशिकदोष.

३ त्रीजो पूतिकर्मदोष. ते आधाकर्मी प्रमुख हर कोइ दोषे दूषित एवो अशुद्धाहार होय, ते शुद्धाहारनी सार्थे जेलवे, ते पूतिकर्मदोष.

४ चोथो मिश्रजातिदोष. ते घरमां कह्या करे के, रसोइ ज तावलें बनावो. वखत थयोछे माटे जो वेलासर रसोइ बनावो, तो कांइ आपण जमीयें अने कांइ साधुने पण आपीयें. ए माटे ताकीदथी रांधो. एम कही कहीने जे आहार बनाव्यो, ते मिश्र जाति दोषें दूषित आहार जाणवो.

५ पांचमो थापनादोष. ते जे गृहस्थ. जोजन वखतें एम क हे जे आज आ रसोइमांथी आटलो आहार वासणमां जूदो काढी राखो. ते जेवारें साधु आवशे, त्यारें देवो पडशे. एवी रीतें व्यवहार करीने आपवुं, ते पांचमो थापनादोष.

६ बठो पाहुडीदोष. ते साधुने आव्या जाणी चीज वस्तु आ गल पाठल खडबड करे, धका धकीमां सावद्यक्रिया करीने सा धु आगल लावीने आहार आपे, ते पाहुडीदोष.

७ सातमो प्राडुःकृतदोष. ते साधुने आव्यो जाणीने जो घरमां अंधारुं होय, तो तेने मटाडवानो प्रयत्न करे, खडकी, जाली, बारी, बारणां, ए सर्वने तरत उघाडी नाखीने अजवालुं करे. मनमां

जाणे जे अंधारुं हशे तो साधु आहार लेशे नहीं. एम करी आ हार आपे. ते प्राडुःकृतदोष.

८ आठमो क्रीतदोष. जे साधुने आव्यो जाणी करी बजार मांथी मूल्य आपी करी आहार वेचातो लावी साधुने आपे, ते क्रीतदोष.

९ नवमो प्रामित्यदोष. ते कोइनुं उधार उछीनुं लेइने आपे, करज करीने आपे. ते प्रामित्यदोष.

१० दशमो परावर्त्तितदोष ते साधु आव्या जाणी मनमां वि चारे जे, म्हारा घरमां तो नीरस आहारछे; ते साधुने केम दी धो जाय? वास्ते पडोशी अथवा संबंधीने घेर, ते नीरस आहार आपीने तेने बदले साधुने सारु सारो सरस आहार थोडो लावे, ते साधुने आपे. ए दोष, भक्तिथी अथवा अभिमानथी अथवा लोकलाजथी थाय. एटले लोकोमां वात चर्चा थाय, जे आवो मा नवर गृहस्थ थइने एवो आहार साधुने आपेछे, अथवा कोइ नीर स आहार देतां थकां पाडोशी जोशे, तो आपणी निंदा करशे, ने कहेशे के ए एवो आहार साधुने आपेछे! एमाटे लोकला जथी मागी आहार लावीने आपे, ते दशमो परावर्त्तित दोष.

११ अगीयारमो अन्याहृतदोष. ते पोताना घरमां जे आहार बनेलो होय, ते भक्तिपणाथी आहारने सामो लइ साधुने स्था नके जइने आपे, ते अन्याहृतदोष.

१२ बारमो उद्भिन्नदोष. ते कोठीमां तथा मंजीरा प्रमुखमां चीज राखेली होय,ने चीजनो आहार, ते कोठी मंजीरा प्रमुखनुं ताळुं उघाडीने तेमांथी आपे, ते उद्भिन्नदोष.

१३ तेरमो मालाहृत दोष. ते आहारने मेडी माळ उपर, अ थवा छींका उपर, अथवा तल उपर, अथवा बीजा कोइ स्थानक उपर उंचो राखेलो होय, ते निसरणी प्रमुख मांडीने त्यां पहोंची

ने पठी उतारी लावे. अथवा नोंयरामां नीचें उतरी तेमांथी आहार खावे, ते आहार, साधुने आपे, ते मालाहृतदोष.

१४ चौदमो आछिद्यदोष. ते ए के पारकाना हाथमां जे ची ज होय,ते तेनी कनेथी ठीनवी लेइने साधुने आपे, ते आछिद्य दोष.

१५ पंदरमो अनिसृष्ट दोष. ते एके घणा माणसोनी कोइ साधारण चीज, वेंची लीधा विनानी होय, तेमांथी उपाडीने साधुने आपे, ते अनिसृष्टदोष.

१६ शोलमो अध्यवपूरकदोष. ते कलकलता पाणीमां बीजुं पाणी पूरे. अथवा जात प्रमुख चूला उपर चडेलांछे, तेमां बी जा चोखा नाखे, एम तैय्यार थता आहारमां बीजी पूरणी करे, अने मनमां विचारे के आज गाममां साधु घणा आव्याछे, तेउं मांथी हरकोइ पण आहार लेवा माटे आपणे घेर आवी चडशे, ए माटे रसोइमां घणी पूरणी करी रसोइ वधारे कराविये. एवुं क रीने पठी ते आहार साधुने आपे, ते अध्यवपूरकदोष. ए शोल दोष, श्रावकथी साधुने लागे छे. एमां केटलाएक दोष अजाण पणे लागे, केटलाएक जक्तिथी लागे, केटलाएक दृष्टिरागथी ला गे अने केटलाएक अजिमानथी लागे. ए शोल दोष टाली तजवीज करीने श्रावक, शुद्ध आहार साधुने आपे अने साधु पण त्यारें निर्दूपित आहार जाणीने ले.

हवे साधुथी शोल दोष उपजे, ते कहेछे.

१ प्रथम धात्रीदोष. जेम धात्री उदरपूर्णार्थे गृहस्थना बाल कने रमाडे, तेम साधु पण गृहस्थना बालकने रमाडे, तरेह तरेहनां वचनोयें करी बोलावे, चपटी वगाडी रीजवे, तरेह तरेहनां चाटु क वचन बोली करीने बालकने, हसावे, घणो प्यारा देखाडे. तेवुं जोइने ते बालकनां माता पितादिक जाणे के साधुजी अ मारा ठोकरा उपर बहु हेत करेछे. तेणे करी ते बालकना नि

मित्तें ते साधु उपर दृष्टिरागनो उल्लासी थाय, तेवारें साधुने आहार आपे. ते आहार साधु ले, त्यारें धात्रीदोष लागे.

२ बीजो दूतीदोष. ते जे साधु विचरवा गया थका श्रावक श्राविकाने कासीदनी पेठें परगामना समाचार अथवा कागल आणीने आपे पीयरनी हकीकत लावीने वहूने कहे. वली वहूप्र मुखने बीजी मुखचातुरी बनावीने कहे के, तमारी माताजी सुख चेनमांछे, अने तमारा जाइजी पण साजा ताजाछे. बीजा पण सर्व कुटुंबीयो कुशल क्षेम छे. वली कहेके फलाणानुं सगपण थयुं, फलाणाने छोकरो थयो, ते तमोने अमुक चीज मोकलशे, तेमणे अमुक चीज तमारी पासेंथी मंगावीछे. इत्यादिक संदेशा कही करी गृहस्थने राग उपजावी आहार ले. अहींयां कोइ गृहस्थें धर्मसंबंधी संवरवृद्धि कारणरूप संदेशो कह्यो होय, तेपण जिक्षा अवसरें न कहे, बीजे अवसरें कहे पण संसार संबंधी संदेशो तो कदापि कालें कहेज नहीं, एवी रीतें गोचरी जायने संदेशा कहीने जिक्षा लियें, ते बीजो दूतिकर्मदोष.

३ त्रीजो निमित्तदोष. ते गोचरी गये थके गृहस्थने, निमित बतावे, गृहगोचर, शुजदशा, अशुजदशा बतावे, तमोने आटला दिवसनी पीडाछे, तमोने बारमो वा आठमो शनिछे, एवुं कहे; तथा आटला वर्षनी तमोने पनोतीछे, माटे अमुक दान आपजो, जाप करावजो, एवी करी सुख थशे. आगल घणा सारा ग्रह आवशे; त्यारें घणुं सुखचेन पामशो. तमारा दिलमां अमुक वातनी चिंताछे. एवी मनमानी वातो कहे, तेथी ते गृहस्थ खुशी थाय. चमत्कार पामे अने सारो आहार आपे, ते साधु लीए, तेवारें तेने निमित्तदोष लागे.

४ चोथो आजीविकादोष. ते वहोरवा गये थके त्यां गृहस्थ नी पासें पोतानी जाति ज्ञाति जाहेर करे ने कहेके, शेठजी! तमे

अमने नथी ळखता? अमे फलाणा शाहना ठोकरा, फलाणा ना भत्रीजा, फलाणो अमारो भाइ थायछे, तमारी साथें पण अ मारे संसारनो नातोछे. तमे अमने उंलखता हशो के नहीं उंलखता हो? पण अमे तो सर्व जाणीयें ठैयें. एक अहारार्थे एटलो संबंध प्रगट करे, ते वारें ते गृहस्थने संबंध संबंधी राग उपजे. तेणेकरी ते खुशीथी आहार आपे, ते आहार साधु लीये, ते आजीविकादोष.

५ पांचमो वणीमगदोष. ते जे आहारने अर्थे साधु दीन पणुं बोले के, आज संसारमां सर्व स्वार्थीछे, परमार्थी कोइ नथी. तो अमारी खबर कोण लेछे? तमारा जेवो कोइ धर्मरुचि, धर्मिष्ट, *उपकारी अने उदारचित्तवान् होय. ते जाणे, बीजो कोण जा* णे? अमे तो निराधार, निरालंबनवृत्तिवाला ठैयें. अमारो कोइ वालो सगो नथी. आ नगरमां तो एक तमारुंज घर धर्मात्माछे, जे आटली पण खर खबर तमे लीयो लो. तमे अमारी तजवीज राखवावालाछो. तमे तो साधुना मा बापछो तमेछो, तो अमारो आटलो पण निर्वाह थायछे. इत्यादि दीनतानां वचन निर्वाहने अर्थें कहे, त्यारें ते गृहस्थने कांइ अनुकंपा अने कांइ अभिमान तथा कांइ राग उपजे, तेवारें आहार घणो आपे, ते साधु लीए, तो पांचमो वणीमगदोष लागे.

६ ठठो तिगंछादोष. ते आहारने अर्थें गृहस्थने घेर गये थ के गृहस्थनी नाडी जूए, रोगना आदान, निदान प्रमुख कहे, औ षध, गोली, चूर्ण, काथ प्रमुख बतावे, रोगनुं मूल कारण कहे के फलाणी चीज खावाथी व्याधि उत्पन्न थयोछे; ते माटे जो गोली खाउंतो आ, रसनी गोलीछे ते खाउं, नहीं तो चार पांच दि वस औषधिनो काथ कूटावीने खूब तरेहथी उकालो करावी पीउं. एवुं गृहस्थ सांभले, त्यारें खुशी थाय; अने मनमां जाणे जे ए साधु सर्वरीतें खबरदार छे. एने बीजुं कांइ आपशुं तो

ए लेशे नहीं. माटे खूब तरेहथी आहार तो आप्या करो? एवुं वि चारी घरमां स्त्रीयादिकने पण ते साधुने सारी रीतें आहार आ पवानुं कही राखे. एवी रीतें गृहस्थने रागवान् करीने आहार लेवो, तेथी ठहो तिगंछादोष साधुने लागे.

७ सातमो क्रोधपिंमदोष. ते जे आहारने अर्थे साधुजन कोइ गृहस्थने घेर जाय अने ते गृहस्थ तो महाकृपणछे, एवुं साधु यें जाण्युं. छती जोगवाइयें पण ते गृहस्थने कृपणतायें करी साधु ने आहार आपवानी सामर्थाइ नथी; तेथी ते मुखथी नाकारो के रे. ते समयें साधु क्रोध करीने एवी शापनी जाषा बोलेके छती श क्तियें पण साधुने आहार आपवानी ना कहोछो तो तमारे घेर लक्ष्मी नहींज रहेशे. जे छे ते पण नष्ट थइ जशे. आ नवविध परिग्रहनी जे जे वस्तु छे, तेनी सत्ता रहेशे नहीं. एवा आ शयथी बोले, त्यारे ते गृहस्थ शापना जयथी एम जाणे के, ए साधुछे, तपस्वीछे, माटे तपश्चर्याना बलथी आवुं कहेतो हशे. शुं जाणीयें एना कह्या प्रमाणे थइ जाय तो? माटे थोडाने माटे शुं करवा एवुं करीएं? एम विचारीने साधुने आहार देवानी समर्थाइ करीने आहार आपे, एवो क्रोध करी साधु आहार ले. ते क्रोधपिंमदोष. अथवा साधुने आहार आपवा माटे घरमां कोइ तरेहनो कषाय करवो करावबो पडे, ते पण दोष एमांज लेवो.

७ आठमो मानपिंमदोष. ते जे साधु, गृहस्थने घेर आहार लेवाने माटे जाय, त्यारें गृहस्थने जोइने तेनुं महोटुं मान तथा सत्कार करे. तेनी रुद्धिने जोइने कहेके तमे महोटा धर्मात्मा अने रुद्धिमान् गृहस्थछो. अथवा पोतानुं अनिमान देखाडवा सा रु एवी रीतें कहेके, अमे पण कोइ दिवस आवा हता, अमारा घ रमां आटलुं ऊव्य हतुं, हुं आटला गामनो मायंद हतो, अमुक मढा

सिरदार अमारी सेवा करता हता, आवी लक्ष्मीनो लहावो लेता थका, खाता पीता हता, सर्व जग्यायें हुकम चलावता हता अथवा अमारो व्यापार हजारो कोश सुधी चालतो हतो. प्रत्येक गाममां अमारी डुकान हती, लक्ष्मीनी संख्या न हती, हजारो रुपैय्यानी तो कांइ गणती पण नहीं राखता हता. जग्या जग्यानी डुकाननां गुमास्ता तथा जलामणीया हता. डुकानोना जवाब, खत पत्र विगेरे आवता हता. देश परदेशमां कोण अमने नहीं जाणता हता? अर्थात् सर्व उंलखता हता. हवे तो अमे साधु थया, बीजाने घेर आहार लेवाने अर्थे नीकळ्या ठीयें, त्यारें हवे पाछलनी वात शुं याद करीयें? एवुं ते साधुनुं कहेवुं सांजले, त्यारें ते गृहस्थलोक पण जाणे के "आ साधुपण असल महोटा घरनो ठे, एवडी वडी संपत्ति ठोडीने जावथी साधु थयो देखायठे; ए माटे एने जली रीतें विवेक पूर्वक आहार आपो, एमां महोटो नफोठे." एवो बुद्धिनो प्रपंच करी आगली गृहस्थावस्थानी संपत्तिनां वखाण करीने आहार लेवो, ते मानपिंडदोष. तथा साधुनी पासेंथी गृहस्थ मान पामे. ते एवि रीतें के ते गृहस्थ, साधुनी पासें आव्ये थके महोटी पर्षदाने विषे तेने साधु उंचे सादें हाथनी संज्ञा करी बतावे के अहींयां आवी बेसो. एवुं मान आपे, त्यारें गृहस्थ जाणे के आटला लोकोनी वचमां अमोने आदर सन्मान आप्युं; माटे ए साधु सर्व तजवीज वाखाठे. महोटी उंजादनाठे. एवुं जाणी ते गृहस्थ, ज्यारें ते साधु घेर वहोरवा आवे त्यारें आहार आपे, अने ते साधु ले, त्यारें तेने मानपिंडदोष लागे.

ए नवमो मायापिंडदोष. ते जे आहारने अर्थें साधु, गृहस्थने घेर गये थके कोइ कूड कपट करी रूपपरावर्त्तनादिक कला करीने आषाढभूति साधुनी पेरें माया प्रपंच करे अथवा बाजीगरनी पेरें तंत्रख्याल देखाडीने चमत्कार उपजावे. तेथी करी

लोकोने आग्रह करें के, आ साधु तो करामतनुं घरजछे; ए सर्वविद्या जाणे छे. एवुं जाणीने ते साधुने घणा सन्मानथी आहारादिक आपे. तथा वली कहे के हे स्वामीजी! तमोने जे जोइयें, ते तमे बीजुं पण कांइ ल्यो. एवी रीतें मायाप्रपंच विधाने फोरवीने साधु आहार ले, ते मायापिंमदोष कहियें.

१० दशमो लोजपिंमदोष. ते जे साधु आहारायें गृहस्थने घेर जाय अने त्यां कोइ उदार अने प्रबल दाननो दातार जोइने ते साधु तेना पासेंथी पोताना खप करतां वधारे आहार लीए; तेथी ते लोजपिंमदोष साधुने लागे.

११ अगीयारमो पुव्वपछासंस्तवदोष. ते आहारने अर्थें साधु गृहस्थने घेर जाय अने त्यां अहार ले, ते पहेलांज गृहस्थनी स्तवना करे के अहो! आगल पण अमोयें घणा वखत आ घर मांथी घणो सारो अने स्वादिष्ट अशनादि चारे प्रकारनो आहार वहोर्योछे. एवुं कोइ न हशे के जे आ गाममां आवीने आ घर मां न आव्युं हशे. आ घर, सदाथी एवुंज धर्मात्माछे. आ घर कांइ आज कालनुं छे शुं? वली एनां माता पिता पण एवांज सुधर्मा त्मा हतां. जे कोइ अज्यागत साधु आवे, तेउने खुशी थइने आहार देतां हतां. एमनी जक्तिनी तारिफ केटली करीयें? सर्व जग्या यें आ घरनी यश प्रतिष्ठा प्रसिद्धछे. एमना पूर्वजोनी एवी, जक्ति सहित करणी हती तो आ पण एमनाज पुत्रछे. एमनी पण ते करतां सवाइ जक्तिछे, एमना वंशमां महोटा कुलदीपक थइ गया, तेमनां नाम हजी सुधी चाल्यां आवेछे. एवी एवी स्तुति करीने संजलावे, अथवा आहार लीधा पछी ते गृहस्थना महोढा उपर स्तुति करे के शेठजी! तमे घणा लायक गृहस्थछो, साधुजन विषे जक्तिमान् छो, तमारा जेवो बीजो कोइ दाता नथी. आ गाममां हमेशां तमारुं घर साधुने आहार आपवामां धोरी छे. तमे श्री जि

नशासनमां गजेंद्रछो. सूर्यंजछो, दीपक छो, अमारां माता पिता छो, तमे अवसरना जाणछो, परीक्षावंत छो, अने जला जूंनाने स धैने ऊंत्रखो छो. जे गाम जाइयें छैयें, ते गाममां तमारुं यश व्याप्त थइ रघुंछे. इत्यादिक रीतियें करीने साधु आहार ले, त्यारें पुवपछासंस्तवदोष लागे.

१२ बारमो विद्यापिंकदोष. ते आहारने अर्थे साधु गोचरी जतां पहेलां अन्नपूर्णा देवीनुं आराधन करे. जेनी प्रसन्नताथी ज्यां जाय, त्यां घणो अने सारो आहार मले. एवी रीतें देवतानी प्रसन्नताथी सदा गृहस्थना घरथी आहार लावे, ते विद्यापिंकदोष.

१२ तेरमो मंत्रपिंकदोष. ते आहारना निमित्तें गृहस्थने कामण, मोहन, वशीकरण अने उच्चाटन प्रमुख प्रयोग करे; तथा मुखबंधनादि कोइ यंत्र प्रयोग करी आपे, अथवा गृहस्थने शीखावे, हस्तकला करे, अथवा कोइ तंत्रविधिथी जूठुं देखाडा मात्र कांइ करे. एम मंत्रादि फोरवी चमत्कार देखाडीने आहा र लावे, ते मंत्रपिंकदोष.

१४ चौदमो चूर्णपिंकदोष. ते आहारने अर्थे साधु, गृहस्थने घेर जाय, त्यां ते गृहस्थने अनेक जातिनां औषध, चूर्ण, मेलावी आपे, अथवा ते चूर्णनां विधि, रीति, क्रिया, कर्तव्यता, सहु करी आपे, त्यारें ते गृहस्थ, ते साधु उपर रागी थइने जाणे जे अमारी सार्थे गुरुजी कोइ वातनो अंतर राखता नथी, माटे ए रूडा साधुछे. ए प्रमाणे रागी थइने आहार आपे, ते साधु ले. ए वात पूर्वे तिगंवादोषमां कहीछे; पण अहिंयां एटलुं विशेष छे जे साधु पो ताने हाथे औषध, चूर्णादिक सिद्ध करी आपे. ते चूर्णपिंकदोष.

१५ पंदरमो योगपिंकदोष. ते जे साधु आहारार्थे पादले पादिक करी, कोइ महोटो चमत्कार देखाडी लोकोने स्वानुकूल करी आहार ले, ते योगपिंकदोष. अहींयां पूर्वे मंत्रादि योग

दोष कह्या, ते तो सर्व क्षुद्रमंत्र, पण आमां तो महोटो चम त्कार करे, माटे जूदो नेद थयो.

१६ शोलमो मूलकर्मदोष. ते साधु आहारने अर्थे गृहस्थने अपुत्रीयो जोइने, गर्न रहेवानुं औषध बतावे, अथवा पोतें ते औषध बनावी आपे. अथवा कोइ अनाचरणी स्त्री होय, तेणे प रपुरुष सायें कुकर्म कीधुं होय ने तेथी ते गर्नवती थइ होय, पछी ते गर्नपात करवा माटे, साधुने आव्यो जाणीने तेनी पासें आवीने पोतानुं शल्य मटाडवा माटे गरीब थइने ते साधु आगल दीन जाप ण करे; अने कहे के हे स्वामिजी ! मुज हत्यारीनो उपकार करो. आवुं पाप माराथी थयुंछे, ते उपकार करीने टालशो तो जीवीश, नहीं तो मारे मरवुं पडशे. एवां वारंवार दीनवचन सांनलीने सा धुने करुणा उपजे. त्यारें गर्जना शातन पातन प्रयोग प्रमुखनां औषध वत्ती प्रमुख होय, ते बतावी आपे, तेणे करी ते स्त्री खुशी थइने सारो आहार आणीने आपे. अथवा मूलबंधन जे गर्न स्थिरीकरणप्रयोग करे अथवा शांतिकर्म करे. एवी क्रिया क रीने आहार ले, ते मूलकर्मदोष. ए कर्म, साधुयें अवश्य नज करवुं. ए कर्मने महादुःखदायि जाणीने जरुर त्यागवुं. ए शोल उत्पादन दोष साधुथी थाय; अने पूर्वे जे शोल दोष कह्या ते श्रावकथी थाय. तेने उद्गमदोष कहीयें. ए प्रमाणे ए बत्रीशे दोष टालीने आहार ले, ते एषणाशुद्ध कहीयें. अन्यथा अनेषणा कहियें.

हवे दश ग्रहणदोष कहेछे.

१ प्रथम शंकितदोष ते आहारमां कोइ उद्गमादि दोषनी शंका आवे तो आत्मार्थी साधु, ते आहार न लीए. जो लीये, तो शंकितदोष लागे.

२ बीजो म्रक्षितदोष. ते जे अन्नादिक अयोग्य वस्तु ते सचित्त अथवा अचित्त होय तेनाथी हाथ खरड्या होय तेवे हाथे

अथवा अयोग्य द्रव्यथी जाजन खरड्युं होय, एवा जाजनथी आहारादिक आपे, साधु ले, त्यारें म्रक्षितदोष लागे,

३ त्रीजो निक्षिप्तदोष. ते जे माटी, पाणी प्रमुख हरेक सचित्त वस्तुनो स्पर्श करीने अथवा परस्पर संघट्ट थवाथी अचित्त थाय, एवो आहार ले, ते त्रीजो निक्षिप्तदोष.

४ चोथो पिहितदोषः ते एके, १ सचित्त वस्तु अचित्त वस्तुयें ढांकी होय, २ सचित्त वस्तु सचित्त वस्तुयें ढांकी होय, ३ अचित्तवस्तु सचित्त वस्तुयें ढांकी होय, ४ अने अचित्त वस्तु, अचित्तवस्तुयें ढांकी होय. ए चार जांगामां चोथो जांगो शुद्ध छे; अने बाकीना त्रण जांगा अशुद्ध छे. एमाटे ए त्रण जांगे आहार ले, त्यारें पिहितदोष लागे.

५ पांचमो संहृदोष. ते जे आहार आपवाना वासणमां अयोग्य वस्तु जरी होय, ते वस्तु बीजा वासणमां नाखीने पछी तेज वासणथी आहार आपे, ते पांचमो संहृदोष.

६ छठो दायकदोष. ते जे नपुंसक, बालक, अतिवृद्ध, आंधलो, पांगलो, कंपवायुथी जेनो देह कंपतो होय ते, जेना पगमां शृंखला, बेडी प्रमुख जडी होय ते. धान्यने खांडतो होय ते, धान्यने दलतो होय ते, धान्यने पुसतो होय ते, चरखा चरखी फेरवतो होय ते, कपास लोढतो होय ते, कपासने कालामांथी रूटो पाडतो होय, पलोणुं पलोवतो होय, जमतो होय, छकायना आरंजनुं कार्य करतो होय, सात मास उपरांत गर्जवती स्त्री होय, बालकने धवरावती स्त्री होय, अने जे स्त्रीनुं बालक रडतुं होय, तेने पडतुं मूकीने. ए उपर कहेली क्रियाउंमांनी हरकोइ क्रिया करतां जे दातार आहार आपे. तेवा योगनो आहार साधु न लीये; अने जो ले, तो दायकदोष लागे.

७ सातमो उन्मिश्रदोष. ते योग्य आहारने अयोग्य आहा

आपेठे. आहार वहोरवा फरी बीजाने घेर जवानी इच्छा रहेती न थी. तथा जे वस्तु वहोरावेठे, ते पण घणी स्वादिष्ट अने जावें करी वहोरावे ठे. तेमां पण आजनो आहार तो घणो स्वादिष्टठे. एवी आहारना आपनारनी तारीफ करीने खाय, ते अंगारदोष.

४ चोथो धूम्रदोष. ते आहारना आपनारनी तथा आहारनी निंदा करतो थको खाय. ते एमके फलाणो दातार तो कोइ सारो न थी, हाथनो महा कृपणठे, वली एनामां कांइ चातुर्य पण नथी, सारी वस्तुने बगाडी नाखीने खायठे. एनो सदा सर्वदा एज ढंगठे. जूउ! आ चीज बरोबर जो बनावी होय, तो केवी स्वादिष्ट थाय ? तेने केवी बेस्वाद करीनाखीठे ? एतो कमोदने कुशका करीने खाय ठे. चतुर होय ते तो कुशकाने कमोद करीने खाय. आ आहार केवी रीतें खाधो जाय ? एमां कांइ स्वाद नथी. एतो गले पण उतरतो नथी. एवां दूषणो देतो थको खाय, ते धूम्रदोष.

५ पांचमो अकारणदोष. ते जे साधु, विनय, वैयावच्च, संयमनिर्वाह, प्रबलक्षुधा शुजध्यानस्थिरता. इत्यादिक कारण विना केवलशरीरनी पुष्टता निमित्तें सरस अने सुस्वाद आहारनुं जोजन करे, ते अकारणदोष. ए पांच मंमलिकदोष कह्या. ते आगला बेंतालीश साथें मेलवतां सडतालीश दोष थया. ए सडतालीश दोष रहित आहारना लेनारा जे साधु तेमने अतिथि कहीयें. तेवा साधुने श्रावक, दोष टालीने आहार निमंत्रणा करे अने जे जे आहार साधुयें लीधो होय, तेमांनोज आहार पोतें पण जमे. कदाचित् एवा साधुनो योग न मले, त्यारें शुद्ध श्रद्धावान् अने व्रत नियमादिकधारक, एवा सुश्रावकने अति घणा मानथी बोलावीने महोटा जक्तिजाव पूर्वक जमाडे अने जे आहार ते जमे, तेमांनोज पोतें पण खाय; परंतु पंक्तिविछेद आहार न करे. प्रायें ए व्रतनी, पोसहनुं पारणुं करवामां मुख्यताठे. प्रवाह

थकी बीजा दिवसोमां पण व्रत प्रमुख करेजछे. तेना पांच अतिचारछे, ते कहेछे.

१ प्रथम सचित्तनिक्षेप अतिचार. ते सचित्त चीज माटी, पाणीनो घडो, बलतो चूलो अथवा अनाजनो ढगलो, अथवा सचित्त पान, तथा फल, एवी चीजना उपर, दान देवा लायक जे आहार होय, ते मूकी राखे एटले मनमां साधुने आहार नहीं देवानी तुछ बुद्धियें विचार करे जे, में तो अतिथिसंविजागव्रत लीधुं छे, तेथी मारे तो साधुने सर्व चीजनी निमंत्रणा अवश्य करवी पडशे; अने साधु पण लेवा लायक आहार जोइने लेशे. माटे हमणांचीज आ युक्ति करुं ने पछी जो हुं निमंत्रणा करीने आग्रह करीश, तो पण ते आहार साधु लेशे नहीं. एवो तुछ बुद्धियें विचार करी आहारने सचित्त चीज उपर धरी राखे. पछी साधुने आग्रह करी बोलावे, जूठी जावना जावे; पण साधु, सदोष आहार देखीने ते आहार लीधा विना पाछो फरे; त्यारें ते कुटिल बुद्धिवालो जाणे जे में साधुने निमंत्रणा सर्व चीजनी करी, माटे महारुं व्रत तो अखंम थयुं, अने आहारनो खरच पण न थयो! एवो फेल करे, ते प्रथम अतिचार. एवुं ते कुबुद्धि कुटिलताथी करे, कां तो अज्ञानजद्रकजावथी करे.

२ बीजो सचित्तपिहिण अतिचार. ते दान देवानी चीज सचित्त फल पत्रादिकें करी ढांकी राखे. ए पण न देवानी बुद्धियी ढांकी राखे, अथवा अज्ञानताथी ढांकी राखे, ते बीजो अतिचार.

३ त्रीजो अन्यव्यपदेश अतिचार. ते आहार नहीं देवाना निमित्तें ज्यारें साधु आवे, त्यारें महोटो जाव देखाडीने आहारनी चीज, पोताना हाथमां लेइने साधुना मुख आगल धरे. त्यारें साधुना आचार प्रमाणे साधु पूछे के ए चीज कोण संबंधी छे? एटले ए चीज कोनी छे? ते सांजली ते दाता कहे के हे स्वामिजी!

ए चीज तमे लीयो. ए अमारी नथी पण अमारा जाइनीछे अ थवा संबंधीनी छे एटले ते अमारीज छे. ते अमारो जाइ पण वहु ज जाविकछे तथा धर्मरुचिछे. तमने आ चीज आपी सांजलीने वहुज खुशी थशे. ए माटे आप लेइयें; कशो खतरो नथी. एवी रीतें वहु मान अने आग्रह करे, पण मनमां जाणे छे के आ पारकी चीजछे ते साधु लेशे नहीं. माटे वहुज जाव देखाडे पण ते साधु, लीधा विनाज पाछो फरी जाय. त्यारें ते दाता विचारे के में तो मारुं व्रत पण साचव्युं अने कांइ खरच पण न थयुं! एवी कुबुद्धिनो फेलाव करे. तथा कोइ दृष्टिरागी दातार, दृष्टिरागथी देवानी बुद्धियें बीजानी चीजने पोतानी कहीने आपे, ते पण एमांज आवे. श्रावकें तो शुद्धाहारार्थी साधु आगल याथातथ्य कहेवुं जोइयें, पण कपट न करवुं. ए प्रमाणे त्रीजो अतिचार लागे.

४ चोथो समत्सरदान अतिचार. ते गृहस्थने घेर कोइ साधु गोचरी आवे थके कोइ छति चीज जूए, ने ते चीजनो साधुने खप होय तेथी ते चीजनी याचना करे, त्यारें दातार होय ते तो छती चीजनी ना कही शके नहीं; पण मनमां खीजाइने आपे, ते समत्सरदान कहीयें. अथवा कोइ सामान्य गृहस्थ सारी रीतेंथी परिगल दान आपेछे, तेनी तारीफ सांजलीने सहन करी न शके, तेवारें मनमां ईर्ष्या आणीने कहे के, ए सामान्य गरीब छतां दान सारी रीतें आपीने शुं माराथी पण महोटो थवानी चाह राखे छे? तो हवे हुं एवुं दान आपुं, के तेवुं दान एनाथी दीधुं जाय नहीं. ए पोतानी मेलें थाकीने बेसी जशे. एवी रीतें पारका गुणनी ईर्ष्या धरीने जे दान आपे, ते पण समत्सरदान कहेवाय. ए चोथो अतिचार.

५ पांचमो कालातिक्रम अतिचार. ते साधुने गोचरीनो वखत थयो जाणीने साधुनी गवेषणा न करे, अने जाणे के हवे ए साधुउने

आहार लेइने पाठा पोताने स्थानकें जवानो वखत थयो, साधु पण पोतानो खप जेटलो आहार लइ आव्या होय, बीजा आहारनो खप न होय, त्यारें ते गृहस्थ कुटिलपणायें विचारे के आहार तो साधु लइ आव्याछे. अने हवे आहारनो खप हशे तो थोडो ह शे! एम विचारी गोचरीथी फरती वखतें साधुने जोवो नीकले.ए वामां कोइ साधु पोताना प्रयोजन मात्र आहार लेइने पोताना स्थानक प्रत्यें जता होय तेमनी कने जइने ते श्रावक महोटी मनु हार करे के हे स्वामिजी! मारे घेर पधारीयें, मारा मनोरथ सफल करीयें, महारी विनति दीलमां धरीयें, कृपा करीने मने निस्तारियें, कांइक शुद्ध आहार लेइयें, जेम हुं पण पच्चखाण पालुं. एम वारंवार कहे. एवी तेनी विनति सांजली साधु कहे के हे महानुजाव! अमा रे तो हवे आहारनो खप नथी. खप माफक तो अमे लाव्या ठेयें, वधारे आहार अमारे शा कामनो? एवुं कहीने ते साधु आगल चालता थाय, त्यारें फरी ते कुटिल दाता कहे के, हे स्वामिजी! मा रे साधुने आहार वहोराव्या विना खावानो नियमछे. तमे कांइक पण वहोरशो तो हुं खाइश, नहीं वहोरशो तो नहीं खाउं. ते सां जली साधु अंतरायना जयथी एवुं विचारे के एने घेर जइने थोडुं लेइ आवुं. बहु नहीं लउं. एवुं विचारी तेने घेर जइने किंचित् मात्र आहार लइने जाय, त्यारें ते गृहस्थ, मनमां विचा रे के मारुं व्रत पण पल्युं अने खरच पण घणो न थयो! अ थवा साधुने स्थंमिल भूमि प्रये जतां देखीने कुटिलतायी ते श्रा वक, आडो फरीने जाव देखाडीने कहे के हे स्वामीजी! घेर पधारो, अने शुद्धमान आहारनो अनुग्रह करो. ते सांजली साधु कहे के हे महानुजाव! हमणां तो अमे आहार पाणी करी चूक्या; हवे निहारजूमि प्रत्ये जइएं ठेयें. त्यारें ते मर्कट वैराग्य बतावे के हुं जाग्यहीन, मने घणा अंतरायनो उदयछे. जुर्ठ घणो वखत थ

इ गयो !! तो पण म्हारो मनोरथ सफल थयो नहीं. साधुने गोचरीनो वखत पण जतो रह्यो, आमारे घेर असूर थइ गइ. हवे शुं करुं? एवो देखाडवामात्र पश्चात्ताप करतो घेर जाय. ते पण पांचमो अतिचार. अथवा अणदेवाना निमित्तथी पहेलो पोतें जमे अने पछी साधुने वोलावे, तो कालातिक्रम थाय एटले साधु केम आवे? कदापि आवे तो बाकी वधेलो आहार साधुने आपे. साधुने तो एवा आहारनो पण कशो हर्ष शोक नथी. शरीरने जाडुं आपवामाटे ए आहार पण सारोजछे परंतु दातारनी ए शुद्ध चाल नथी, दान आपीनेज जमवुं, ए चालछे. एम करी पछी पेलो गृहस्थ मनमां विचारे के में दान पण आप्युं अने वहु खरच पण न थयुं! ए पांचमो अतिचार. ए पांच अतिचार मांहेला पहेला त्रण अने पांचमो, ए मलीने चार अतिचार दंभथी थायछे. अथवा अज्ञानपणायें जोलाजावथी थायछे. अने चोथो अतिचार, द्वेषदोषथी थायछे. ए चोथा शिक्षाव्रतनी शैली कही.

इति श्री द्वादशव्रतविवरणे पंडित श्री उद्योतसागरगणिनाकृता द्वादश अतिथिसंविजागनामक चतुर्थ शिक्षाव्रतकथने जाषा संपूर्णा १२

एटले अहीं श्रीसम्यक्त्वमूल बारे व्रतनी विगत संपूर्ण थइ.

हवे समकितमूल बार व्रतधारी श्रावकने एकशो चोवीश अतिचारनी खबर राखवी, ए सर्व अतिचार जाणपणामां राखवा, पण आदरवा नहीं. एटला माटे एकशो चोवीश अतिचारनो विचार लखीयें ठेयें॥

तेमां प्रथम समकितना पांच अतिचार, बार व्रतना प्रत्येकना पांच पांच अतिचार करतां शाठ अतिचार थया, अने कर्मादानना पंदर अतिचार. ए प्रमाणे वधा मलीने एंशी अतिचारनां

स्वरूप तो व्रतनी विगतमां लखी गया छेयें. बाकी संलेषणाना पां च तथा ज्ञानाचारना आठ, दर्शनाचारना आठ, चारित्राचारना आठ. तपाचारना बार. अने वीर्याचारना त्रण. ए पच्चा मली चु म्मालीश अतिचारछे. तेनुं स्वरूप कहीएं छेएं.

॥ अथ ॥

॥ श्रीसंलेपणाव्रतातिचारस्वरूप प्रारंभः ॥

त्यां संलेपणाना बे जेदछे. एक इव्यसंलेपणा, बीजी जावसं लेपणा. तेमां प्रथम इव्यसंलेपणा. ते जे साधु तथा श्रावक अन शननो मनोरथ करे, त्यारें प्रथम संलेपणातप करे. ते तप, आ गमोक्त विधियें करे. ते संलेपणातप त्रण प्रकारनुं छे. उत्कृष्ट, मध्यम, अने जघन्य. तेमां उत्कृष्ट बार वर्षनुं, मध्यम बार मासनुं, अने जघन्य बार पक्षनुं. तेमां उत्कृष्ट संलेपणातपवा लो प्रथम चार वर्ष विचित्र तप करे, पछी फरी चार वर्ष षट् विगय रहित विचित्र तप करे, पछी वली बे वर्ष एकांतरें उपवास करे; अने पारणे आंबिल करे. पछी छ मास नानाविध विकृष्ट तप करे, छठथी उंचुं तप करे नहीं अने पारणे आंबिल करे. वली छ म हीना अतिविकृष्ट तप करे परंतु आठमथी उंचुं तप करे नहीं, पारणे आंबील करे. तेवार पछी वली एक वर्ष निरंतर आंबिल करे. ए रीतें बार वर्ष उत्कृष्ट तप पूर्ण थाय.

१ एज रीतें मध्यम तथा जघन्य तप पणछे. जेवी वर्षनी संख्या छे तेवीज मासनी तथा पक्षनी गणतरीछे. आ संलेपणातप कर तां शरीर गतरस, अने धातु सर्व शोषाय, अस्थिचर्मावशेष अ णशण करवा योग्य शरीर करे, त्यारें तेने इव्यसंलेपणा कहीयें.

२ बीजुं जावसंलेपणा. ते अंतरमांथी विषय, कषाय, नोकषा य, गारव, संज्ञा. इत्यादि अंतरदोषने अति क्षीण करे. एटले प्रव

ल कारणे पण विषय कषायादि उद्दीपन न थाय, विकार पामे न हीं, एटले मंदोदय करे. आपणी चेतना समतामग्न रहे. ते जा व संलेपणा कहियें.

पछी गुरुपासें आवे त्यारें ते गुरु, तेनी परीक्षा करे अने जुए जे, एने वाह्य अने अभ्यंतर ए बन्नेनी संलेपणा थइ के एकली वाह्यनी ज संलेपणा थइ! एवी परीक्षा करवा सारु ते समयें गुरु कोइक रीतनुं वचन बोले, जे वचन सांजलीने अज्ञानथी तरत कषायोदय थाय. तेवारें जे साधुने अंतरनी अने वाह्यनी बन्ने संलेपणा थइ होय, ते साधु तो गुरुनां वचन सांजलीने नम्र थइने बोले के, श्रीगुरुस्वा मीजीनी करुणायें करी शुं न थाय ? आपनी कृपायें करी व्यवहार रीतियें तो संलेपणा करी, परंतु तत्वार्थनी वातनुं रहस्य तो आप जाणो. एवी रीतें मार्दव कोमल वचन सांजलीने गुरु जाणे. जे ए साधुने तो बन्ने संलेपणा थइछे. त्यारें अणशण करवानी आज्ञा आपे. आगलथी अणशणनी क्रिया करावे.

तथा कोइ अयोग्य साधुयें पण संलेपणातप कर्युंछे, त्यारें ते साधु संलेपणातप पूरुं करीने गुरुपासें आवीने अणशण कर वानी आज्ञा मागे, त्यारें ते गुरु पूर्वोक्त रीतें विषम वचन कहे. त्यारें ते केवल द्रव्य संलेपणावंतछे, माटें ते गुरुनुं वचन सां जलीने तेने कषाय उद्दीपन थाय. त्यारें ते विकल्प करे ने कहे के जूर्ज ! आवुं शुष्क जुष्क शरीर थयुंछे ते तो जोता नथी, ने वली एवी वक्रोक्तियी फरी फरी पूछो छो? ए प्रमाणे दीलमां क्रोध उद्दी पन जाव करीने पोतानी एक आंगली तोडीने गुरुना मुख आग ल नाखे ने कहेके, जूर्ज ! आवी तो संलेपणा थइछे, फरी केवी चा हो छो ? एवां शिष्यनां वचन, विनय, सहु सांजलीने तथा जोइने गुरु माथुं धूणावी कहेवा लाग्या जे हे साधो ! तमारे तो एनो प हेलोज दिवसछे. तमे अमारे लेखे तो हजी कांइ कर्युं नथी. जे

दोष टालवाने माटे तमे तप कर्युं हतुं, ते दोष तो जेमनो तेम ज रह्योछे. अज्ञान कष्टथी आ शरीर दुर्बल तो अनंतवार कर्युं हशे, पण कांइ तेथी अर्थ सर्यो नहीं; आ शरीरने क्षीण पाडवा थी अमे तो नहीं वखाणीयें.अंतरंग शीलता प्रगट थइ नहीं;अने कषायादिक अग्नि तो उपशांत न थयो.माटे जाव संलेषणा विना कोइ आराधक थइने मुक्ति पामे नहीं, ते माटे तमने अणशण नी योग्यता नथी. जो मुक्तिने इछो, तो कषाय, नोकषाय, पांच इं द्रियोना त्रेवीश विषयो, गारव, इत्यादि महा दोषोने मटाडो तो तमारो मोक्षनो मनोरथ सिद्ध थाय, एवी शुद्धि करो, एवी परीक्षा करे. ए संलेषणातप ते मुख्यवृत्तियें पंमितमरणने निमित्तछे. ए माटे वेउ संलेषणा करे, ते पांच अतिचारने वर्जे, तो आराधक थाय, तेने समाधिसहित पंमितमरण कहीयें. ते पांच अतिचारनां नाम लखेछे.

१ प्रथम आलोगासंसप्पउंगे अतिचार. ते संलेषणादि धर्म प्रजावें फरी आर्यदेश, आर्यकुलें उत्तम मनुष्यपणुं पामवानी चाहना राखे, ते पहेलो अतिचार.

२ बीजो परलोगासंसप्पउंगे अतिचार. ते अणशणी पुरुष, परलोकें परजवें देवेंद्रादिक पदवीने इछे, ते बीजो अतिचार.

३ त्रीजो जीवियासंसप्पउंगे अतिचार. ते अणशण लीधे ब हुविध सत्कार, सन्मान, स्तवनादिक सांजलीने घणा लोकोना आगमन वंदनानो महोटो उछव देखीने मनमां जाणे जे बे दिव स वधारे जीवीयें तो सारुं. एवो विकल्प उठे, ते त्रीजो अतिचार.

४ चोथो मरणासंसप्पउंगे अतिचार. ते अणशण कीधे थके क्षुधादि परीसहनी पीडायें पीड्यो थको मनमां विचारे जे, हवे मरण वेहेलुं थाय तो सारुं, कारण आ पीडा सहन करी ज

ती नथी. माटे पीडाथी वहेला पार उतरीयें ! एवो विकल्प उठे, ते चोथो अतिचार.

५ पांचमो विसयासंसप्पउंगे अतिचार. ते अणशण करीने अणशणनुं फल, काम जोगनी प्राप्ति इछे; ते पांचमो अतिचार.

ए संलेषणाना पांचे अतिचार व्यवहार प्रसिद्धथी तो अणशण निश्राएं कहेवायछे. परंतु वस्तुगतें तो सर्वव्रतमां लागेछे.

१ जेम सर्वव्रत, सर्वनियम, दान, पूजा, विनय, वैयावच्च, अने प्रत्याख्यानादि क्रिया करीने आ लोकना सुखनी इछा न राखवी. तेम छतां जो राखे, तो पहेलो अतिचार लागे.

२ तथा परलोकें देवगत्यादिकनी इछा न राखवी, तेम छतां जो राखे, तो बीजो अतिचार लागे.

३ तथा आवो मनुष्यावतार पाम्या छेयें, धर्मनियमकरणी, जीवदया, जिनपूजा महोत्सव प्रमुख करीयें छेएं; शास्त्र सांजलीएं छेयें,ए सारुंछे; ए माटे घणुं जीवीए तो सारुं.रखे आयुष्यस्थिति पारों आवी जाय? एहवो विकल्प न करे,अने करे, तो त्रीजो अतिचार.

४ वली धर्म करतां कोइ पूर्वसंचित पापकर्मना उदय थवाथी घणी असाता पामवा लाग्यो.त्यारें मरणने इछे जे मरण पामीएं तो आ दुःखथी बूटीएं. पण ते एवुं न विचारे जे मरण पामवा थी कांइ कर्म बूटे नहीं. मुवाथकी पण बीजा जन्ममां अनुक्रमें आगलने आगल तैय्यारछे."कृतकर्मक्षयोनास्ति"एम जाणतुं,उलटी मरणनी इछा राखवाथकी अशुजकर्मरसपोषण थायछे. कारण के नवा अशुज विकल्पें अशुजबंध थाय;ए माटे साधक, मरणनी इछा न राखे जो राखे,तो चोथो अतिचार लागे.

५ तथा धर्मफल तो निर्जराछे.ते निर्जरा साध्य धरीने जे जे धर्म करे,ते मार्गी जीव आराधक कहेवाय.त्यहां कामजोगनुं फल साध्य राखीने कर्म करे,त्यारें पांचमो अतिचार लागे. एम सर्व व्रतमां

संलेपणाना पांचे अतिचार लागे. ए माटे उपयोग संजालीने पांचे अतिचार त्यागवाथी साधकता समरे. इति संलेपणा पं... व्रतातिचारस्वरूपं संपूर्णम् ॥

॥ अथ ॥

॥ श्री ज्ञानाचारस्य अष्टातिचारस्वरूप प्रारंभ ॥

१ प्रथम आकालाध्ययन अतिचार. ते कालविना सूत्रसिद्धां... भणे गणे. त्यां अतिचार लागे, ते कालवेला कहेछे. प्रथम स... रमां एक घडी रात्रीनी अने एक घडी प्रातःकाल अरुणोद... थया पछीनी. ए बे घडी प्रभातनी कालवेला कहीयें. तथा ... बीज रीतें बे घडी मध्यान्ह कालनी, तथा एज रीतें बे घडी ... ध्यानी, तथा बे घडी मध्यरात्रीनी. ए चारेने कालवेला कहीए... ए कालवेलामां नवुं भणवुं, गणवुं, सांजलवुं, ए कांइ पण कर... नहीं. ए कालवखतें ए कालनी क्रिया जे पडिक्कमणादिकने ... सुखें करे; पण बीजुं नवुं जणे गणे नहीं. ए कालनी वखतें ... नोगत जप, ध्यान सुखें करे, पण वचनोच्चार करीने जणे नहीं... ए अतिचार, साधु अने श्रावक बेउने साचववो. जो भणे, ते... साधु अने श्रावक बेउने अतिचार लागे. तथा साधुने कालि... सिद्धांत पहेले पहोर अथवा चोथा पहोर शिवाय शेष कालम... सिद्धांतसूत्र जणाय नहीं. रात्रियें पण एमज जाणवुं, वली बीजा... त्रीजा पोहोरमां अर्थचिंतवन करे तथा अकालें मेघवृष्टि था... तथा त्रण चोमासाना मद्दा पडवाना अढी दिवस असज्झाइ... ते आवी रीतें के अर्धी चउदश, पूर्णिमा अने पडवो ए अढ... दिवस तथा आसो अने चैत्र शुद पांचमथी ते वदि पडवा सुधी... असज्झाइ. तथा घर गाममां महासंग्राम थतो होय, त्यहां सुधी...

असझाइ. तथा राजा, छत्रपति, महोटो देशाधिपति मरण पाम्यो होय तेना तखत उपर ज्यां,सुधी नवो राजा न बेसे,त्यां सुधी ते देश मां असझाइ. इत्यादिक अनेक सिद्धांतमां असझाइकाल कह्योछे. तथा म्लेछना तहेवारकालें एटले बकरीइदें महाहिंसा थायछे. मा टे ते दिवसें केटलोएक कालरात्री प्रमुख, महा हिंसाना दिवस मां पण सिद्धांत जणवुं नहीं. तथा सो हाथमां पंचेंद्रिय जीवनुं क लेवर ज्यां सुधी पड्युं होय, त्यां सुधी सिद्धांत जे जिनप्रणीत सूत्र ते कांइ जणाय गणाय नहीं. ए क्षेत्रथी असझाइ कहीएं. इत्यादि असझाइना प्रकार आगममां घणा कह्याछे; तेमां सिद्धांत जण वुं तथा सांजलवुं पण नहीं. अने जो जणे तथा सांजले, तो ज्ञाननो कालातिचार लागे.

२ बीजो विनयहीनातिचार. ते गुरु, पुस्तक, तथा ज्ञान नां उपकरण जे पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, सांपडा, सांपडी, द सतरी, वही, नोकरवाली तथा अढार जातिनी लीपिना अक्षर स हित कागल प्रमुख उपकरणने पग लगाडे, पगथी दाबे, थूंक ल गाडे, थूंकथी अक्षर जूंसे, एठे हाथे स्पर्श करे, अक्षर उपर रेती नाखे, उपर बेसे, सूवे तथा फाडी नाखे, एठा मुखें एनो उच्चार क रे, कोइ ऊव्यना उपर अक्षर होय, तेने पासें राख्या थका त्यां व डीनीति, लघुनीति करे, लघुनीति, वडीनीति करतां उच्चार करे, अने स्नान, मैथुन, पूजा करतां बोले, पुस्तकने बाले, जलमां बू माडे, वेचे. इत्यादिक आशातना करे, अने गुरुनी तेत्रीश आशा तना न टाले, ते विनयहीनातिचार.

३ त्रीजो अबहुमानातिचार. ते गुरु तथा पुस्तकादिकनुं घणुं मान न करे, तेमनी अदब राखे नहीं. बहु मान ते जेम दरिद्री पुरुषने धनप्राप्ति थयाथी जेवो अति आनंद थाय अथवा कोइ सा मान्य पुरुषने घेर राजा पोतें चालीने आवे त्यारें ते पुरुष केवो

गरीब, पण ज्ञानगुणसंयुक्त होय अने पोतें तो महोटो ठोगा ळो होय अथवा श्रावक होय तो महोटो तालेवर होय, पोषा क प्रमुख सारो होय, चाकर प्रमुख घणा होय, तेवारें ते ळघूता दोषथी मनमां विचारे के महारो विद्यागुरु तो घणो प्रख्यात न थी. माटे एनुं नाम लड्श, तो महारी महोटाइ थशे नहीं माटे ते वर्त्तमान कालमां कोइ महोटो पंक्ति गुरू होय, जेनुं यश प्र ख्यात होय, तेनुं नाम लीयें. एम करी पोताना मूळ गुरुने बुपावे. ते गुरुलोपी, महापापीने पांचमो गुरुनिन्हवण अतिचार लागे.

६ ठ्ठो कूटसूत्रातिचार. ते सूत्रना अक्षर खोटा उच्चारे. न्हस्व दीर्घनी खबर न राखे, अक्षर, मात्राहीन अथवा अधिक करीने नणे, बंदोनंग करी नणे, पद, संपदासहित न बोले, ते सूत्रकूटातिचार.

७ सातमो अर्थकूटातिचार. ते पोताना अज्ञानदोषथी अ थवा कोइ कुमति कदाग्रहना उदयथी अशुद्ध अर्थ करे, विपरी त प्ररूपे, ते सातमो अर्थकूटातिचार.

८ आठमो उनयकूटातिचार. ते सूत्र अने अर्थ ए बन्ने अ शुद्ध नणे, प्ररूपे, ते आठमो उनयकूटातिचार. इति ज्ञानाचार स्य अष्टातिचारस्वरूपं संपूर्णम् ॥

॥ अथ ॥

॥ श्री दर्शनाचारस्य अष्टातिचारस्वरूप प्रारंनः ॥

१ प्रथम शंकातिचार. ते जे जिनागमना सूक्ष्म अतींद्रिय गंनीरनाव सांनळीने पोताना मंदक्षयोपशमना योगथी तथा मिथ्यात्वना प्रदेशोदयथी शंका धरे, जे ए वात केम घटशे? ए केम हशे? कांइ मनमां बेसती नथी. शुं जाणीयें जे केवी रीतेंछे? ए ते साचुं छे के खोटुं छे? एवो विकल्प उठे, ते प्रथम अतिचार.

अथवा जेने मंदक्षयोपशमछे, पण मिथ्यात्वना बहुप्रदेशोदय नथं
समकितनुं स्थान ऊंचुं छे, ते पण गंजिरजाव सांजलतां बुद्धिमां
एका एक आवे नहीं. पण ते समकेती एम विचारे जे ए वात
मारी बुद्धिमां नथी आवती; ते मारा आत्मदोषथी मने आवरण
दय थर्णछे; पण ए वात साचीछे; कारण के जे माटे ए सर्वजि
जाषित छे. अने श्री जिनेश्वरजी तो असत्यजापी नथी. असत
जापणमां त्रणे दोष जे राग, द्वेष, अने अज्ञान, ते तो जेमन
नाश पाम्याछे अने ते दोषना सहचारी जे हास्य जयादिक ते प
जेमना नाश पाम्याछे, तो तेवा वीतराग परमेश्वर कोण कारणे
तुं बोले ? विना उद्देश कोइ कार्य प्रवर्त्ति छेज नहीं अने वीतरा
कृतकृत्यने तो कोइ कार्यनो उद्देश रह्यो नथी, ए माटे जे केवलि
जाषित छे, ते सर्व सत्यजछे. एमां कांइ संदेह नथी. एवी निश्च
बुद्धि थइ, तेने समकितनी निर्मलता वधती जाय. अने जे
एवी निश्चल बुद्धि न होय, तेने अतिचारना सबबथी समकि
त, मलीन थइ जाय. ते प्रथमातिचार.

२ बीजो आकांक्षातिचार. ते जे दान, शील, तप प्रमुख
र्मकरणी करीने पुण्यरूपी फलनी इछा राखे, अति आतुरता
रे, अथवा आकांक्षा ते परमताजिलाष अन्यदर्शनीना धर्मन
उन्नतिजाव देखी, ते धर्मनी इछा राखे जे, आ पण धर्म सारोछे
आचरवा लायकछे, जूर्ज जूर्ज !! एमां पण केवा केवा प्राणी छे
औदार्य, धैर्य, गांजीर्य, पूर्णजक्ति, परोपकार, अने निस्पृहता
वी धारण करे छे ? एवा धर्मने केम निंदीएं ? एवो विकल्प,
बीजो आकांक्षातिचार.

३ त्रीजो वितिगिछातिचार. ते धर्म करणीना फलनो संदे
धरे. अहींयां पोतानां पुर्वकृत पापना उदयथी कोइ उदयि
दुःख पामे,त्यारें शिथिल परिणामना योगथी अशुद्ध विकल्प ऊठे

जे अमे विधिपूर्वक धर्मकरणी करीयें ठेयें, पण कांइ फल नजरमां आवतुं नथी. कोण जाणे केवुं फल पामशुं ? पण एम न विचारे जे, धर्म तो आजन्ममां पाम्या ठेयें, अने हमणां करीयें ठेयें तेतुं फल तो निश्चे आगल पामशुं. पण एतो पूर्वजन्मने विषे मिथ्यात्वा दि चारनी प्रबलताथी जे चीकणां कर्म बांध्यांठे; तेनो अहीं उदय थयो ठे, ते पोताना विपाक मात्र जोइने जेने धर्ममां निश्चल बुद्धिठे, तेनां कर्म तरत नाश पामशे, जे कारण माटे धर्मक रणी करतां पाप उदय थाय. ते प्रायें निकांचितरसियां कर्म उद य आवे, अने बंध, स्पष्ट, निधत्त रसीयां कर्म ते धर्मना परिणा मथी विफलोदय थइ जाय, एवुं न विचारे. एम डुःखनी आतुर तामां जूले, ते पण अतिचार ठे. तथा साधु साधवीनां मलमली न वस्त्र तथा शरिरादिक जोइने मनमां डुगंठा करे, सूग आणे, जे ए सर्वकरणी तो सारीठे पण ए गलीच रहेठे, ते बूरुं करे ठे. जो ते अचित्त फासु परिमित जलथी स्नानादिक करीने शुद्ध र हेतो घणुं सारुं; एवो विकल्प करे, पण एम न विचारे के ए पु जल, सर्व एक सरखांजठे. सारुं नगारुं कोइ नथी. जे कारण मा टे शुचि ते अशुचि थाय,अने जे अशुचि होय ते शुचि थाय. सम य समय अशुचि पुजलमां शुचि पुजल आवेठे, अने शुचि पुजल मां अशुचि जायठे. जे शरीरने पवित्र करवाने विविध प्रकार करें ठे, ते शरीर तो केवल अशुचिथी जस्युंठे; तो तुं क्यहां सुधी एने पवित्र करीश ? वली आ शरीर, पवित्र करवाथी कांइ जीव पवित्र नहीं थशे, जीव तो सर्व पुजलनी वांठना मटवाथी पवित्र थशे. जे अहीयां फासु अचित जलथी पवित्रता करे, तो पण ते पुज लरंगी थयो; अने ज्यारें जीव पुजलरंगी थयो, त्यारें आ जीवनी अनादिनी जूल मटी नहीं. एने तो पहेलोज दिवसठे. सर्व धर्म नुं मूल तो एठे. के जेम जेम वासना उतरे, तेम तेम धर्म

निश्चलता होय. पवित्र अपवित्रपणानी वासना तो राग द्वेष
मूलछे. अने ज्यां राग द्वेषनी पुष्टिछे, त्यां धर्म क्यांछे ? इत्यादि
शुद्धयुक्ति चित्तमां न आवे, त्यारें कुविकल्प करे. अथवा वि
गिछा ते घणो पुण्योदय थये थके माचे, मनमां फुले, अ
मान धरे; अने अतिपापोदय थये थके दुःख धरे, बहु अर
वेदे, उदासी रहे, दीनता करे, दिलगिरी रहे, ए सर्व दुगंछ
छे. तथा एक सारो, अने एक भूंडो ए लक्षणें करीने ए त्र
प्रकारना विकल्प, ते त्रीजा अतिचारमां आवे.

४ चोथो मूढदृष्टि अतिचार. ते जे अन्यदर्शनी मिथ्यात्वीन
कष्ट, मंत्र, चमत्कार, अथवा कोइ मिथ्यात्वीना देवनो परतो
मनःकामनापूर्ण, ते जोइने दिलमां मुरझाय जे आ देवधर्म त
प्रत्यक्षछे; तो गुरु केम ना कहेछे ? कांइ खबर पडती नथी. ए
मुरझाय, पण एम न विचारे जे सुख दुःखतो कर्मना उदयने अ
धीनछे. देवता तो निमित्तमात्रछे. आपणां पुण्य पापना उद
विना देवताथी कांइ थनार नथी. तेउ तो केवल आपणां पुण
पापना उदयनिमित्त थइने यश ग्रहेछे; पण उदयिक पाप पुण
ना उदय विना सुख दुःख आपी शकता नथी. अन्यदर्शनना
जे प्रभावक देवता छे, तेमनी सेवनाना करवावाला तो कोइ स
सुखी नथी, तेमां पण घणा दुःखीछे, ए माटे कर्मना उदय विन
सुख दुःखनी प्राप्ति, ते मिथ्याछे. अथवा श्री जिनागमना अ
सूक्ष्मविचार, निगोदना, अथवा षट्द्रव्यना, नय, गम, जंग,
स्तारा दिक गहनविचार सांजलीने पोताना आवरणना दोष
बुद्धिमां न आवे,त्यारें मुझाय, ते एम के कोण जाणे ए शुं क
छे ? कांइ खबर पडती नथी. कोण जाणे शी रीतें हशे ? ए
कारें विकल्प करे, ते चोथो मूढदृष्टि अतिचार.

५ पांचमो अणुवबुद्द अतिचार. ते जे पोतानी सत्ताना गुण

र्याय प्रकाश करीने कहे नहीं. अथवा गुणवंतना गुण जाणे तो पण तारीफ करीने प्रकाशे नहीं. पांच लोकमां गुणीना गुण प्रस्ता वती वखतें तेना गुण प्रगट जांखे नहीं. प्रकाशे नहीं, मोढेथी कहे नहीं तथा रागद्वेषादिक, कर्मउपाधि संयोगिक जाव, सर्व दुःखनुं मूलछे. एम वीशदरीतें प्रकाश करीने कहे नहीं, ते पांचमो अतिचार छे.

६ छठो अस्थिरीकरण अतिचार. ते जे आपणने कोइ पाप कर्मनो उदय थयो, त्यारें आपदा, रोग, शोक, आजीविका, दु र्लजता, कूडां आल, तेवी दिनपर दिन दुःखनी चढती जोइने कोइ मिथ्यात्वना प्रदेश उदयबलें करी जैनमार्गथी परिणाम खसता जा य. आचारमां शिथिल थाय, ते पोतेंज पोताना शास्त्रपरिचयथी जाणे जे मारां परिणाम धर्ममार्गथी शिथिल थयाछे, पूर्वथी मा री श्रद्धा पण मलीन रहेछे. एवुं जाणे तो पण तेनी दृढतानां कारण जे सद्गुरुसेवन, शास्त्रश्रवण, दृढवृत्ति, महापुरुषचरित्रस्म रण, देवदर्शन, उत्सवादिगमन, कर्मग्रंथादिक अथवा अध्यात्म शास्त्रपठन, इत्यादि दृढतानां कारणछे, ते न सेवे, अने जाणतां छतां पण गुरुसंसर्ग, शास्त्रपठनादि उद्यम करे नहीं. अथवा कोइ अधर्मरुचि प्राणीथी परचो करे, अथवा कोइ वीजो धर्म रुचि जीव होय, तेने धर्मथी पडतो देखे, त्यारें कहे फलाणो पुरुष, आगल धर्ममार्गमां घणोज दृढ थयो हतो, हवे तो दिवसें दि वसें एना शिथिलतानां परिणाम नजरें वधारे आवेछे. एवुं पोतें जाणे अने पोतामां एवी शक्ति पण छे, के ते धर्म शिथिलने बहुविध हेतुयुक्ति देखाडीने धर्ममार्गमां स्थिर करे अने पडवा न दीए. एवी शक्ति छतां पण तेने उपकार बुद्धिएं करी शुद्धोप देशें दुर्गतिपतनादि विपाकदर्शन. इत्यादि स्थिरीकरण न करे, अने मनमां जाणे जे आपणुं शुं बगडेछे? चेतना तो एनी बगडे

माटे जे करशे, ते पामशे. एवी उदासी करीने छति शक्तियें धर्मथी डगतो होय, तेने धर्ममार्गमां स्थिर न करे, तो तेने अ स्थिरीकरण छठो अतिचार लागे.

७ सातमो अवात्सल्यातिचार. ते जे जे साधर्मी प्राणी, जे नी एक श्रद्धाछे, अने शास्त्रश्रवण, देवदर्शन, सामायक, पोसह प्रमुख करवुं, इत्यादिक धर्मकरणी. सायेंज करता होय, जेनी सायें धर्मनो मट्होटो संबंधछे अने जे एक गुरुना उपदेशित प्रमु ख छे, तेने साधर्मी कहीयें. ते साधर्मीनी छति शक्तियें भक्ति न करे तेने कोइ रीतनुं संकट आवी पड्युं होय अने पोतानामां ते संकट टालवानी शक्ति छे, तो पण तेनो उद्धार न करे, ते संक टने मटाडे नहीं, ते साधर्मी उपर घणुं हेत न धरे, तेने जोइने खुशी न थाय. संघमध्यें कोइ गुणवान् पुरुषनी शोभा यश, प्रतिष्ठा सांभलीने अप्रीति उपजे तथा साधर्मीकनो समुदाय मले, त्यां कषाय करीने मांहो मांहे विरोध पेदा करावे. [illegible] सायें शत्रुतानी रीति राखे, तेनी उपर अशुभ परिणाम [illegible]. अथवा सर्वजीव सत्तामां सरखाछे, एकज जाति, समान [illegible] र्यायी, अने तेउनुं वस्तुगतें एकज स्वरूपछे, ए माटे [illegible] र्मी थया, एवुं शास्त्रना उपकारथी जाण्युं, तो पण [illegible] क्षा न करे, ते अवात्सल्यदोषछे अथवा स्वनिष्टामां [illegible] पोताना ज्ञान दर्शनादि गुणपर्याय छे, ते निश्चें सा[illegible] गुरुकृपाथी जाणेछे तो पण तेने ज्ञान, ध्यान, संवर [illegible] रमणें करी पोषे नहीं, अथवा जेम वार तहेवारें [illegible] घने आदरथी अने भक्तिथी बोलावी विविध [illegible] पोषेछे; तेम कोइ वार्षिक पर्वादि धर्मगत पर्व [illegible] त्सल्यादिक भक्ति, छति शक्तियें करे नहीं; [illegible] रूप अतिचार छे अथवा देवद्रव्य, [illegible]

साधारणद्रव्य वावरे. कोइ देवद्रव्य नक्षण करतो होय, तेने छति शक्तियें शिक्षा न आपे. मनमां विचारे के आपणने शुंछे? जे खाशे, ते डुर्गतिनो देखवावालो थशे, संघमां शुं आपणे एक लाज छेयें !! बीजो तो कोइ बोलतो नथी, त्यारें हुं एकलो शा माटे कोइ जाइ कुटुंबीने मातुं मनावुं ? एवुं विचारे तथा छति श क्तियें देहेरा प्रमुख धर्मस्थानकना द्रव्यनी खबर राखे नहीं, अ थवा खंम्ति, फंफित, मेली, अशुरू, अपवित्र धोतीथी पूजा करे अ थवा पूजा करतां बीजाने एवीज रीतें, एवे वेषें जोइने तेने कांइ कहे नहीं, अथवा पूजा करतां मुखकोश बांधे नहीं, तेत्रीश आ शानना टालीने पूजा करे नहीं, अथवा पूजा करतां बिंबने हा थमांथी पाडी नाखे, बिंबने कलश प्रमुखनो धक्को लगाडे, देहेरा नी दश आशातना न साचवे, सामायक तथा पोसहमां थापना चार्यनी पडिलेहणा करतां हाथमांथी नूमि उपर गिरावे अने शुरू माननक्ति न राखे. ए सर्व सातमो अवात्सल्यातिचार जाणवो.

७ आठमो अप्रनावनातिचार. ते जे, छति शक्तियें धर्मनी उन्न तिनां जे जे कारणोछे, जेवां के स्नात्रपूजा, सत्तरप्रकारीपूजा, एक शो अष्टोत्तरीपूजा अने एकवीशप्रकारीपूजा ते महोटा हर्षथी क रववी, तथा थोडी शक्ति होय तो व्यवहारें अष्टप्रकारनी पूजा, प्र नावना, संघनक्ति, रथयात्रा, तीर्थयात्रा, संघसहित जवुं, महोत्सव, बिंबप्रतिष्टा करावबी, तीर्थोद्धार करावबा, जीर्णोद्धार पोताथी क रवबां, अथवा अन्यने उपदेशप्रकपक थइने नवां प्रासाद बीजाकने करावबां, अने सद्गुरु, आचार्य, नट्टारक प्रमुख आवे थके तेमने संघनियुक्त अगारित दान आपे. छति शक्तियें छेतुं न करे. सोना ना तथा रूपाना फुलनां करतो थको तेने नगरप्रवेश करावे ते समयें उदारचित्तवालो थइ जेवुं पोतानुं सामर्थ्य होय, ते प्रमाणे चोटा प्र मुखनां सोना करावे. प्रनोडी प्रमुख विविध प्रकारें विनूषा थता

वे उदारताथी दीनने दान आपे. ए सर्व ... ते, मे
कारण छे. जेकारण माटे एवा उत्सव, महोत्सव ... जूमि
अवारित दाननी उदारता विगेरेने देखवाथी ... करीने
त्वी जीव, धर्मनी अनुमोदना करीने पुण्योपार्जन ... अनुप
धी पण थइ जाय, अने आपणा पण एवे कारणे ... पहेली
मैल थाय. कोइ लेश्या एवी आवी जाय के ... कदापि न
मरनां पण आवे नहीं. एवो परिणाम ... ो, कारण
जावनाथी घणा जीवोने उपकार थाय; ...
ठति शक्तियें पण प्रजावना न करे, ... सर्व कालें
गेतमां ज्यां ज्यां पुष्टनिमित्त जे देवगुरु ... र्वोक्त प्रणि
सेवन, जेनाथी आत्माना गुणनी वृद्धि ... मुख आलं
आत्मामां ज्ञानप्रकाश थाय. एवुं सर्व ... ति आचार,
ऐ करे नहीं, ते अप्रजावनादोपातिचार ... स्वरूपमां मन
दर्शनाचारस्य अष्टातिचारस्वरूपं संपूर्ण.

... साधु सर्व
... . अने
॥ अथ ॥
... कारण
॥ श्री चारित्राचारस्य अष्टा... ... ांगे सां
१ प्रथम अनुपयुक्तगमनाति... ... रठे. अने
चन, काया, एकत्र उपयोगीरूप ... ... अतिचार.
साधु फूसर प्रमाण जूमियें दृष्टि ... ... तिचार. ते जे
ईर्यासमितियुक्त गमन थाय. ... ... इंद्रियें गुप्त क
श्रावकने सामायक पोसह कीधे ... ... को ... यु
चपलतासहित वर्त्ते, तोते प्रथम ... ... आकुंचन ... क
२ बीजो अनुपयुक्तजाषा ... ... पण ...
स, अने श्रावक सामायक ...

त्यां जाषाना चार नेदछे. प्रथम सत्यजाषा. ते जेवुं होय, तेवुंज कहे. पण कम वेश न कहे, बीजी असत्यजाषा, ते कांइ कहे वानुं होय तेने बदले कांइ कहे. त्रीजी मिश्रजाषा. ते कांइक जूठुं अने कांइक साचुं, जेम के आजे नगरमां दशनो जन्म थयो.एम कहे, ते मिश्रजाषा. चोथी अनुनयजाषा. ते साचुं पण नहीं अने जूठुं पण नहीं, पण जे लोकव्यवहारें बोलवुं. ते जेम गाम आव्युं रात्री पडी, वली कोइनुं नाम कहेवुं. जेम के जगरपाल, लक्ष्मीधर, देवदत्त, अमर इत्यादि व्यवहारजाषा चोथी. त्यां साधु महाराज, अने श्रावक सामायक पोसहमां पहेली अने चोथी ए बन्ने जाषा बोले; ते पण प्रणिधानयुक्त उपयोगी अने जयणायुक्त बोले. ते अहींयां विना उपयोगें अशुद्ध बोले, ते बीजो अतिचार.

३ त्रीजो अनुपयुक्तएषणातिचार. ते जे पूर्वोक्त प्रणिधानयुक्त बेंतालीश दोष टालीने जिक्षा ले. पांच दोष टालीने आहार करे, ते चारित्राचारछे; पण उपयोग विना एथकी विपरीतपणे आहार ले. ते त्रीजो अतिचार. अहींयां एषणाशुद्धिमां बीजुं पण वस्त्र, पात्र, शय्या, संथारक, वसती प्रमुख जे जे चीज चारित्रने उपकारी होय, ते चीज जो निर्दोष ले, तो आचार जाणवो अने जो सदोष ले, तो अतिचार लागे. ए पण अतिचार साधुने सर्वदा, अने गृहस्थने पोसह सामायक लीधे लागे. एम पोतानी दशा माफक पाले, तेमां जो अनुपयुक्त प्रवर्ते, तो ते त्रीजो अतिचार.

४ चोथो अनुपयुक्तआदानमोचनातिचार. ते जे साधु सदा काल, अने श्रावक सामायक पोसहमां जे जे चीज ले, तथा मूके, ते चीज पूर्वोक्त प्रणिधानयुक्त उपयोगी थको दृष्टि पडिलेहणा पूर्वक ले, फरी पडी रीतेंज मूके, एवो आचारछे. अने जे अनुपयुक्त अविधियी आदान मोचन करे, ते चोथो अतिचार कहीयें.

५ पांचमो अनुपयुक्तपरिठावन अतिचार. ते जे साधु सर्व

काल, अने श्रावक सामायक पोसहमां लघुनीति, वडीनीति, मे ल, श्लेष्मादि जे परठवणा लायक वस्तु, ते शुद्ध निर्जीव भूमि ना स्थानकमां दृष्टिपडिलेहणापूर्वक, पुजन प्रमार्जन करीने परठवे, एवो आचारछे. तेथी विपरीत, प्रणिधान रहित अनुप योगी थको परठवे, तो पांचमो अतिचार लागे. अहींयां पहेली बे समिति, पोसह सामायकमां तो अवश्य साचववी. कदापि न सचवाय, तो पण ए बेनो जैनधर्मीने उपयोग राखवो, कारण ए धर्मनो मूलमार्गछे.

६ छठ्ठो अनुपयुक्तमनप्रवर्त्तनातिचार. ते जे साधु सर्व कालें अने श्रावक सामायकादिक धर्मकरणीना अवसरें पूर्वोक्त प्रणि धानपूर्वक सर्व कुविकल्प छोडीने सूत्रार्थ चिंतवन प्रमुख आलं बनयुक्त उपयोगी थको मनने स्थिर राखे, ते मनगुप्ति आचार, अने एनाथी विपरीत आर्त्तध्यानादिकें करी कुविकल्पमां मन दोडावे, ते छठ्ठो अतिचार.

७ सातमो अनुपयुक्तअकारणवचनातिचार. ते जे साधु सर्व काल अने श्रावक सामायक पोसहमां प्रायें मौनज रहे. अने बोले, तो पण उपयोगी, पूर्वोक्तप्रणिधानयुक्त अवश्य कारण योगें जिनाज्ञायुक्त सर्व जीवने हितकारक, एवुं शुद्ध जांगे सां जलवामां मधुर एवुं वचन कहे, ते वचनगुप्ति आचारछे. अने एनाथी विपरीत निष्कारणे जेवुं तेवुं बोले, ते सातमो अतिचार.

८ आठमो अनुपयुक्तनिष्कारणकाययोगचपलतातिचार. ते जे साधु सर्वकाल अने श्रावक पोसह सामायकमां इंद्रिउने गुप्त क री राखे अने अवश्य कारण योगें उपयोगी थको प्रणिधान यु क्त आज्ञापूर्वक जयणाथी हस्त पादादिक आकुंचन प्रसारण क रे, अथवा उठे, बेसे, ते कायगुप्ति आचार. पण निष्कारण, अनुपयुक्त, अने अविधिपूर्वक जे हस्त पादादिक योगचपल

ता करे, ते आठमो अतिचार जाणवो. ए अतिचार जाणवामां रासे. पण आदरे नहीं. अहिंयां गुप्तिधर्म ते उत्सर्गधर्म छे अने समिति ईर्यादिक जे पांचेछे, ते अपवादधर्मछे. ए आठे धर्मनी माता कहेवाय. जे जे धर्म करणीछे, ते ए आठें करी युक्तछे, ते आचारछे. अने ए विना जे करे, ते अतिचार जाणवो ॥ इति चारित्राचारस्य आष्टातिचारस्वरूपं संपूर्णम् ॥

॥ अथ ॥

॥ श्री तपाचारस्य द्वादशातिचार स्वरूप प्रारंभः ॥

त्यां तपनुं मूल लक्षण एछे जे, श्री जिनेश्वरें बार प्रकारना तपनी प्ररूपणा कीधी, ते तप, परम निर्जरानुं कारणछे. पण इच्छा निरोध करीने मनमां ग्लानपणुं नहीं, मन हारे नहीं, अज्ञान नी आतुरता रहित, विषयानुष्ठान, गरलानुष्ठान रहित, अन्योन्या नुष्ठानरहित एटले आ लोकने विषे आजीविका हेतुयें अथवा मानने अर्थें, तथा पूजाने अर्थें, अने परलोकें देवादिक पदवीना हेतुयें ए त्रण अनुष्ठान छे; इत्यादिक आशयरहित, क्रोधमा नादि कषायरहित, उमंगसहित, समतासहित, अने चित्तनी प्र सन्नतायें करी, केवल कर्मक्षयना निमित्तें करे, तेने शुद्धतप क हीयें. ते तपना बार भेद छे, माटे बार अतिचार लागे, ते लखेछे.

१ प्रथम अणशणतप. ते जे उपवासादिक वीविध प्रकार नाछे, ते करीने पछी पूर्वें भोगवेला आहारने याद करे, भक्तकथा करे, आगला दिवसें पारणानी चिंता करे के आवी रीतें रसोइ ब नावीने खाइश. एवो मनमां विकल्प करे. आ संसारमां आहार संज्ञादि दोषछे, ते मोहोटुं सांभलछे, अने सर्व आरंभनुं मूल छे. "छप्पन्न काढनो बाप ज्यारें छटो, त्यारें थने एक रोटो" एवो अ नादि दोष जिनवचन सांभलवादी जाण्यो पण ते दोष सर्व प्रका

रित्यागवाने तो लाचार छे, त्यारें मोक्षार्थी जीव, पोतानी श
मुजब योग्य परिमित काल कवलाहार त्रिविध योगें त्यागरू
चखाण करेः एटले धारणापरिमाणकाल सुधी छकायने अज
ान थयुं. अने रसनेंद्रियादिक मार्गो थया. त्यारें सकल लब्धि
ुख आत्मिक संपत्तिनुं वीज रोप्युं. एम सकल मनःकामना
र्य करवाने समर्थ एवुं तप करीने आगला पाछला दिवसनी चिं
, अनुमोदना करे, ते तपफल व्यर्थ करे. अथवा मनग्लान करे
, उपवास महोटो कठिन थयो? आ शुं कर्युं? एवो पश्चात्ताप
रे. ए सर्व, तपना अतिचार छे ॥ इति अणशण तपातिचार.

२ वीजो ऊणोदरीतप अतिचार. ते जे पुरुषनो पूर्ण आहार
त्रीश कवलप्रमाण, अने स्त्रीनो अठावीश कवल प्रमाण आ
हार. ए नीरोगी शुद्धकायानुं लक्षणछे. एमां जो कमी जास्ती आ
हार थाय, ते प्रायें रोग औषधादिकना प्रजावथी थइ जाय तो
लाचारीछे, पण प्रमाण तो बत्रीश कवलनुं छे. अने एक कवलनुं
प्रमाण मुरगीनुं इंडुं अथवा जेवडुं आंबळुं तेवडुं, अथवा आपणा
मोढानी फाडमां जेवडो कवल सुखें आवे एटलो ग्रास लेवो तेने
पण कवलप्रमाण कहीयें. अथवा आपणो जेटलो आहार होय,
तेना बत्रीश जाग करीएं तेमांना एक जागने पण कवल कहीयें.
एवा बत्रीश कवलनो जे आहार करे, ते पूर्णाहारी कहेवाय.
ते पूर्ण आहारमांथी इछारोध करीने क्षुधा छते संतोष धरीने वे
अथवा चार अथवा आठ कोलीया ठंगा खाय; तेने ऊणोदरी तप
कहीयें. त्यां ऊणोदरीतप करीने कवल परिमाणमां महोटा महो
टा कोलीया गणतरीमां राखीने खाय अथवा सरस आहार जे मो
दक प्रमुख चीज घणी चीकणीछे, तेना कोलीया खावामां पण ठं
गा आवे. कारण तेना थोडा कोलीयामांज तृप्ति थाय. ते थोडा को
लीया गणतरीमां राखे, अथवा विशेष स्वादथी घणुं खाय. एवुं

करीने विचारे जे आहार प्रमाण तो बत्रीश कोळीयानुंछे; अने में तो चोवीश कोळीया खाधा; माटे मारे पण ऊणोदरी तप थयुं. पण एम न विचारे जे, बत्रीश कोळीयामां मोदक प्रमुख चीकणी वस्तुनी गणतरी नहीं जाणवी. तेम छतां आज्ञानदोषथी समजीने ते एवो मनमां विकल्प करे, ते ऊणोदरी तप अतिचार.

॥ त्रीजुं वृत्तिसंक्षेपतप. ते विविध प्रकारना अभिग्रह धरे, अने श्रावक चौद नियम धरे. अथवा आहारनी चीज होय तेनी द्रव्य द्वारायें संख्या राखे, ते वृत्तिसंक्षेपतप कहीयें. ते तप करी ने साधु वार्तामां अथवा उपदेश देतां थकां पोताना अभिग्रहनी वात पण गृहस्थना आगळ कही दे, त्यारें ते सांजळीने गृहस्थ जाणे जे अहो !! साधुयें केवा केवा अभिग्रह लीधाछे. तेथी वि वेकी अने चतुर श्रावक होय, ते पोतानी बुद्धियकी अवसर थये थके अभिग्रह पूरे. तथा गृहस्थ द्रव्यपरिमाणादि नियम धरतो होय, ते पोताना घरमां संकेत शिक्षारूप करे. जे तमे तो स्नेह ग्रथिल ळो तेथी हरेक चीज लावीने जोजन करती वखतें जोज नमां नाखशो; अने अमें तो वृत्तिसंक्षेप लेयें, तेथी द्रव्य अधिक थइ जाय त्यारें व्रत खंकन थाय. माटे अमने जूदी जूदी चीज आपवी नहीं. अमाराथी एकठी करेली चीज लीधी जाय, जेनुं एक द्रव्य गणुं जाय माटे हलफल करीने विना खचरथी कोइ चीज जूदी आपशो नहीं. एवी शिक्षा कहे त्यारें ते रसोइदार तुरत रहस्य पामी जाय अने पछी पोतानी निपुणताथी लूण, म रचुं, जीरुं, हिंग संयुक्त व्यंजनादिक मीठी चीज प्रमुख आगल थी एकठी मेळवीने राखे अने ते सो चीज सुस्वाद होय ते पी रसे अने ते चीज आरोगे. मनमां जाणे के, मारुं द्रव्यापरिमाण हुं शुद्ध राखुंनुं. पण पूर्वे एवी संज्ञा करी, तेथी व्रत तो मलिन थयुं. एवो कुविकल्प, ते वृत्तिसंक्षेपतपअतिचार.

४ चोथो रसत्यागतप अतिचार. ते रस जे ठ विगय, ते वि कारना हेतुठे. अने रसगृद्धिना बहु कटु विपाक ठे; एवुं जाणीने त्याग कर्यो. पठी कोइ कारण विना अने गुरुआज्ञा विना निविआता करी खाय अथवा अन्य द्रव्यांतरसंयोग मेलावी घणी रीतें अभिसं स्कार करीने तेनी मजा आवे; एवी गुणवान् चीज करी खाय. एटले जिव्हानी रसगृद्धि मटाडवा सारु ए तप कीधुं हतुं ते तो थयुं नहीं, ते चोथो अतिचार.

५ पांचमो कायक्लेशतप अतिचार. ते जे साधु, मुनीश्वर लोच करावे. तडकामां ताप सहन करे, शीत सहन करे, डांस, मठर, कुतरा प्रमुखना परिसह सहन करे, विकटासनें स्थिर थइने ध्यान करे, विकटासनें सज्झाय करे, ए तप साधुने तो हररोजठे अने श्रावकने तो सामायक, पोसह अथवा जाप, नवकरवाली, पंचपरमेष्टिना ध्यानना अवसरमां कायक्लेश सहन करवानोठे त्यां ठति शक्तियें आगलथी वस्त्रादिक लपेटी सर्व शरीर, आवृत करीने क्रिया करे, अथवा कोमल आसनें बेशीने जपादिक करे, ते कायक्लेशतप अतिचार.

६ ठठ्ठो संलीनतातप अतिचार. ते जे साधुने तो सदा संलीनता तपठे तेथी सदा पोताना अंगोपांग संवरी राखे. विना कारणें ह लावे नहीं अने श्रावक पण सामायक पोसहमां, अथवा पूजा ज पादिक अवसरें पोतानुं अंग संवरी विनयगुणयुक्त राखे एटले गप लांबा करवा, अवढंज लेवो, गले हाथ देवो अने अंगोपांग मोडवादिक न करे. एक शुद्ध उपयोगी अंगोपांग संवरी जयणापूर्वक विनयगुणयुक्त प्रवर्त्तन करे, ते संलीनतातप कहीयें. त्यां एवुं तप करीने पूर्वोक्त दूषण लगाडे, तेने संलीनतातप अतिचार ठठ्ठो लागे. ए ठ प्रकारनां बाह्य तपना ठ अतिचार कह्या.

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

जइने त्यां ते वेष छोडीने गृहस्थ थयोछे, तेनुं नाम पछ
वक कहीयें ते फडाणा गाममां छे. एवुं सांभलीने प्राय
जाय अने ते पछाकडाने एवो प्रतिबोध आपे के हे मह
तमे तो रत्नत्रयिनी महोटी पदवी पामी करीने छोडी दीध
नहीं करखुं. पण तेमां तमे शुं करो? उदय छे ते मह
छे. तेना जोरथी तमारा परिणाम शिथिल थइ गया. ते
थवानुं हतुं ते थइ गयुं, ते माटे हवे कांइ चेतो अने फर
मने फोरवो. हमणां अशुभ कर्मना उदयनी अशाता पा
वानो समय थयो जणायछे तेथी करी अमारो पण तमार
मेलाप थयोछे. वली तमोने तो महाज्ञाननो आधारछे. र
देखी पेखीने केम कूवमां पडोछो? ए माटे फरीथी स्व
थइ चारित्ररत्नने अंगीकार करो अने आत्माने तारो. इ
पण घणा पतित थइने फरी जाग्रत थयाछे, तर्ये कर्मनो
करीने मुक्तिसुखने पाम्याछे ए माटे तमे पण चारित्र ल्यो,
करो नहीं. एवो सारो उपदेश सांभलीने ते पछाकडा भाव
परिणाम सुधरे, तो तेने चारित्र लेवरावी, पछी तेनी पासेथ
प्रश्चित्त ले. एम करतां पण ते जारे कर्मीछे, तेथी एम कहे
भाइ साहेब! गजपाखर ते रासभथी केम उगावी शकाय
तेम माराथी आ निष्कलंक चारित्ररत्न न पले तो तेने जूतुं सी
थी शो गुण थाय? जो ते विधि माफक निर्वहे नहीं तो हुं उल
महापापी अने अघोरी थाउं. एकवार तो थयो छउं अने ए क
लागी चूक्योछे. हवे एवी हकीकत कही अने ते जाइयें सांभ
ते समयें ते. ते पछाकडाने जिनमंदिरमां लेइ जाय अने त्यां तें
सामायक लेवरावे. पछी तेने वंदन करीने तेनी पासेथी आलोय
णा ले; पण अज्ञानी पासेथी आलोयणा ले नहीं. एवी रीतें गुरुने
गवेषणा करीने पण आलोयणा ले, ते एवी रीतें के जेम पोतानी

माता कने बालक पोताना मननी वात कहे; तेमांनी कांइ पण छुपावे नहीं, कोइ वात कहेतां लाजे पण नहीं, तेम साधक पण गुरुनी आगल जेवी वीती होय तेवी, निष्कपटी थइ करीने त्रणे योग जे मन,वचन,अने काया तेणे करी जे भूल थइ होय ते कही आपे. कोइ जाणीती वातमां छुपावे नहीं, तेने आलोयणा कही यें. पण जो कांइ छानुं राखीने कहे, तो ते तत्वदंभी थयो, तेथी तेनी शुद्धि थाय नहीं. एवा विधिपूर्वक साधकें गुरु आगल, सर्व पाप प्रगट करी दीधां; गुरुयें पण सर्व जाणी लीधुं. त्यार पछी गुरु, आगमना ज्ञाताछे ते विचारे के पापकर्म, चार रीतें लागेछे १ आकुट्टी, २ दर्प्प, ३ कल्प, अने ४ प्रमाद. एवा चार प्रकारना पापमां आ आलोयणा लेनार कया पापना प्रायश्चित्तने लायक छे ? एवो विवेक करीने यथायोग्य प्रायश्चित्ततप, गुरु आपे, ते शिष्य प्रसन्न थइने ले अने एवुं जाणे के गुरुजीयें मारा उपर महोटी कृपा करीने संकटमांथी छोडाव्यो अने मने घणो सुखी कर्यो. मने घणो शुद्ध उपाय बताव्यो. ए गुणना उपकारने कोण वि सरे ? एवी रीतें हर्षित चित्तथी गुरुदत्त प्रायश्चित्ततप ले. पछी गुरुयें उपदिष्टकालने विषे जे तप आप्युं छे, ते तप लेखा शुद्ध पूरुं करी पहोचाडे. ते प्रायश्चित्ततपाचार कहीयें. अने जे गुरुयें आपेला मार्गने छोडीने पोतानी मतिकल्पनापूर्वक करे, अथवा प्रतिज्ञात कालथी वधारे काल, विना कारणे लगाडे, अथवा कमबेश करे अथवा प्रतिज्ञा, राजवेठ समान करे, पांच [illegible]मां अण बूटतुं करे अथवा शून्यचित्तथी करे अथवा फरी [illegible] आश्रवसेवन करे, ते प्रायश्चित्ततप अतिचार कहीयें.

२ बीजो विनयतप अतिचार. ते जे साधु तथा श्रावक सहु पो त पोतानी दशा माफक विनयपूर्वक आगममां "आयरियउवज्झाए" इत्यादिक गुणवंत प्रत्यें विनय जे वंदन, नमन, अभ्युत्थानादि

उचितनक्तिक्रियारूप, ते आगमशैली प्रमाणे करे, ते विनयत पाचार कहीयें; अने जे आगमोक्तिथी कमवेश करे अथवा विपरीत करे अथवा अण ठूटतो करे अथवा दंनथी करे, ते विनयतप अतिचार कहीयें.

३ त्रीजो वैयावच्चतप अतिचार. ते जे साधु तथा श्रावकने, कुल, गण, चैत्य, संघ इत्यादिकनुं जेनुं जेनुं जेवुं जेवुं वैयावच्च करवुं आगममां कह्युं छे, ते प्रमाणे तेनुं वैयावच्च करे. त्यहां वै यावच्च ते रोगादिक विघ्न उपजे थके तेनो प्रतिकार जे उपाय विविध औषध, अंगमर्दन, पथ्य, नक्तादि योगमां तत्पर थइ न क्तिपूर्वक करे, ते वैयावच्चतपाचार कहीये अने जे ते वैयावच्चनी वखतें काइ वानुं काढी टली जाय अथवा वैयावच्च खोटुं करे अने जे नक्ति विना अणछूटते करे अथवा दंनथी करे अथवा आचार्यादिकना नयथी करे अथवा पोताने करवानुं, ते बीजा पासें करावे, तेने वैयावच्चतप अतिचार कहीयें.

४ चोथो सज्झायतप अतिचार. ते जे साधु तथा श्रावक पोत पोतानी योग्यता प्रमाणे श्रुतज्ञाननो अन्यास करे, ते सज्झायत पाचार कहीयें. ते सज्झायतप, पांच प्रकारनुंछे. १ वांचवुं, २ पू छवुं, ३ परावर्त्तवुं, ४ अनुप्रेक्षा, ५ धर्मकथा.

१ त्यां प्रथम वांचनसज्झाय. ते जे श्रुतनुं नणवुं नणाववुं, ते वांचनसज्झाय कहीयें.

२ बीजी प्रछणासज्झाय. ते जे नणवामां संदेह थयो, तेनुं शि ष्यें पूछवुं अथवा गुरुयें शिष्यने कहेवुं. ते प्रछणानामें बीजी सज्झाय.

३ त्रीजी परावर्त्तनासज्झाय. ते जे पूर्वे नणेला श्रुतनुं गणवुं अथवा गुरुयें शिष्यनी परावर्त्तना सांनलवी अथवा परावर्त्तना करवानी प्रेरणा करवी, ते परावर्त्तनासज्झाय कहीयें.

४ चोथी अनुप्रेक्षासज्झाय. ते जे पठितश्रुतना अर्थनुं चिंतव

न करवुं, अथवा परस्पर साधु श्रावकें मलीने चर्चा करवी अथवा गुरु, स्याद्वादशैलीपूर्वक उक्ति युक्तियें करी शिष्यनो संशय टाले, ते अनुप्रेक्षासज्झाय.

५ पांचमी धर्मकथासज्झाय. ते जे रुचिवंत जीवने जाव करुणापूर्वक धर्मोपदेश कहे; धर्म प्रत्यें पमाडे, तेने धर्मकथासज्झाय कहीयें. ए पांचे प्रकारनी सज्झाय, शिष्य अथवा गुरु पोतानी दशा माफक यथागम करे, ते सज्झायतप कहीएं.

१ अथवा शिष्य विनयसहित हर्षित थको, गुरु आशय अटकल करतो, अनुकूलपणे आसनस्थ प्रशांत इत्यादि विधिपूर्वक वांचना ले तथा गुरु पण प्रसन्नचित्तथी तेनी योग्यता माफक प्रमाद तजीने अग्लानपणे वाचना आपे, ते बेउने वांचनासज्झाय तप.

२ तथा प्रश्नणासज्झाय. ते आसनस्थ गुरु जोइने शिष्य विनयादि गुणयुक्त आशय अनुकूल थइने पूछे. गुरु पण जाव दया धरीने धर्मरागथी घणी बुद्धिनो खरच करीने स्याद्वादशैली अनुसरतो, एवो जवाब आपे के, तेणे करी शिष्यना चित्तनो संशय तरत मटी जाय, ते बेउने प्रश्नणासज्झायतप कहीयें.

३ तथा परावर्त्तनासज्झाय. ते जे शिष्य, तीव्र उपयोगी थको पूर्वे पठितशास्त्रने गुणे, तथा गुरु पण तीव्र उपयोगी थका सांनले, जूल चूक कही दीए, ते बन्नेने परावर्त्तनासज्झायतप कहीयें.

अनुप्रेक्षासज्झाय. ते जे अर्थनी चर्चा,शिष्य सहाध्यायी अने बीजा पण निपुण साधु मलीने विविधयुक्ति जैनशैलीपूर्वक करे,त्यां क्यारेंक चर्चा करतां उक्ति युक्तिपूर्वक निर्णय थाय अने क्यारेंक निर्णय न थाय,त्यारें गुरु पण आगमानुकूल उपयोगी थइने विशद रीतें चर्चानो निर्णय करी आपे, ते बन्नेने पूर्वोक्त अनुप्रेक्षासज्झाय तप कहीयें.

५ तथा धर्मोपदेशसज्झाय. ते बन्नेने पूर्वोक्तविधिपूर्वक उपकार बुद्धिथी धर्मोपदेश आपे. त्यां जो पोताने उपदेश आप

वानी योग्यता होय, तो आगमशैलीपूर्वक उपदेश आपे, अने जो आगमशैलीना नय, निक्षेप, प्रमाण, सप्तभंगी प्रमुखमां तथा वि ध क्षयोपशम न होय, त्यारें जे बहुश्रुत उपदेश आपे, ते कचित् हर्षित अने विस्मय स्मेरमुख थको सांजले, ते धर्मकथासज्झाय तप कहीयें. ए पांचे सज्झाय, कहेली रीतिथी विपरीत करे अथवा दंजथी करे, अथवा शिरबोजनिर्वाहन्यायें करे, अथवा अजिमान धरीने करे, बीजानी ईर्ष्याथी करे, अथवा उतावलो उतावलो गड बड करीने पूरी करे, अथवा पोतानी मरजी माफक करे, अथवा यश अर्थे करे, ते सज्झायतप अतिचार कहियें.

५ पांचमो ध्यानतप अतिचार. ते जे धर्मध्यान अने शुक्लध्यान ए बन्ने मुक्तिदायकछे. त्यां प्रथम साधुने धर्मध्यानना चारे पाद ध्याववानाछे. ते धर्मध्यानने ध्यावतां ध्यावतां, ज्यारें परिपूर्ण अप्र मत्त नामे उत्कृष्ट स्थानें पहोंचे, त्यार पछी आठमा गुणस्थानकने पामे. त्यां शुक्लध्यानना प्रथम पादनुं ध्यान करे, ते ध्यावतां थकां आगल बारमुं गुणस्थानक पामे, तेवारें शुक्लध्यानना बीजा पादनुं ध्यान करे,ते ध्यावतां थकां बारमुं गुणस्थानक ज्यारें पुरुं थइ रहे, त्यारें चारे घनघातीकर्म क्षय थइ जाय, एटले केवलज्ञान पामे,तेर मुं गुणस्थानक पामे अने त्यार पछी पोताना आयुष्यनी स्थिति मा फक तेरमे गुणस्थानकें रहे.पछी जेवारें तेरमा गुणस्थानकनो शेष अं तरमुहूर्त्त काल रहे,ते वारें शुक्लध्यानना शेष बे पाद ध्यावे,त्यां च उदमा गुणस्थानकें पहोचे, ते स्थलें सर्वकर्मनो क्षय करीने मुक्ति सुख पामे, ए साधुना ध्याननी पद्धति छे तथा श्रावकने तो धर्म ध्यान अने शुक्लध्यानने ध्याववानी योग्यता नथी जे कारणे मूल घाती चार कषाय उदयवंत सरु छे, ए माटे ते श्रावक, अनित्य अशरणादि बारे जावनाने एक चित्तें शुद्ध आत्तरूपें ध्यावे. ते जा वना करतां, कोइ उत्तम जीवने उपयोगनी निर्मलताथी लयली

नता थाय, तेनाथी धर्मध्याननी समाप्ति थाय. समाप्ति ते एम
जेम सूर्योदय पहेलां आरुणोदय आजास मात्र होय, ते सूर्य
पण एथी सूर्योदयजन्य कार्य, घट पटादि सर्वनो अनुजव
जाय. तेम श्रावकने पण जावनाजन्य शुद्धोपयोगथी धर्मध्या
समाप्ति फलरूप धर्मध्यानसरखो अनुजव थाय. मुनिजा
आस्वादमात्र पामे, पण ध्यानपदनी पूर्णता पामे नहीं, ए जे
नयोग, ते ध्यानतप कहीयें. अने जे ए जे ए ध्यानमां वी
विकल्प, योगचपलतादिक करे, ते ध्यानतपअतिचार कहीयें.

६ उछो त्यागतप अतिचार. त्यां त्यागतपना बे जेदछे.
ऊव्यत्याग, अने बीजो जावत्याग. त्यां ऊव्यत्याग, ते साधु
था श्रावकने पोतपोतानी दशा माफक आहार उपधि तथा
विध परिग्रहरूप इंद्रियसुखनो तथा अवस्थाविशेषें देहनो प
त्याग करे, वोसरावे, ते ऊव्यथी त्यागतप कहीयें. अने जे
पयतृष्णा तथा कषाय जे क्रोधमानादिक, तेनो जे त्याग करे,ते
जावत्यागतप कहियें. ए रीतें जिनागममां जावत्याग तप कह्युं
तेनो उति शक्तियें त्याग न करे, अथवा विधिरहित करे, अथ
तत्वप्रतीति धरी करे नहीं, अथवा पांच माणसमां अणवूट
करे, अथवा निदान धरी करे, ते त्यागतप अतिचार कहीयें।
इति तपाचारस्य द्वादशातिचारस्वरूपं संपूर्णम् ॥

॥ अथ ॥

॥ श्री वीर्याचारातिचारत्रय प्रारंजः ॥

१ त्यहां वीर्याचार. ते जीवने मन, वचन अने काया, ए त्रणे
योगनुं सामर्थ्य जे शक्तिविशेष, ते वीर्य कहीयें. त्यां साधु तथा
श्रावक, पोत पोताना गुण स्थानक माफक तथा पोत पोतानी द

माफक जे जे धर्मकरणी करे. ते मनादि त्रणे योगनुं वीर्य
रवीने करे. सर्व धर्मकरणीमां जेवो जेवो वीर्योल्लास होय. ते
तेवुं ते फल पामे. जे माटे गुणस्थान, योगस्थान अने संयम
ाननना भेद पडे. ते वीर्यनी प्रबलता अने मंदताथी चडतुं अ
पडतुं थायछे. त्यां प्रथम काययोगथी सर्वधर्मकरणीमां पोताना
योगनुं बल. वीर्य, फोरववामां चूक न करे तथा मनोयोगथी उ
त्साह, भक्ति, उमंग तथा प्यार, बहु धरतो करे अने वचनयोगथी
धर्मकरणीनी प्रशंसा घणा मानथी करे: धर्मनी उन्नति. उपमा
आपी आपीने करे अने घणा जीवने धर्मसन्मुख करे. पोताना
आत्माने धर्मप्राप्ति सराहे. एटले वखाणे के. धन्य मारुं चान्य.
के मने श्री जिनेश्वरजीना मार्गनी धर्मप्रवृत्ति मली! हवे मने
भवदुःखनो भय नथी. इत्यादि त्रिकरण योगशक्ति धर्मकरणीमां
वीर्योल्लास फोरवे, ते वीर्याचारनो आराधक थोडा कालमां अह
य लीला पामे. जो थोडी पण दानादि करणीमां वीर्योल्लास घणो
होय तो, महोटी करणीथी पण वधारे फल पामे.

अने धर्मकरणीमां छे छति शक्तियें काययोगें आलस्य करे,
कायबल फोरवे नहीं अथवा राजवेठ समान करे. कांइ पण च
कि विना यथादि कारणे करे अथवा अभिमानथी करे अथवा
देखा देखीयें करे अथवा ते छाडवी. अनुष्ठानादिक वांकाथी क
रे, ते काययोगवीर्याचारातिचार प्रथम जाणवो.

२ तथा वचनयोगें उल्लासथी सज्झाय स्तवनादि करे नहीं, मंद
मंद भाषाथी गडबड करीने चणणाटी रीतें कहे, तथा बीजो कोइ
धर्मकार्य करतो होय. तेने दुष्करता कही देखाडे. जे ए धर्म
काम छे, ते घणुं मुश्केल छे, तमाराथी पूरुं पडशे नहीं माटे प्रथ
मथीज जोइ विचारीने करजो. ए प्रमाणे कहीने सनर्थने पण उ
त्साहभंग करे तथा धर्मकार्य करतां अथवा करीने पछी खेदनां

वचन कहे जे, ए धर्मकार्य कर्खुं, पण ए धर्मकार्य करतां महोटी तस्दी पाम्या, ए काम घणुंज कठिन छे. करशे, तेज जाणशे. मने वीती ते मारुं मन जाणेछे, कोइ सहाय पण न थयुं, एने कोइयें उपाड्युं नहीं. त्यारें शुं करीयें? अमे कोने कहीयें. अधिकारी थया त्यारें सर्व अमोने करवुं पड्युं, बीजुं शुं कहीयें? आ धर्मकार्य करतामां आ शरीर, दुर्बल थइ गयुंछे, ते हजी सुधी ठेकाणे आव्युं नथी. एवां वचन कहीने घणानां चित्त, भंग करे. इत्यादि हीनतानां वचन कहे, ते वचनयोगवीर्याचारातिचार बीजो जाणवो.

३ तथा मनोयोगें सीदातो थको करे अथवा उत्साह विना करे, जे आ कामनी वेठ क्यारें उतरशे? ए काम हाथमां नहीं लेत तो सारुं थात. नाहक आ काम में उगाव्युं तो खरुं, पण हवे कोइ बीजो माथे ले, तो हुं मूकी आपुं. कोइरीतें छूटे तो सारुं थइ जाय अथवा ए काममां महेनत घणी थशे, पैशो घणो खरचाशे, शुं करीयें? वगर विचारे कर्खुं तो आवी फसाया; हवे फरी एवी वातमां पडशुं नहीं अथवा आ तप, क्रियादिक, कठिन थयां. हवे फरी जोइने आदर करशुं! इत्यादिक कुविकल्प मनमां करे, ते मनोयोगवीर्याचारातिचार त्रीजो जाणवो ॥ इति वीर्याचारातिचारत्रयस्वरूपं संपूर्णम् ॥

ए प्रमाणे सर्व साधु अने श्रावकना धर्मना सर्व मली एकशो चोवीश अतिचारनुं विवरण कर्खुं. इति श्री सम्यक्त्वमूलद्वादशव्रतविवरणं समाप्तम् ॥ एवी विगतथी दोष मटाडीने जे व्रत पाले, ते परमकल्याणमाळा वरे ॥

॥ दोहा ॥

सत अढारें ऊपरें, वीते वर्ष त्रवीश;
मगशिर शुदि पंचमि गुरु, पूरण थइ जगीश ॥ १ ॥

ग्रंथसमाप्तिना दोहा.

सुरसरिताके तट वसे, पाटलिपुर शुजथान;
जिहां सुदर्शन साधुवर, पाया केवलज्ञान ॥
ब्रह्मचारि शिर सेहरो, थूलिजद्र गुणधाम;
जिण कोश्या प्रतिबूझवी, जिणपुर राख्युं ना
तिण पुर साह शिरोमणि, सोमचंद अनिधा
दाता नुक्ता शुजमति, चातुरजन परधान ॥
तसु सुत नद्रक व्रतरुचि, धर्म दृढमतिमान्;
हेमचंद नामें निपुण. हाटक सम गुणवान् ॥
धर्मकथा सुणिने जइ. व्रतरुचि तव कहे साह
लिख दीजें व्रतकी विगत, विस्तरसें हम चाह
समकित युं व्रत वारकी. विगत पुनी अतिचा
गुरूपरंपर शास्त्र बहु, लिखि कीनो विस्तार ॥
आगमजलधि अपार हे, मुज मति नौका तुच
को निवहे जादों नदी, पकरे नेडी पुछ ॥ ८
आगे बहुश्रुतने लिखे, विरती वात विशेष;
वाकूं दिख नापा लिखूं, उनमें कौन विशेष ॥
तोनी तसु आसय अगम, जो विन पाय अशु
लिखितं मिछा डुकडं, साखी गुरुजन बुरू ॥
अल्पमती आज्ञान हूं, जाणुं न बहुत रहस्य;
कृपा करी मोपरि कृती, करजो शुरू अवश्य
विगत एह व्रत वारकी, लिखी यथामति योग
व्रतरुचि विविध अन्यास करि, करजो तसु परिजो
काल अनंत अनंतमय, जो पुग्गल परिअट्ट;
सोनी अनँतानंत गये, जनम मरण संघट्ट ॥
परमरिपू परमाद हे, तसु जय करण उपाय;
विधियुत मानव नव लह्यो, तोनि न चेतो कां

वचन कहे जे, ए धर्मकार्य कर्युं, पण ए धर्मकार्य करतां महोटी तस्दी पाम्या, ए काम घणुंज कठिन ठे. करशे, तेज जाणशे. मने वीती ते मारुं मन जाणेठे, कोइ सहाय पण न थयुं, एने कोइयें उपाड्युं नहीं. त्यारें शुं करीयें ? अमे कोने कहीयें. अधिकारी थया त्यारें सर्व अमोने करवुं पड्युं, वीजुं शुं कहीयें ? आ धर्मकार्य करतामां आ शरीर, डुर्बल थइ गयुंठे, ते हजी सुधी ठेकाणे आव्युं नथी. एवां वचन कहीने घणानां चित्त, जंग करे. इत्यादि हीनतानां वचन कहे, ते वचनयोगवीर्याचारातिचार वीजो जाणवो.

३ तथा मनोयोगें सीदातो थको करे अथवा उत्साह विना करे, जे आ कामनी वेठ क्यारें उतरशे ? ए काम हाथमां नहीं लेत तो सारुं यात. नाहक आ काम में उगाव्युं तो खरुं, पण हवे कोइ वीजो माथे ले, तो हुं मूकी आपुं. कोइ रीतें बूटे तो सारुं थइ जाय अथवा ए काममां महेनत घणी थशे, पैशो घणो खरचाशे, शुं करीयें ? वगर विचारे कर्युं तो आवी फसाया; हवे फरी एवी वातमां पडशुं नहीं अथवा आ तप, क्रियादिक, कठिन थयां. हवे फरी जोइने आदर करशुं ! इत्यादिक कुविकल्प मनमां करे, ते मनोयोगवीर्याचारातिचार त्रीजो जाणवो ॥ इति वीर्याचारातिचारत्रयस्वरूपं संपूर्णम् ॥

ए प्रमाणे सर्व साधु अने श्रावकना धर्मना सर्व मली एकसो चोत्रीश अतिचारनुं विवरण कर्युं. इति श्री सम्यक्त्वमूल द्वादशव्रतविवरणं समाप्तम् ॥ एवी विगतथी दोष मटाडीने जे व्रत पाले, ते परमकल्याणमाला वरे ॥

॥ दोहा ॥

सात अढारें ऊपरें, वीते वर्ष ठवीश;
मगशिर शुदि पंचमि गुरु, पूरण थइ जगीश ॥ १ ॥

सुरसरिताके तट वसे, पादलिपुर शुजथान;
जिहां सुदर्शन साधुवर, पाया केवलज्ञान ॥ २ ॥
ब्रह्मचारि शिर सेहरो, थूलिजड़ गुणधामः
जिण कोश्या प्रतिबूझवी, जिणपुर राख्युं नाम ॥ ३ ॥
तिण पुर साह शिरोमणि, सोमचंद अजिधान;
दाता जुक्ता शुजमति, चातुरजन परधान ॥ ४ ॥
तसु सुत जड़क व्रतरुचि, धर्मे दृढमतिमान्;
हेमचंद नामें निपुण, हाटक सम गुणवान् ॥ ५ ॥
धर्मकथा सुणिने जइ, व्रतरुचि तव कहे साह;
लिख दीजें व्रतकी विगत, विस्तरसें इम चाह ॥ ६ ॥
समकित युं व्रत बारकी, विगत पुनी अतिचार;
गुरूपरंपर शास्त्र बहु, लिखि कीनो विस्तार ॥ ७ ॥
आगमजलधि अपार है, मुज मति नौका तुछ;
कौ निवहे जादों नदी, पकरे भेडी पुछ ॥ ८ ॥
आगे बहुश्रुतने लिखे, विरती बात विशेष;
वाकूं दिख जाषा लिखूं, उनमें कौन विशेष ॥ ९
तौजी तसु आसय अगम, जो विन पाय अगुरू;
लिखिउं मिछा दुक्कडं, साखी गुरुजन वुरू ॥ १० ॥
अल्पमती आज्ञान हूं, जाणुं न बहुत रहस्य;
कृपा करी मोपरि कृती, करजो शुरू अवस्य ॥ ११ ॥
विगत एह व्रत बारकी, लिखी यथामति योग;
व्रतरुचि विविध अन्यास करि, करजो तनु परिजोग ॥ १२ ॥
काल अनंत अनंतभव, जो पुग्गल परियट्ट;
सोनी अनंतानंत गये, जनम मरण भंपट ॥ १३ ॥
परमरिपू परमाद है, तसु जय करण उपाय;
विधियुत मानव जव लह्यो, तौनि न चेतो कांय ॥ १४ ॥

वचन कहे जे, ए धर्मकार्य कर्युं, पण ए धर्मकार्य करतां महोटी तस्दी पाम्या, ए काम घणुंज कठिन छे. करशे, तेज जाणशे. मने वीती ते मारुं मन जाणेछे, कोइ सहाय पण न थयुं, एने कोइयें उपाड्युं नहीं. त्यारें शुं करीयें ? अमे कोने कहीयें. अधिकारी थया त्यारें सर्व अमोने करवुं पड्युं, बीजुं शुं कहीयें ? आ धर्मकार्य करतामां आ शरीर, दुर्बल थइ गयुंछे, ते हजी सुधी ठेकाणे आव्युं नथी. एवां वचन कहीने घणानां चित्त, भंग करे. इत्यादि हीनतानां वचन कहे, ते वचनयोगवीर्याचारातिचार बीजो जाणवो.

३ तथा मनोयोगें सीदातो थको करे अथवा उत्साह विना करे, जे आ कामनी वेठ क्यारें उतरशे ? ए काम हाथमां नहीं लेत तो सारुं थात. नाहक आ काम में उठाव्युं तो खरुं, पण हवे कोइ बीजो माथे ले, तो हुं मूकी आपुं. कोइरीतें छूटे तो सारुं थइ जाय अथवा ए काममां महेनत घणी थशे, पैशो घणो खरचाशे, शुं करीयें ? वगर विचारे कर्युं तो आवी फसाया; हवे फरी एवी वातमां पडशुं नहीं अथवा आ तप, क्रियादिक, कठिन थयां. हवे फरी जोइने आदर करशुं ! इत्यादिक कुविकल्प मनमां करे, ते मनोयोगवीर्याचारातिचार त्रीजो जाणवो ॥ इति वीर्याचारातिचारत्रयस्वरूपं संपूर्णम् ॥

ए प्रमाणे सर्व साधु अने श्रावकना धर्मना सर्व मली एकशो चोवीश अतिचारनुं विवरण कर्युं. इति श्री सम्यक्त्वमूल द्वादशव्रतविवरणं समाप्तम् ॥ एवी विगतथी दोष मटाडीने जे व्रत पाले, ते परमकल्याणमाला वरे ॥

॥ दोहा ॥

शत अढारें ऊपरें, वीते वर्ष त्रवीश;
मगशिर शुदि पंचमि गुरु, पूरण भइ जगीश ॥ १ ॥

सुरसरिताके तट वसे, पाटलिपुर शुभथान;
जिहां सुदर्शन साधुवर, पाया केवलज्ञान ॥ २ ॥
ब्रह्मचारि शिर सेहरो, थूलिजद्र गुणधामः
जिण कोश्या प्रतिबूझवी, जिणपुर राख्युं नाम ॥ ३ ॥
तिण पुर साह शिरोमणि, सोमचंद अजिधान;
दाता जुक्ता शुजमति, चातुरजन परधान ॥ ४ ॥
तसु सुत जद्रक व्रतरुचि, धर्मे दृढमतिमान्;
हेमचंद नामें निपुण, हाटक सम गुणवान् ॥ ५ ॥
धर्मकथा सुणिने जइ, व्रतरुचि तव कहे साह;
लिख दीजें व्रतकी विगत, विस्तरसें हम चाह ॥ ६ ॥
समकित युं व्रत बारकी, विगत पुनी अतिचार;
पूर्वपरंपर शास्त्र बहु, लिखि कीनो विस्तार ॥ ७ ॥
आगमजलधि अपार है, मुज मति नौका तुछ;
कौ निवहे जादों नदी, पकरे जेडी पुछ ॥ ८ ॥
आगे बहुश्रुतने लिखे, विरती वात विशेष;
वाकूं दिख जाषा लिखूं, उनमें कौन विशेष ॥ ए
तोजी तसु आसय अगम, जो विन पाय अगुरू;
लिखितें मिछा डुक्कडं, साखी गुरुजन वुद्ध ॥ १० ॥
अल्पमती आज्ञान हूं, जाणुं न बहुत रहस्य;
कृपा करी मोपरि कृती, करजो शुद्ध अवश्य ॥ ११ ॥
विगत एह व्रत बारकी, लिखी यथामति योग;
व्रतरुचि विविध अज्यास करि, करजो तसु परिजोग ॥ १२ ॥
काल अनंत अनंतमय, जो पुग्गल परिअट्ट;
सोनी अनंतानंत गये, जनम मरण संघट्ट ॥ १३ ॥
परमरिपू परमाद है, तसु जय करण उपाय;
विधियुत मानव जव लह्यो, तोजि न चेतो कांय ॥ १४ ॥

वचन कहे जे, ए धर्मकार्य कर्युं, पण ए धर्मकार्य करतां महोटी तस्दी पाम्या, ए काम घणुंज कठिन छे. करशे, तेज जाणशे. मने वीती ते मारुं मन जाणेछे, कोइ सहाय पण न थयुं, एने कोइयें उपाड्युं नहीं. त्यारें शुं करीयें ? अमे कोने कहीयें. अधिकारी थया त्यारें सर्व अमोने करवुं पड्युं, बीजुं शुं कहीयें ? आ धर्मकार्य करतामां आ शरीर, दुर्बल थइ गयुंछे, ते हजी सुधी ठेकाणे आव्युं नथी. एवां वचन कहीने घणानां चित्त, भंग करे. इत्यादि हीनतानां वचन कहे, ते वचनयोगवीर्याचारातिचार बीजो जाणवो.

३ तथा मनोयोगें सीदातो थको करे अथवा उत्साह विना करे, जे आ कामनी वेठ क्यारें उतरशे ? ए काम हाथमां नहीं लेत तो सारुं थात. नाहक आ काम में उगाव्युं तो खरुं, पण हवे कोइ बीजो माथे ले, तो हुं मूकी आपुं. कोइ रीतें छूटे तो सारुं थइ जाय अथवा ए काममां महेनत घणी थशे, पैशो घणो खरचाशे, शुं करीयें ? वगर विचारे कर्युं तो आवी फसाया; हवे फरी एवी वातमां पडशुं नहीं अथवा आ तप, क्रियादिक, कठिन थयां. हवे फरी जोइने आदर करशुं ! इत्यादिक कुविकल्प मनमां करे, ते मनोयोगवीर्याचारातिचार त्रीजो जाणवो ॥ इति वीर्याचारातिचारत्रयस्वरूपं संपूर्णम् ॥

ए प्रमाणे सर्व साधु अने श्रावकना धर्मना सर्व मली एकशो चोवीश अतिचारनुं विवरण कर्युं. इति श्री सम्यक्त्वमूल द्वादशव्रतविवरणं समाप्तम् ॥ एवी विगतथी दोष मटाडीने जे व्रत पाले, ते परमकल्याणमाला वरे ॥

॥ दोहा ॥

शत अढारे उपरे, वीते वर्षे छत्रीश;
मगशिर शुदि पंचमि गुरु, पूरण थई जगीश ॥ १ ॥

सुरसरिताके तट वसे, पाटलिपुर शुभधान;
जिहां सुदर्शन साधुवर, पाया केवलज्ञान ॥ २ ॥
ब्रह्मचारि शिर सेहरो, थूलिभद्र गुणधाम;
जिण कोश्या प्रतिबूझवी, जिणपुर राख्युं नाम ॥ ३ ॥
तिण पुर साह शिरोमणि, सोमचंद अभिधान;
दाता भुक्ता शुभमति, चातुरजन परधान ॥ ४ ॥
तसु सुत भद्रक व्रतरुचि, धर्मे दृढमतिमान्;
हेमचंद नामें निपुण, हाटक सम गुणवान् ॥ ५ ॥
धर्मकथा सुणिने भद्र, व्रतरुचि तव कहे साह;
लिख दीजें व्रतकी विगत, विस्तरसें हम चाह ॥ ६ ॥
समकित युं व्रत बारकी, विगत पुनी अतिचार;
गुरूपरंपर शास्त्र बहु, लिखि कीनो विस्तार ॥ ७ ॥
आगमजलधि अपार हे, मुज मति नौका तुछ;
कौ निवहे भादों नदी, पकरे भेडी पुछ ॥ ८ ॥
आगे बहुश्रुतने लिखे, विरती वात विशेष;
वाकूं दिख भाषा लिखूं, उनमें कौन विशेष ॥ ए
तोभी तसु आसय अगम, जो विन पाय अशुरू;
लिखिउं मिछा डुक्कडं, साखी गुरुजन बुरू ॥ १० ॥
अल्पमती आज्ञान हूं, जाणुं न बहुत रहस्य;
कृपा करी मोपरि कृती, करजो शुद्ध अवश्य ॥ ११ ॥
विगत एह व्रत बारकी, लिखी यथामति योग;
व्रतरुचि विविध अभ्यास करि, करजो तसु परिभोग ॥ १२ ॥
काल अनंत अनंतभय, जो पुग्गल परिअट्ट;
सोभी अनँतानंत गये, जनम मरण संघट्ट ॥ १३ ॥
परमरिपू परमाद हे, तसु जय करण उपाय;
विधियुत मानव जव लह्यो, तोभि न चेतो कांय ॥ १४ ॥

भूले जव जो एह तुम, वहुरि न आवे हठ;
तो चेतो चितमें चतुर! निसुणी श्रुत परमठ ॥ १५ ।
सुविहित सूरि सिरोमणि, नागरवंदित पाय;
(श्री) पुण्य सागर सूरिंद ते, तपगठपति सुखदाय ॥ १
तसु आणा सिर धारतां, वारतां विषय कषाय;
श्रुतधारी उपगारि बहु, (श्री) ज्ञान सागर उवझाय॥ १
तासु शिष्य पूरव तणा, तीरथ जेटण काज;
किय प्रयाण शुज दिन घडी, शुज शकुनें शु साज ॥ १
तीरथ फरसत आविया, पटणा नयर सुठाय;
परमानँद जयो वंदतां, शेठ मुनीसर पाय ॥ १९ ॥
दिन केताइक तिहां रहि, लिख्यो सुव्रतविस्तार,
वज्रोत्कीर्णमणिसूत परि, बहु श्रुतके उपगार ॥ २० ॥
इह विधि जो व्रत धारशे, वारशे विषयकषाय;
विलपे ज्ञान ज्योतमय, आनँदघन सुखदाय ॥ २१ ।

इति श्रीसम्यक्त्वमूल द्वादशव्रतविचार
पद्धतिः विस्तारसहिता संपूर्णा ॥ ग्रं
थाग्रंथः किंचिन्न्यूनोचतुःसहस्त्रः ॥